मरकज़े तसव्वुफ

की तरफ से ये

PDF FILE

का नज़राना जनाब

सूफी नौशाद ग़यासी

की तरफ से

ख़िदमते ख़लक़

के लिये पेश किया जा रहा है।

चुभते सच

मरकज़े तसव्वुफ

दरगाह सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख्त्यार काकी कु.सि.अ.

और

अल्लाह के वलियों की हकीकत की तालीमात

मरकज़े तसव्वुफ

ख़ानक़ाह शरीफ कादरिया-शुत्तारिया-चिश्तिया

दरगाह सरकार ख्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी (कु.सि.अ.)

1011-E-First, दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली-110053

درگاہ سرکار خواجہ قطب الدین با اختیار کاکی

قدس سرہ العزیز

MARKAZE TASAWWUF

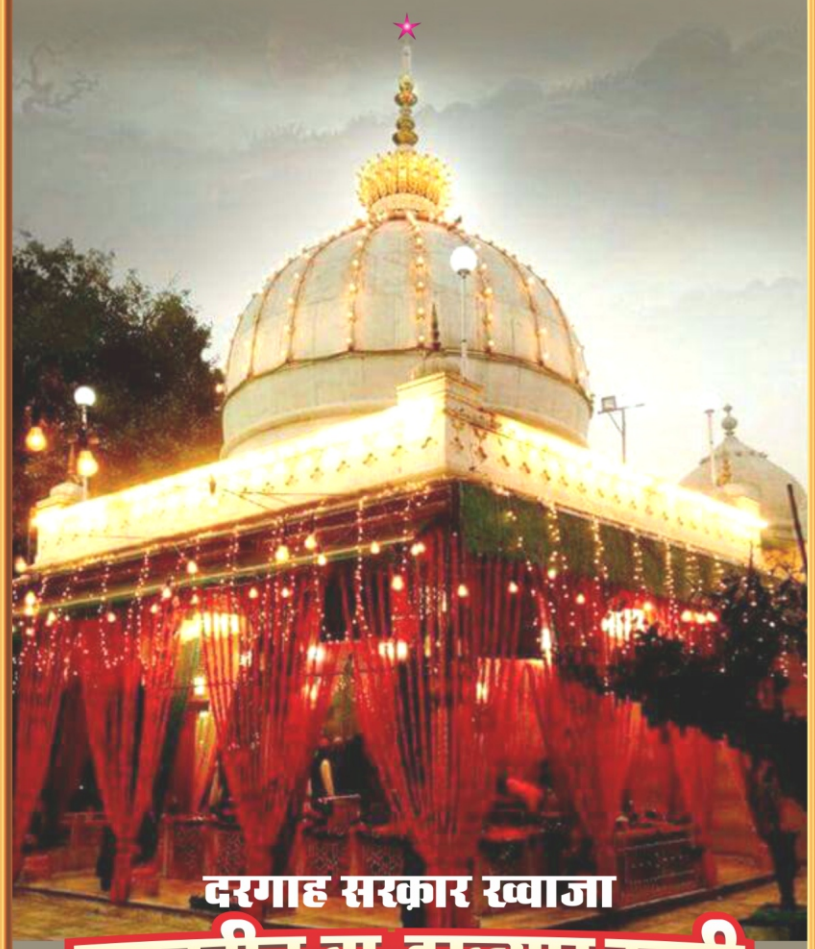

दरगाह सरकार ख़्वाजा

कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी

(कु.सि.अ.)

DARGAH SARKAR

Khwaja Qutbuddin Ba-Ikhtiyar Kaki (Q.S.A.)

MEHRAULI, NEW DELHI-110030

SUFI SYED AMEERUDDIN
9899943607

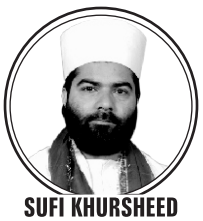

SUFI KHURSHEED
9654930537

SUFI ASHRAF
9711116516

SUFI SHABBIR
08080436438

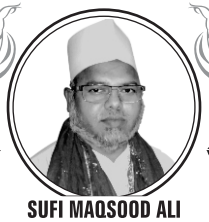

SUFI MAQSOOD ALI
9350081556

SUFI AKASH
9910567808

SUFI MEHTAB
9958020975

SUFI SHAMIM
9716084184

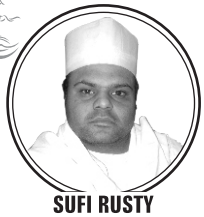

SUFI RUSTY
9716016611

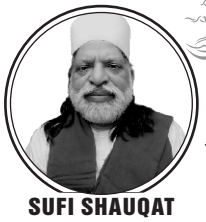

SUFI SHAUQAT
9911419437

SUFI MANOJ
8447570036

SUFI BEKAL
09873859056

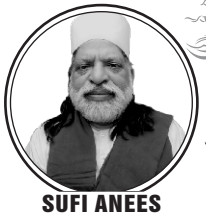

SUFI ANEES
9

SUFI MUSTAQEEM
09811454523

SUFI TOWHEED
8745976052

MARKAZE TASAWWUF ★ MARKAZE TASAWWUF ★ MARKAZE TASAWWUF

مرکز تصوف ★ مرکز تصوف ★ مرکز تصوف

सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह

سرکار صوفی غیاث الدین شاہ

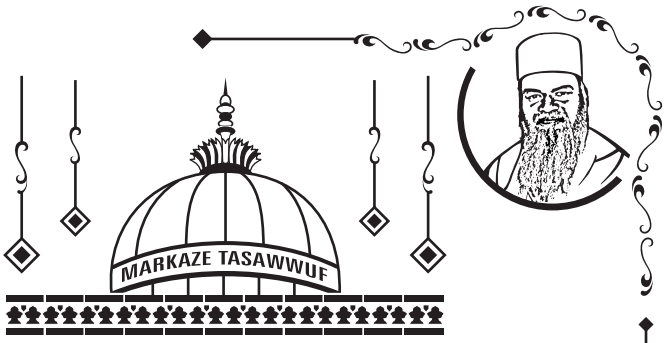

(1) नामे खुदा पढ़-पढ़ कर तू इसका हाफिज़ बन गया लेकिन परदा तो फिर भी पड़ा ही रहा ।

(2) ज़ाहिरी इल्म पढ़ कर तू आलिम तो बना लेकिन फिर भी तलबगारे दुनिया ही रहा ।

(3) तूने हज़ारों-लाखों किताबें पढ़ डालीं लेकिन तेरा ज़ालिम नफ्से अम्मारा ना मर सका ।

(4) यही नफ्से अम्मारा जो तुझे अन्दर से तबाह और बरबाद और नापाक कर देता है दरवेशों के सिवा कोई दूसरा इस को ना मार सका ।

(5) जब खुदा को अच्छी तरह पहचान लिया तो इसकी तरफ तेज़ चलने का इश्क मेरे दिल में जगमगाया ।

(6) इश्के हकीकी सुबह-शाम तेज़ तपिश दे रहा है और अगले मकाम से ख़बरदार कर रहा है ।

(7) मेरे अन्दर इश्क की आतिश भी है ईधन भी है और धुआँ भी है ।

● कामिल मुर्शिद के मायने यही है कि जिसकी मौजूदगी में, सोहबत में मुरीद आहिस्ता-आहिस्ता पिघलते-पिघलते मिट जाये कामिल मुर्शिद, मुरीद की मौत है इसलिये मुरीद होने का हकदार वो ही है जिसमें मिट जाने की हिम्मत है मिट कर भी कुछ बचता है सच कहो तो मिट कर ही जो बचता है वो ही बचाने लायक है जो मिट जाता है वो मिट ही जाना चाहिये इन्सान के अन्दर बहुत कुछ है जो कूड़ा कचरा है और लोग उस कूड़े कचरे को अपना होना समझ लेते हैं और कीचड़ में ही जिंदगी बीत जाती है। जिसे तुम शख्सियत कहते हो वो तुम नहीं हो और जो तुम हो उससे तुम्हारी कोई पहचान नहीं और जब तक तुम्हारी पुरानी पहचान न तोड़ी जाये नई पहचान बनाने का कोई तरीका नहीं - अच्छा -

● इन्सान होने के लिये इन्सान के यहाँ पैदा होना जरूरी है लेकिन सिर्फ मुसलमान के यहाँ पैदा होने से कोई मुसलमान या मोमिन नहीं हो जाता - मोमिन होना पैदाइश से ताल्लुक नहीं रखता - मोमिन होने के लिये खुद दूसरी बार पैदा होना पड़ता है एक पैदाइश है जो माँ - बाप से मिलती है वो सिर्फ जिस्म की पैदाइश है।

एक दूसरी पैदाइश है जो हकीकत की पैदाइश है। कोई भी इस भूल में न रहे के मुसलमान के घर में पैदा हो गये मुसलमान और मोमिन हो गये। अगर मामले इतने आसान होते तो सब कुछ हल हो गया होता। हकीकी मोमिन होना इस दुनिया में सब से ज्यादा हिम्मत की बात है !

ok tk rLyhe vkj jtk d [ktj l 'kghn gk tkr g
mUg gj yEgk xc l ub tku vrk dh tkrh g

● इस मुँह को बंद रख, ताके तू असरारे मआरफत को आँख से देख ले – जहाने मआरफत के लिये मुँह और हलक आँख की पट्टी है।

ए मुँह तू दोजख़ का दहाना है
और ए दुनिया तू बरजख़ जैसी है

नाचीज़ दुनिया के पहलू में बाकी रहने वाला नूर है
ख़ून की नहरों के पहलू में साफ दूध है
अगर तू इसमें एक कदम बगैर एहतियात के रखेगा
खलत-मलत होकर तेरा दूध ख़ून बन जायेगा
नफ्स की ख़ुशी में आदम ने एक कदम रखा
तो जन्नत के सदर मकाम की जुदाई गले का हार बन गई
फरिश्ता उन से एसा भागता था जैसा के शैतान
चन्द रोटियों की वजह से किस कदर आँसु बहाये

1. ● जिस शख्स ने नफ्से अम्मारा को काबू कर लिया उस ने अल्लाह को पा लिया ।

2. ईमान सलामत रहे इस बात का तो हर कोई ख्वाहिश मन्द है लेकिन इश्क सलामत रहे इस बात का ख्वाहिश मन्द कोई – कोई होता है ।

3. लोग ईमान के तलबगार तो हैं लेकिन इश्क का तलबगार होने में हिचकिचाते हैं ।

4. इश्क जिस मकाम पर पहुँचाता है ईमान को उस का कोई अता – पता भी नहीं ।

5. '' बाहु '' मैं अपने ईमान का वास्ता देता हूँ के मेरे इश्क को बरकरार रखना ।

6. जिन बन्दों ने राज़े हक को पा लिया मरने से पहले ही उन्होंने अपने आप को मार डाला ।

● अगरचे तेरी अक्ल आलमे बाला की तरफ परवाज़ करती है लेकिन तेरी तकलीद का परिन्दा नीचे की तरफ चुगता है ।

तकलीदी इल्म हमारा बवाले जान है वो मांगी हुई चीज़ है और हम मुतमईन बैठे हैं के वो हमारी है इस अक्ल से बेगाना हो जाना चाहिये दीवानगी इख्त्यार कर लेनी चाहिये

जिसे तू अपना फायदा समझता है उस से गुरेज़ कर जहर पी ले आबे हयात को बहा दे !

जो तेरी तारीफ करे उसे बुरा – भला कह नफा और सरमाया मुफलिस को कर्ज दे दे

अमन की जगह को छोड़ खौफ की जगह में रह इज्जत को खैर बाद कह दे, और खुल्लम खुल्ला दीवाना हो जा

● जिस्म ना दुश्मन है ना दोस्त है जिस्म सिर्फ ज़रिया है आप चाहें तो उससे गुनाह करें और चाहे तो नेकी करें, चाहे तो दुनिया के काम करें – चाहे तो अल्लाह के काम करें – चाहे दुनिया में रहते हुए भी अल्लाह का काम करें! जिस्म सिर्फ ज़रिया है उसके बारे में कोई बुरा ख्याल ना रखें एसी बहुत सी बातें मशहूर हैं के जिस्म दुश्मन है – जिस्म गुनाह है जिस्म बुरा है इसको दाब कर रखना है ये सब बातें गलत हैं। ना जिस्म दुश्मन है ना जिस्म दोस्त है। हम उसका जैसा इस्तेमाल करते हैं जिस्म वही हो जाता है ।

lkFkh uk dkjok g ; rjk bErgk g
; gh pyk py n[k dk lHkky & djrh g efty
r>dk b'kkj & n[k dgh dkb jkd uk y
r>dk idkj d & vk jkgh & vk jkgh------

● अन्धा-धुंध अल्लाह की रस्सी पर हाथ डाल ख़ुदाई हुक्म और इरादे के सिवा काम ना कर ।

★ अल्लाह की रस्सी क्या है नफ्से अम्मारा की ख्वाहिशों को छोड़ना क्योंकि ये ख्वाहिशें '' आद '' के लिये आँधी थी ।

★ मख्लूक ख्वाहिशे नफ्सानी की वजह से कैदखाने में बैठी है परिन्दे के पर ख्वाहिशे नफ्सानी की वजह से बंधे हैं ।

★ मछली गरम तवे पर ख्वाहिशे नफ्सानी की वजह से है औरतों से ख्वाहिशें नफ्सानी की वजह से शरम गायब हो रही हैं ।

★ जब तूने अल्लाह के डर से ख्वाहिशे नफ्सानी छोड़ दी अल्लाह तआला की तरफ से प्याला पहुँचेगा ।

★ अपनी ख्वाहिशे नफ्सानी पर ना चल रास्ते की दरख्वास्त कर सीधे रास्ते की तरफ, ख़ुदा के दरबार की तरफ ।

मसनवी VI- 334

[1] ● पाक लोग कभी पलीद नहीं होते चाहे वो नजासत में ही क्यों ना रहते हों ।

[2] जब नमाजे इश्क की नियत बाँध तो फिर फाज़िलों ने फौकियत तर्क कर दी ।

[3] हाफिज़ पढ़-पढ़ कर तकब्बुर करते हैं और मुल्ला अपनी इल्मियत की बरतरी जताते हैं ।

[4] फटे हुए दूध को कितना ही क्यों ना उबालो इससे मक्खन नहीं निकाला जा सकता ।

[5] ए शख्स अगर तू एक दिले शिकस्ता को भी शाद कर दे तो तेरा ये काम बरसों की इबादत के बराबर होगा ।

[6] तू दिल से मैल उतार दे और अच्छी तरह जान ले के कामिल मुर्शिद का मुरीद ही शाद - आबाद होता है ।

पयामे बाहू - 36,37,38

● झूठे हैं वो लोग जो कहते हैं वो दूर है क्योंकि अगर वो दूर हैं तो पास जो है वो कौन है? वो क्या हैं? ये पेड़ क्या हैं? ये हवायें क्या हैं? ये बोलते हुए परिन्दे क्या हैं? ये आखें क्या हैं? इनमें जिन्दा, कायम, दायम कौन है? और हमेशा जागता हुआ कौन इनमें जी रहा है! अगर वो दूर है तो पास कौन है! नहीं जो भी है वो उस

ही की वजह से है वो ही है फिर जो नज़दीक से नज़दीक है वो भी वो ही है और जो नज़दीक को जानने में काबिल नहीं ह ै क्या वो दूर को जानने में काबिल हो सकेगा जो नज़दीक की चीजों को नहीं छू सकता वो दूर की चीज़ को कैसे पकड़ेगा?

e rEgkjh 'kkg jx l Hkh djhc g

कलामे अल्लाह

● मुर्शिद ने मेरे दिल में अल्लाह के नाम का चम्बा का पौधा लगा दिया है और उस के हर रैशे को (नफी असबात) ''नहीं'' ''है'' के पानी से सींचा के दुनिया की कोई हकीकत नहीं है फकत खुदा ही सच कायम व दायम है जब ये पौधा फलने फूलने लगा और रूहानी सुरूर की कलियाँ फूल बनकर खिलने लगीं तो मेरा बातिन इश्के इलाही की खुशबु से महक उठा दुनिया का ना होना, और खुदा की हकीकत आशकार हो गई – जुग – जुग जिये मेरा कामिल मुर्शिद जिस ने ये पौधा मेरे बातिन में लगाकर मुझे हकीकत से आशना कर दिया ।

हजरत सुलतान बाहू

e nork dh rjg dn viu efUnj e
ok ftLe d ckgj ejh ryk'k e g \

● वक्त पर सब होता है वक्त पर पैदा होना, वक्त पर मरना, वक्त पर कामयाबी, वक्त पर नाकामयाबी, वक्त पर सब कुछ होता है ऐसा जो जान लेता है वो सदासुकून में है फिर जल्दी नहीं, फिर बैचेनी नहीं जब वक्त होगा फसल पकेगी काट लेंगे जब सुबह होगी सूरज निकलेगा तो काम करेंगे जब रात होगी आराम करेंगे सब अपने आप हो रहा है अपने वक्त पर हो रहा है बैचेनी तब पैदा होती है जब हम वक्त से पहले कुछ मांगने लगते हैं हम कहते हैं जल्दी हो जाये - कभी - कभी बहुत जल्दी करने में बहुत देर हो जाती है।

ckgj rk clr vkj vk;xk ugh
eu j & Hkhrj dkb clr ink dj
gj ekle e fuf'pUr jguk
clr dh unh dh rjg /khj&/khj cguk

● सबसे पहला काम मौत को जानना है क्योंकि जो मौत को जान लेगा वो अल्लाह को भी जान लेगा लेकिन जो मौत को नहीं जानेगा वो अल्लाह को भी नहीं जान सकता है। हर मौत हमारी ही मौत है हर मौत, हमारी ही मौत की याद है और अगर ये याद गहरी हो सके तो शायद हम जिंदगी को जानने में भी कामयाब हो सकते हैं '' मौत से पहले मर जाओ '' हदीस शरीफ

का गहरा मतलब यही है के मौत को जान जाओ – अगर इसको जान लिया तो जिंदगी को जान लिया और जिसने जिंदगी को जान लिया उसने अल्लाह को ?

f'kdk;rk l cgr tku uk gy dku djk
nk dke g ,d dk rk lkeku djk
;kru dk djk vYykg dh eth l utj
;k jkg [knk e tku dk dcku djk

~ सरकार सूफ़ी सरमद

● मुरीद को अल्लाह और मुर्शिद की रज़ा में राज़ी रहना चाहिये अल्लाह और मुर्शिद के किये पर सवाल नहीं उठाना चाहिये अल्लाह ने फरिश्तों को आदम अ.स. (इन्सान) के आगे सजदा करने का हुक्म दिया तो बाकी सब फरिश्तों ने हुक्म मान लिया लेकिन शैतान ने ये कह कर आदम के सामने सजदा करने से इन्कार कर दिया के वो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के सामने सजदा नहीं करेगा शैतान ने अपनी तरफ से तो अल्लाह को बड़ा साबित करने की कोशिश की लेकिन उसने असल में अपनी अक्ल और मर्जी को अल्लाह के इल्म और उसके हुक्म से बड़ा साबित करने की कोशिश की –

gkfde dk gDe] gkfde g
ef'kn dh ekuuk gh gdhdr e
ef'kn dk ekuuk g

● तूने अल्लाह की किताब पढ़ ली और उसे ज़ुबानी याद करके हाफिज़ भी कहलाने लगा लेकिन हकीकत के राज़ से जो तुम्हारी लाइल्मी के परदे के पीछे पौशीदा रखा है उस से आशना ना हो सका पढ़ - पढ़ कर तू आलिम तो बन गया लेकिन अपने किताबी इल्म को धन-दौलत इकट्ठा करने के लालच में तूने उसे अपना ज़रिया मआश बना लिया बेहिसाब किताबें पढ़ने से तुझे क्या हासिल, जो ज़ालिम मन ना बस में आ सका हमारा दुश्मन तो हमारा नफ्से अम्मारा है जो हमारे अन्दर बैठा हुआ है सिवाय कामिल मुर्शिद की मदद के बिना इसे कोई ना मार सका -

हज़रत सुलतान बाहू

fugx vk vtngk vk 'kj uj ekjk rk D;k ekjk
cMe thd ke kjku ¶l v Eekjkd kx je kjk

(1) ● किसी बोझ उठाने वाले ने दूसरे का बोझ नहीं उठाया किसी ने ना काटा जब तक ना बोया।

(2) ख़ाली लालच है ए साहबजादे तू कच्चा ना खा कच्चा खाना इन्सान में बीमारी पैदा करता है

(3) फलां ने अचानक खज़ाना पा लिया मैं भी एसा ही चाहता हूँ दुकान की जुस्तजू क्यों करूँ ।

(4) ये मुकद्दर की बात है और वो भी बहुत नादिर है जब तक बदन में जान है कमाई करनी चाहिये।

[5] ● कमाई खज़ाने के लिये कब रूकावट है काम से कदम ना हटा वो तेरे पीछे है ।

[6] तू अगर – मगर में बिल्कुल ना फंस के अगर मैं ये करता या वो करता ।

मसनवी–II-P-80

● हकीकत ये है के ''हम नहीं करते'' ये नहीं के ''हम कर नहीं सकते'' ''कीमती'' यह नहीं है के हमारे पास कितना है कीमती हकीकत में ये है के जो हमारे पास है हम उसका क्या कर रहे हैं जो कुछ हमारे पास है हम उसे बदल नहीं सकते लेकिन उस तरीके को सचमुच बदल सकते हैं जिससे हम उसका इस्तेमाल कर रहे हैं अगर सही ढंग से चला जाये तो प्यादा भी वज़ीर बन सकता है –

nfu;k d ; fQdjkr g >B o cdkj
rjk ; [;ky [kkyh , fny g cdkj
nfu;k iku d [;ykr l r [k'k uk gk
cdkj g ; nfu;k] vgy nfu;k cdkj

सरकार सुफी सरमद

● हर आईना-ए-दिल में उसी मालिक की तस्वीर जलवा गर है दिल और सूरतें मुख्तलिफ हैं मगर बातिन में जलवा उसी वाहिद मालिक का है ।

मैंने सब जगह देखा बातिन में एक ही तस्वीर है ये आईना हर जगह मौजूद है ये खुदा ही की देन है ख़ालिक और उसकी मख़लूक एक दूसरे से जुदा नहीं है जैसे लफ्ज और उसके मायने, फूल और उसकी खुशबू-वो हर वक्त अपनी तखलीक के साथ है तू '' हमें '' और '' उसे '' को लफ्ज व मानी की तरह देख, तू आँख और निगाह अलहदा - अलहदा होते हुए भी यकजा देख, तुम किसी शख्स को भी उस मालिक से अलहदा ना पाओगे तू उसे फूल और खुशबु की तरह यकजा देख -

सरकार सुफी सरमद

● लोग '' ला इलाहा इल्लललाह '' तो कहते हैं मगर इन्हें मालूम नहीं के '' नेस्त '' और हस्त से क्या मुराद है नफी किस की हो और असबात किस का हो - कलमे के मायने ये हैं के सिवाय ज़ाते वाहदहु ला शरीक के दुनिया में कोई मौजूद नहीं है और मौहम्मद? मज़हरे खुदा है बस तालिब को चाहिये - ख्याले गैर का ना आने दे और ज़ाते मुतलक को हर जगह मौजूद समझे चुनान्चे इरशाद बारी तआला है ''जिधर देखो जहुरे यज़दी है ''

ftd [kQh vkj uekt gdhdh rd otn g

1 ● अक्ल दूसरी अक्ल से ताकत हासिल कर लेती है शकर - शकर से कामिल होती है ।

2 मैंने नफ्स के मकर से बहुत सी बातें देखी हैं वो अपने मकर के जरिये अच्छे - बुरे की तमीज़ खत्म कर देता है ।

3 तेरे हाथ में ताज़ा - ताज़ा वादे देता है जिन को उसने हज़ार बार तोड़ा है ।

4 उमर अगर सौ साल की भी फुरसत दे वो तुझे हर रोज़ नया बहाना सिखाएगा ।

5 गलत वादों को दुरूस्त बतायेगा, कुव्वते मरदमी, का जादु, मरदमी को खत्म कर देता है ।

6 इस तकदीर का इलाज भी तकदीर ही जानती है तकदीर के मामले में मख़लूक की अक्ल कमज़ोर और टेड़ी है ।

सरकार रूमी-मसनवी ॥-220

● जो काम पानी कर सकता है वो काम पेट्रोल नहीं कर सकता जो काम तांबा कर सकता है वो सोना नहीं कर सकता - चींटी का हल्का पन उसे चलाये रखता है पेड़ का भारीपन उसे जड़ों से जोड़े रखता है हर चीज़ और हर इन्सान ख़ास तौर से किसी मकसद को पूरा करने के लिये बनाये गये हैं भले ही मुझमें कुछ कमियाँ क्यों ना हों मैं अपने खुद के बजाय कुछ और कैसे हो सकता हूँ? भले ही किसी और की कामयाबी व ताकत मुझे लुभाती

tk vDyeUn ykxk dh lkgcr e jgrk g
ok vDyeUn cuxk & yfdu devDyk dh
lkgcr e jgu okyk ud lku gh e jgxk A

कौल

● वो महबूबे हकीकी तो हमारे पास है ये कम अक्ल इन्सान बेकार उसे बाहर तलाश करता फिरता है जरूरत उसे बाहर तलाश करने की नहीं बल्कि चश्मे बातिन –(भीतरी आँख) बढ़ाने की है जब तक अन्दर की आँख बन्द है वो महबूब दूर महसूस होता है मगर जब उसका जलवा करने वाली खुदा दाद अन्दर की आँख खुल जाती है तो वो साफ और ज़ाहिर रू–बा–रू नज़र आने लगता है अगर दिल समझदार है तो महबूब हर दम पास है अगर आँख देखने वाली है तो हर सू उसी का जलवा है –

सरकार सुफी सरमद

ekQ djuk vDy dh t dkr g

कौल

● इस दुनिया की अन्दरूनी असलियत – इस की ज़ाहिरी सूरत से बिल्कुल मुख्तलिफ है हवास की लज्जतें – दुनियावी ऐश व इशरत – शान – शौकत – ज़ाहिरी तौर पर सुख के ज़रिये मालूम होते हैं लेकिन दरअसल ये एसी पौशीदा आग है जो इन्सान की जिस्मानी – दिमाग़ी और रूहानी तबाही की वजह बनती है मालिके कुल ने मुझ पर रहम करके इस आग से बचा लिया वरना मैं भी इस में जल कर राख़ हो जाता –

(सरकार शैख फरीद)

हमने लिया रंग अल्लाह का और किसी का रंग है? अल्लाह से बेहतर और हम इस की इबादत करने वाले हैं।

कलामे अल्लाह

● एक अन्धा था जो कह रहा था पनाह बा खुदा, मैं दोगुना अन्धापन रखता हूँ दुनिया वालों मुझ पर जरूर दो गुना रहम करो चुंकि मैं दो गुना अन्धा पन रखता हूँ और बीच मे हुँ लोगों ने तआज्जुब से पूछा लेकिन इस दोहरे अन्धेपन को साफ - साफ बता इसलिये के तेरा एक अन्धापन हम देखते हैं वो दूसरा अन्धापन क्या है ज़ाहिर करके बोला, मैं भद्दी व नागवार आवाज़ वाला हूँ आवाज़ का भद्दापन और अन्धापन दोगुना अन्धापन हो गया मेरी बुरी आवाज़ ग़म का सरमाया बन जाती है मेरी आवाज़ की वजह से मेरे उपर मेहरबानी कम हो जाती है मेरी बुरी आवाज़ जहाँ भी जाती है गुस्सा- ग़म व कीना का सबब हो जाती है !

मसनवी II-P-194

● तू वो शमा है जो फानूस के अन्दर से भी खुद को ज़ाहिर कर रही है अपने इस जिस्म के लिबास से तू जाहिर है - ए बे ख़बर इन्सान तू किताब की तरह अपनी हस्ती से बेख़बर है कलामे इलाही तेरे अन्दर है और तू उसका परदा दार है खुदा तेरे अन्दर है और तुझे ख़बर नहीं तू उस शीशी की तरह है जिसके अन्दर गुलाब का अतर है मगर वो उसकी खुशबू से बेख़बर है !

utjk e g gj pUn d fiugk r g
bl jkt dk Hkh lkgc bjQk r g
g 'kek dh ekfuUn uek;k gj ne
Qkul d ijn e Hkh tkfgj r g

सरकार सुफी सरमद

● जिंदगी शतरंज के खेल की तरह है और ये खेल आप कुदरत के साथ खेल रहे हैं आपकी हर चाल के बाद अगली चाल कुदरत चलती है आपकी चाल आपकी पसंद कहलाती है और कुदरत की चाल नतीज़ा कहलाती है आपका इम्तहान लिया जाता है आपको चुनौती दी जाती है आपको कोने में धकेल दिया जाता है और फिर जब कुदरत देखती है के आप अपना खेल बा खूबी – अच्छे ढंग से खेल रहे हैं तो वो आपको बाज़ी जीतने देती है और इस तरह खुद भी जीत जाती है तुम्हारे अपने–आप को देखने का आईना हक तआला है और हक तआला के नाम व ज़हूर व अहकाम को देखने का आईना तुम हो –

कौल

● दिल की तख्ती पर अल्लाह की वहदत का सबक लिखा है कयामत तक तू उसे पढ़ता रह तूने तमाम उमर मज़हबी किताबों के मुतालअ में गुज़ार दी गोया ला इल्मी और जहालत में अपना वक्त बरबाद कर दिया फकत उसके नाम कलमाए हकीकी को संभाल कर रख ये एक ही सबक है जिसकी जी–जान से पैरवी और रियाज़त

करता रह जो उस एक को अपने दिल में बसा लेता है दीन और दुनिया दोनों ही उस की गुलामी का दम भरते हैं ।

[knk dk igpku djgh cl [knk ikvkx
vki viuh utj e utj vkvkx
dg jgk g vkt Hkh dkbZ egjck
fny dh jkgk i vTe lQj pkfg;

● मैं तुमसे दुनिया का तलबगार नहीं ये तो खुश्क घास से भी हेच है तेरे दीदार की दोलत के बिना ये भी एक बन्दिश है दुनियादार दुनिया के ग़मों में ही डूबे रहते हैं वो नासमझ व ना अहल हैं वो इस चन्द रोज़ा जिंदगी की तमन्ना और इसकी हिरस में गिरफ्तार रहते हैं उन से नेकी की उम्मीद नहीं की जा सकती इस दुनिया के लोग एक दुसरे के दुश्मन हैं इनकी दोस्ती पर भरोसा करना सरासर नादानी है ।

सरकार सुफी सरमद

ru n[kk xe vkj [k'kh d fnu tYnh xtj x;
[kn'k ; r> ftu ckrk l ok Hkh xtj x;
nk&pkj lkl ftnxh dk ljek;k cpk g vc
bu dkuk djr tk;k] djxk D;k] tk ; Hkh xtj x;

● हकीकी रोज़े की तारीफ ये है के इन्सान अपने दिल को तमाम दीनी व दुनियावी ख़्वाहिशात से अलग रखे यानि ख्वाहिशे जन्नत और दुनियावी जाहो-माल से अलग रहे गैरूल्लाह की तरफ ख्याल करना बहिश्त की हवस वगैरह हकीकी रोज़े को तोड़ने वाली चीज़े हैं रसूले खुदा ने फरमाया के अल्लाह के सिवा किसी का दीदार मतलूब नहीं और हकीकी रोज़े की इब्तदा भी दीदारे इलाही है और इन्तहा भी दीदारे इलाही होगी यानि रोज़े की इब्तदा मआरफत हक तआला है और इफ्तार यानि इन्तहा भी दीदारे इलाही है ।

tcks l dg Hkh fn;k ^^yk byykgk bYyyykg**
rkD;k gkfly
;fny tke lyek ugh rk dN Hkh ugh

● ख़ारे सागर से, गंदे नाले-नालियों से, बदबूदार तालाबों से, रूके हुए पानी की झीलों से, पानी कहीं से भी भाप बनकर ऊपर जाये वो बारिश बनकर नीचे आता है और तब वो पीने के काबिल पानी बन चुका होता है इसी तरह जब इन्सान का ताल्लुक अपने ऊपर से हो जाता है तो वो पाकीज़ा हो जाता है इंसान के ख्यालात, जज़्बात और वुजूद तब ही पाक होते हैं जब वो अपने से उपर वाले से जुड़ता है जब दुआ की जाती है तब रहमते-बरकतें मिलती है -

ekgrkt fdlh dk uk cu] c'kd tekuk NkM n
r oDr dh xfn'k d vkx] lj >dkuk NkM n
viuh [knnkjh dk j[kuk g vxj r>dk Hkje
lcj dj gj ,d d vkx] fxMfxMkuk NkM n

(1) ● इसकी ज़ात की तजल्लियात में जा, खर्च हो जा ''अलिफ'' की तरह ''बिस्म'' में चला जा दाखिल हो जा ।

(2) इस ''अलिफ'' ने ''बिस्म'' में खुफिया कयाम किया है वो ''बिस्म'' में है भी और नहीं भी ।

(3) इस तरह वो तमाम हरूफ जो फना हो जाते हैं इत्तसाल के लिये हरफ के हज़्फ के वक्त में ।

(4) वो सिला है ''बा'' और ''सीन'' उस की वजह से जुड़े ''बा'' और ''सीन'' के वस्ल को ''अलिफ'' बरदाश्त ना कर सका ।

(5) जब ये विसाल एक हरफ की गुंजाइश नहीं रखता तो जरूरी हो गया के गुफ्तगु को मुख्तसर कर दूँ

● जिस दिल ने इश्क का सौदा नहीं खरीदा वो निहायत बदबख्त है, बदनसीब है, रोज़े अजल से ही खुदा ने मेरे दिल की तख्ती पर इश्क का ये सबक लिख दिया, कामयाबी हासिल हो जाने पर गुरूर नहीं करना और मुसीबत आने पर शिकवा या शिकायत ना करना, खुदा की वहदत का सबक सीख और उस से विसाल कर और ये

सबक फकत दौराने हयात वक्त के मुर्शिद से ही सीखा जा सकता है ।

ftl dk dkbZ ef'kn ugh ok c nhu g
vkj ftldk dkbZ 'k[k ugh ok 'krku g

● मखज़ने असरारे यज़दानी, मआदने फयुज़ाते सुब्हानी, मेरे भाई ख़्वाजा कुतबुद्दीन, अल्लाह तआला आप को सलामत रखे एक रोज़ मेरे शैख ने ''नफी-असबात'' के कलमे की बाबत क्या खुब फरमाया के ''नफी'' अपने आप को ना देखना और असबात अल्लाह तआला को देखना है क्योंकि कोई बनी हुई खुदी के रहते खुदा नहीं हो सकता यानि ''नफी'' की ''नफी'' करने वाला होना चाहिये वरना ''नफी'' का कोई फायदा नहीं अगर ये ख्याल करें के हस्ती सिर्फ अल्लाह की हस्ती है तो मतलब हासिल होता है ।

ftl& evkjQr gd rvkyk gkfl y gk tkrh g
ok vYykg&vYykg dgrk ugh fQjrk
vkj tk dgrk fQjrk g mlh vHkh evkjQr e;Llj ugh

● अल्लाह तआला बन्दे के दिल में है और दिल कल्बे इन्सान में मगर दिल दो किस्म का है एक दिल मजाज़ी दूसरा हकीकी -हकीकी दिल वो है जो ना दाहिने जानिब है ना बाँयी जानिब, ना उपर की तरफ है ना नीचे

की तरफ, ना दूर है ना नज़दीक, मगर इस हकीकी दिल की शनाख्त आसान नहीं सिर्फ मुकर-रे-बाने खुदा इसे जानते है मोमिन कामिल का दिल दर हकीकत अर्शे खुदा होता है '' कल्बुल मोमिन अर्शुल लाह तआला '' कुर्ब व हुजूरी सोहबते मुर्शिद कामिल - मुरीद तालिब के बिना नहीं हो सकती कामिल और तालेबान सादिक सवाल व जवाब नहीं किया करते बल्कि खामोश वा बा अदब रहते हैं -

flok; vgy evkjQr d fdlh vkj dk
b'd d jetkr l okfdQ ugh djkuk pkfg;

● वाजेअ रहे के कलमा शहादत-नमाज़-रोज़ा वगैरा की सूरत भी और हकीकत भी, इन के हकायक को छोड़कर सिर्फ ज़ाहिरी सूरतों पर कनाअत कर लेना फिज़ूल है वो शख्स बड़ा अहमक है जो इनके हकायक तक ना पहुँचा अल्लाह तआला हमेशा था और हमेशा रहेगा सालिक इब्तदा में नाबीना होता है जब हक तआला की तरफ से इसे बीनाई हासिल हो जाती है तो फिर इसी से देखता-सुनता है अपने आप को फरामोश कर देता है जब ऐसी सूरत हो जाये तो वासिल हमेशा के लिये जिन्दा हो जाता है - ये अच्छी तरह समझ लो, यकीन कर लो के कलमाये शहादत और नफी व असबात अल्लाह तआला की मआरफत है।

● ए सूफी, तू जाग या ना जाग, वक्त आखिरकार तुझे जगा ही देगा, आखें बन्द कर लेने से दिल नहीं जागता, वो तब ही जागेगा जब तू अपनी जिंदगी के मकसद को हासिल कर लेगा मुराद यानि तुम्हारा अपने रब से विसाल हो जायेगा जब मैंने इस राज़ को पुख्ता कर लिया तो मैंने डंके की चोट पर कुल आलम में एलान कर दिया के मेरे मुर्शिद ने मुझे रब का रास्ता दिखाया है वरना मैं तो हमेशा भूल और भटक में ही वक्त बरबाद करता रहा –

dkb D;k vnktk dj ldrk g bld tkj ckfru dk
fuxkg en ekfeu l cny tkrh g rdnhj

हर कोई इमान को सलामत रखने की इल्तजा करता है इश्के इलाही की दौलत कोई एक आध ही मांगता है मैं अल्लाह के इश्क से गुरेज़ करने वाले, और इमान की सलामती की चाह रखने वालों की मांग पर शर्मिन्दा हूँ उन की ख़्वाहिश किस कदर हकीर है जो इश्के इलाही के मुकाबले में इमान की वफादारी का दम भरते है इश्क हमें जिस मकाम वा मंजिल पर पहुँचा सकता है इमान उस से बिल्कुल बे ख़बर और बबहरा है ए ख़ुदा मेरा इश्क सलामत रख मैं तेरे इश्क की ख़ातिर अपना इमान गिरवी रखता हूँ –

pjkx vDyk f[kjn lcd ikl g yfdu
dkb tyk; g, g ml] dkb c>k; g,

● वही अव्वल है और वो ही आख़िर है वो ही ज़ाहिर है और वो ही बातिन है और वो ही हर चीज़ को ख़ूब जानता है – इस वक्त मुझे तमाम अव्वलीन व आख़रीन का इल्म अता फरमाया और तरह–तरह के उलूम तालीम फरमाये जिन में एक इल्म एसा था जिस के ज़ाहिर ना करने का अहद मुझ से लिया गया के इसे किसी से ना कहूँ और हर कोई इसके बरदाश्त की ताकत भी नहीं रखता बजुज़ मेरे। एक इल्म एसा था जिस के ज़ाहिर करने और छिपाने का मुझे इख्त्यार दिया गया और एक इल्म ऐसा था जिस को अपनी उम्मत के हर ख़ासो–आम में तबलीग़ करने का हुक्म फरमाया।

हालते मेराज–मदराजे नबूवत–P-305

● पाने का एक ही तरीका देना–देना–देना अपना अच्छा वक्त देना – अपने अच्छे ख्यालात देना, मदद देना, दर हकीकत देना और पाना – एक दूसरे से अलग और ख़िलाफ नहीं है बल्कि एक दूसरे से जुड़े हुए हैं देते ही पाना भी आता है और पाते ही देना भी शुरू हो जाता है तुम शरूआत देने से करो आम लोग पाने से शरूआत करते हैं देना और पाना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं – रहम करो – रहम किया जायेगा – बख्शा दो – बख्शा दिया जायेगा – माफ करो – माफ किया जायेगा – और जो चाहिये, वो पहले दो – यही कानूने खुदा वन्दी है –

gdhdr g ;s tk nk ok gh okil iyV dj vk;xk
r ekgCcr lcdk n vkj y ekgCcr gj rjQ

● ए ख़ुदा तू मुझे धमकी देता है के मैं तुझे दोजख़ में डाल दूँगा – मुझे ये बता के दोजख़ का वुजूद है के नहीं –? अगर इस का वुजूद हकीकी है तो वो तेरे बगैर नहीं हो सकता लेकिन जहाँ तू है उसे दोजख़ कैसे कह सकते हैं अगर तू वहाँ नहीं तो दोजख़ मादूम है और अगर दोजख़ मौजूद है तो वहाँ तू भी मौजूद है और अगर तू भी वहाँ मौजूद है तो दिक्कत क्या क्योंकि मुझे तुझ से मतलब है तेरी पैदा की हुई चीज़ों से नहीं–

gk [kkb;k er Qjc gLrh
gj pUn dg d g] ugh g
gj pht&gjd 'k e r g
ij r> lh rk dkb 'k ugh g

● ख़ुदा ने अपने से अलावा दूसरों के मौजूद होने का वहम पैदा करके ख्वामखाह एक हंगामा मचा दिया है हरफ '' कुन '' कह कर और मौजूदात की हस्ती का अन्दाज़ा देकर ख़ुद अपनी हस्ती को गुमान में मुब्तला कर दिया है आखों के अन्दर भी आप बाहर भी आप, देखने वाला भी ख़ुद और दिखाई देने वाला भी ख़ुद, ख़ुद अपनी ही दोनों हैसियतों के दरम्यान रस्में परसतिश का एक वहमी परदा लटका दिया है –

देख लेने वाली आँख का मतलब दिल की आँख है
दीदार करने वाले के लिये देखने वाली आखें,
चश्मे की तरह आँख का परदा हैं–

● इस वुजूद में " कल्ब " रब की सच्ची बारगाह है – ए हक को तलाश करने वाले इस के अन्दर झांक कर देख – वो आबे हयात तो तेरे अन्दर रखा है इश्क का चिराग़ अपने अन्दर रोशन कर ताके बातिन से लाइल्मी का अंधेरा दूर हो जाये और तेरी खोई हुई दौलत तुझे वापिस मिल जाये जिन पर ये राज़े हक आशकार हो जाता है वो मौत आने से पहले मर जाते हैं मकसद वो जीते जी दुनिया की तरफ से, बेदख़ल–बेनियाज़ हो जाते हैं दुनिया में रहते हुए भी दुनिया में नहीं होते दुनिया के साथ उनका ताल्लुक टूट जाता है और बातिन में अल्लाह के साथ रिश्ता कायम हो जाता है

– nfu;k dkfQj dk fy; tUur g

●

आग में डाले हुए लोहे का रंग आग के रंग सा हो जाता है – है तो वो लोहा आग होने का दावा बुलंद बांग कर सकता है जब ख़ूब आतिश में तप कर तो बेशक "मैं आग हूँ " "मैं आग हूँ " पुकारने लगता है तबदीली से इसका रंग भी आग का सा हो जाता है और इसमें जलाने की सिफ्त भी आग की तरह पैदा हो जाती है और वो अपने आप को सरापा आतिश समझकर खुश करने वाले को कहता है अगर तुझे यकीन [illegible] देख

dCy vt [kqtj] [kyhd l gd dk cruk e

ले – vc gd cru [kYd] cvkn vt tgj g

, fny cfxj nkeu lYrku vkfy;k

;kfu ^^glu** bCu vyh tku vkfy;k

● इन्सान जब रोटी खाता है तो रोटी जो सिर्फ मिट्टी व पौधे का जोड़ थी – हयात व शऊर में तब्दील हो जाती है मोम या इंधन को आग में डालो तो ये रोशनी में बदल जाते हैं कुदरत का तमाम कानून इन्सान के सामने – बाहर भी और भीतर भी अमल कर रहा है इस पर भी इसको यकीन नहीं आता के ज़्यादा तरक्की का रास्ता खुला हुआ है और इस का तरीका यही है के जिंदगी को और अच्छी जिंदगी बनाने की कोशिश करता रहे इश्क इसी का नाम है–

इस ज्यादा तरक्की के लिये इश्के हकीकी को बढ़ाने की जरूरत है इन्सान को मायूस नहीं होना चाहिये क्योंकि इसके अन्दर ये बात रखी गई है के वो अन्दर की सफाई से जिंदगी के राज़ों का गुलदस्ता बन सके –

● रूह आलमे अमर में से है और आलमे अमर बे जहत है जहाँ जहत नहीं वहाँ मकानियत और जिस्मानियत भी नहीं । जब आलमे अमर का ये हाल है तो इस अमर के आमिर को इस पर कयास कर लो के वो और भी सूरत और व जहत से मुबररा होगा अहले ज़ाहिर खुदा को अर्श नशीन समझते हैं । और अर्श उनके नज़दीक एक माददी तख्त है ख्वाह इसका मादा – जवाहर से भी पैश बहा हो लेकिन इसमें माददो वज़न है इसलिये हज़ारहा फरिश्तों को हुक्म है के वो इसे अपने कांधे पर उठाये रखे ।

bykgh gedk Hkh ml edke ij igpk n tgk
ckrphr e vyQktk dk bLreky ugh gkrk

● अगर तू दुनिया में आशिक बन जाये और तेरा इश्क मुकम्मल हो जाये तो तेरे पास दुनिया ख्वाब में एक औरत की सूरत में आयेगी और कहेगी मैं तो आपकी खादमा हूँ मेरे पास खज़ाने हैं तू इस को ले ले वो किस्म-किस्म की चीज़ें तुझे गिन कर बताएगी और अगर तेरी मआरफत पूरी हो जाए तो हालते बेदारी में तेरे पास अंबिया तशरीफ लाऐंगे इनकी पहली कैफियत इल्हाम की होगी और दूसरी हालत ख्वाब की और जब ये हालतें मज़बूत हो जाऐंगी तो खुल्लम-खुल्ला फरिश्ता आएगा और कहेगा-अल्लाह तआला तुम से एसा-एसा फरमाता है ।

जिन्दगी मेरे लिये सिर्फ एक मोमबत्ती नहीं है वो मेरे लिये बड़ी मशाल है जिसे मैंने कुछ वक्त के लिये थाम रखा है और मैं इसे नई पीढ़ी के सुपुर्द करने से पहले जितना ज्यादा मुमकिन हो इससे चारों तरफ रोशनी फैलाना चाहता हूँ ।

जार्ज बर्नाड शा

जिंदगी अपने-अपने फैसलों पर मुनहसर होती है किसी की भी तकदीर उसके लिये गये फैसलों पर मुनहसर करती है ।

tc re vdy vkj gk'k l Hkj gkr gk
rc cgrj bUlku cuu dh dfQ;r e gkr gk

dHkh Hkh lknxh dh rkdr dk utj vUnkt er djk

● मोमीन को तीन आखें होती है (1) सर की आँख जिस से वो दुनिया को देखता है (2) दिल की आँख जिस से आख़रत को देखता है (3) ज़मीर की आँख जो दुनिया और आख़रत हक तआला के साथ बाकी रहती है यही वो आँख है जो हक तआला को दुनिया व आख़रत में देखती है एसा मोमीन जिसकी ये कैफियत हो अगर वो आबादी में होता है तो वो तमाम आबादी के लिये रहमत है अगर वो ना रहे तो ज़मीन का वो हिस्सा धस जायेगा, दीवारें रहने वालों पर गिर जायेंगी ए लोगों, तुम इस को सच मानों और इस पर यकीन लाओ, तुम इन जाहिलों की मानिन्द ना हो जाओ जिन्होंने नबियों को कत्ल किया है वो अपने रब्बुल इज्ज़त से दुश्मनी रखने वाले, धुतकारे हुए, दूर किये हुए होते है ।

● ए अल्लाह के बन्दो, अक्लमन्द हो जाओ कोशिश करो के तुम अपनी मौत से पहले अपने माबूद को पहचानो और इससे दिन – रात हिदायत व रहबरी तलब करो वो चाहे अता करे या न करे इस पर तोहमत मत लगाओ और ना ही जल्दबाज़ी का इज़हार करो, ज़िल्लत के कदमों पर ठहर कर इससे मागो, अगरचे वो तुम्हारी दुआ देर से कुबूल करे तुम इस पर एतराज़ मत करो इस लिये के वो तुम्हारी नियतों को खूब जानता है सुनों इस बात को और समझो के तुम अपने रब को जाने – पहचाने

बिना कैसे मर जाओगे और तुम इसको पहचानते हो नहीं तो फिर कैसे इसके पास जाओगे इसके सामने पहुँचने से पहले इसको इख़्तियार करो ।

● जान लो के खुदा के दोस्तों यानि औलिया –अल्लाह को दीन व दुनिया में कहीं भी ना कोई खौफ है और ना गम है ये वो लोग हैं जो अल्लाह पर सच्ची रूहों की तरह इमान लाये और अपने आमाल में अल्लाह की नाफरमानी से बचते रहने का ख़ौफ किया इनके लिये दुनिया और आख़रत दोनों ज़िन्दग़ानियों में खुशखबरी है याद रखो के अल्लाह के कलमात में जरा भी तबदीली नहीं होती ये अल्लाह का कानून है बस जिसको वली–अल्लाह होने का दरज़ा हासिल हो जाये तो समझो के इस इन्सान के लिये ये सबसे बड़ी कामयाबी है ।

;s mudh buk;r g] ;s mudk dje g
vYykg d oyh dk] u dkbZ [kkQ g] uk xe g

● इल्म तो असल में वही है जो अमल में आकर जिंदगी में अच्छाई पैदा करे – इल्म की सुरत किताबों में मिलती है इल्म की हकीकत अमल में मिलती है और इल्म की लज्ज़त सुफियों की सोहबत से मिलती है हर शख्स का मकसद जुदा – कारोबार जुदा और सुफियों का काम इल्मे

बातिन की तबलीग़ है बहुत सी किताब पढ़ लेने का नाम दीन नहीं है दीन में आदतों का सुधारना भी शामिल है इसी को तहज़ीब वा शऊर भी कहते हैं यानि अपने आमाल में, कामों में, हरकतों में, बोलचाल में सुधार लाना चाहिये – और ज़ाहिर व बातिन काम सुधारने हर हाल में फर्ज है।

uk fdrkck l&uk okv tk l&uk utj l
ink nhu gkrk g ctxk dh utj l

● आगाह हो जाइये के शैतान बड़ा आलिम है – उलमा को आलिम बन कर धोखा देता है बहुत बड़ा आरिफ है और नफ्से अम्मारा की फितरत से खूब वाकिफ है लिहाज़ा आरिफों को आरिफ बन कर धोखा देता है बहुत बड़ा आबिद है के बरसों सजदे में सर रखे रखा लेकिन ''आशिक'' नहीं अगर आशिक होता तो तो बिना ना–नुकुर आदम के सामने सजदे में गिर जाता इसलिये हमें आशिक बनना है निजात के लिये और बारीय तआला ने खुद इस मोहब्बत का तरीका और राज़ कुरान शरीफ में बतला दिया है के तुम सरकारे दो आलम से मोहब्बत करो तो मैं तुम से खुद मौहब्बत करूंगा –

dke;kch rk dke l gkxh
uk d gLu dyke l gkxh
dkf'k'k o vgreke l gkxh

• अगर तू अल्लाह तआला के इल्म के जरिये ख़ल्क को पहचान ले और मआरफत अल्लाह के जरिये ख़ल्क को जान ले तो तुझ से ख़ल्क की सिफात गायब हो जायेगी और इन्सान – जिन – फरिश्ते तुझ से मादूम हो जायेंगे तेरा दिल कोई दूसरी हालत बयान करेगा इसी तरह तेरे जमीर से तेरे वुजूद का छिलका उतार लिया जायेगा और तेरे पास हुक्म आयेगा और वो तेरा लिबास हो जायेगा जिस से तेरा और तेरे रब्बुल इज्ज़त की ख़ल्क का मामला जुड़ा होगा और इलमे इलाही तेरे दिल और ज़मीर की कमीज़ हो जायेगा –

सरकार ग़ौस पाक

gkrh ugh dcy nvk rjd b'd dh
fny e rMi uk gk rk nvk e vlj dgk

• अल्लाह से मोहब्बत करने वाला अल्लाह का मेहमान है और मेहमान अपने खाने–पीने और लिबास में और अपनी तमाम हालतों में घर वालों पर अपना इख्त्यार नहीं चलाता और ना ही खुद मुख्तार बनता है बल्कि हमेशा इन से राज़ी और मुआफकत करने वाला साबिर बना रहता है बस ऐसी हालत में उस से कहा जाता है के जो कुछ तू देखता और पाता है इस से खुश रह और जो अल्लाह तआला को जान लेता है उसके दिल से दुनिया और आख़रत और अल्लाह तआला के सिवा हर चीज़ गायब हो जाती है तेरे उपर जरूरी है के

तेरी गुफ्तगु अल्लाह के लिये हो वरना खामोशी तेरे लिये बेहतर है तेरी जिन्दगी अल्लाह की अताअत में हो वरना तेरे लिये मौत बेहतर होनी चाहिये –

सरकार ग़ौस पाक–फयुजे यज़दानी–P-464-465

● अमीरूल मोमेनीन हज़रत सय्यदना अली मुरतजा करमल्लाह वजहो ने फरमाया अगर परदा उठ जाये तो मेरे यकीन में कुछ ज्यादती ना होगी और फरमाया के मैं जब तक रब तआला को देख ना लूँ इस की इबादत नहीं करता और फरमाया के मेरे दिल ने मुझे मेरे परवरदिगार को दिखाया है । ए लोगों सुफियों और दरवेशों के पास बैठो और उन की खिदमत करो और उन से इल्म हासिल किया जा सकता है तुम सुफियों की सोहबत में हुस्ने अदब से बैठो और इन पर एतराज़ छोड़ दो ताकि तुझे इन के इल्म का फैज़ हासिल हो जाये और इन के अमलों से तुझे फायदा हासिल हो –

सरकार ग़ौस पाक–फयुजे यज़दानी–P-460-461

● अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं वो खुद जिन्दा है और सब को जिन्दा कायम रखने वाला है ना उस को उंघ आती है ना नींद ! इसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है कौन है जो सिफारिश कर सके उस के पास बगैर उसकी इजाज़त के, जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है वो नहीं घेर

सकते किसी चीज़ को उस के इल्म से मगर वो जितना चाहे उस की कुर्सी ने ज़मीन व आसमान को समा रखा है और नहीं थकाती उसको ज़मीन व आसमान की हिफाज़त और वही सबसे बुलन्द अज़मत वाला है। आयतल कुर्सी-सुरअ बकरा-2:55

अल्लाह नहीं थकता है कोई उस का शरीक नहीं आप जिस हाल में भी हैं तवज्जोह फरमायें बिला शुबहा आप ही फतेहयाब हैं।

मोहर नबुवत वा उसके मायने
मदराजे नबुवत जिल्द 1-Page36

- जिस ने उसको ढूंढा अक्ल को राहनुमा बनाकर खुदा, उसको अपने से दूर कर देता है के वो हैरत में वक्त बरबाद करता रहे और वो उसके बातिन को शदीद ख्यालों में मुब्तला कर देता है यहाँ तक के वो हैरान होकर ये कह उठता है के मैं नहीं जानता के तू है या नहीं!

खुदा को कोई नहीं जान सकता सिवाय उस शख्स के जिसे खुद खुदा अपनी मआरफत अता कर दे और कोई शख़्स उसकी वहदत का इकरार नहीं कर सकता सिवाय उसके जिसे खुदा खुद अपनी वहदत से आगाह कर दे और कोई शख्स उस पर ईमान नहीं ला सकता सिवाय उस के जिस पर वो खुद अपना लुत्फो-करम नाज़िल फरमा दे और कोई शख्स अपना सुधार नहीं कर सकता सिवाय उसके जिसे खुदा-खुद सुधारना चाहे। तारीखे़ तसव्वुफ P-350

● सिर्फ वो शख्स खुदा को जान सकता है जिस पर खुदा अपने आप को ज़ाहिर कर दे क्या कोई मोहददिस और फानी हस्ती कदीम को जान सकती है? क्या एक बात या किस्सा जुबान का अहाता कर सकता है? वो फुरकान के नाज़िल करने के जरिये से सच्चाई का निशान अपनी तरफ से, अपने आप में, अपने ज़रिये से, ज़ाहिर कर देता है एक ऐसे यकीनी इल्म से जो उस की तरफ से है, उसके जरिये से है और उसी का है हमारे दिलों को मज़बूत कर देता है ये है जो मैंने साबित कर दिया है जिसे मैंने वाजेअ कर दिया है ये ही मेरा पुख्ता ईमान है के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है जो लोग अल्लाह के साथ मकामे फरदियत में है जो साहबाने मआरफत है वो एलानिया और खुफिया दोनों तरीकों से यही कहते है ''ला एलाहा इल्लललाह'' और सब का भला चाहते है।

सरकार मन्सूर अल–हल्लाज – तारीखे़ तसव्वुफ P-351

● जिंदगी का हक और इस का मकसद अंबिया और औलियाओं से ज्यादा और किस ने समझा? और इन के अमल पर गौ़र करो तो मालूम हो जायेगा के इन्होंने जिंदगी जद्दो – जहद से गुजारी जमाने के नाराज़ लोगों का सबर से मुकाबला किया जमाने के हर रंग को पहचाना ! जिंदगी की असल भलाइयाँ कोशिश करने वालों के लिये है शुरूआत से ही ये जिंदगी का उसूल रहा है और ये उसूल अटल है इन्होंने ऊचें और अच्छे मकसद को हासिल करने की कोशिशें की और मलकूती मुरगों को पकड़ने के लिये जाल बिछाये जिस की वजह से इनके नुक्स दूर हो गये और वो अनहद की तरफ कदम बढ़ाते चले गये।

हिकमते रुमी–P-248–खलीफा अब्दुल हकीम

• तेरा सर तो फटा हुआ नहीं है के सर पर पट्टी बांधकर मजबूर और लाचार हो कर बैठ गया है दो–एक रोज़ कोशिश करके देख अगर नतीजा ना निकले तो मेरी हंसी उड़ाना मैं फितरतन अल्लाह का एक आलमगीरी ऊसूल बयान कर रहा हूँ जिसके ख़िलाफ होना नामुमकिन है मैं हलफन कहता हूँ के मैं काफिर हूँ अगर इमान पर बंदगी की राह में अच्छे अमल करते हुए किसी को कोई हकीकी नुकसान पहुँचा हो !

खुदा की अज़मत की बुलन्द इमारत के ज़ैरे–साया ऐसे लोग भी हैं जो फरिश्तों का पैगम्बरों का बल्कि खुदा तक का शिकार करते हैं यानि हिम्मत करके बुलन्द से बुलन्द दरजे तक उपर उठते हैं ।

दीवान शम्स तबरेज़–हिकमते रूमी–P-248-249
खलीफा अब्दुल हकीम

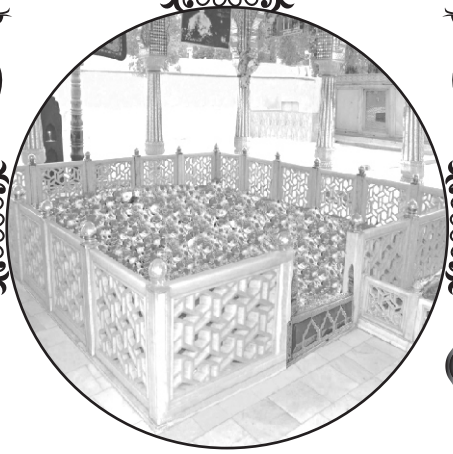

दरगाह सरकार कुतबुद्दीन बा-इख्त्यार काकी कु.सि.अ.

(1) ● खुदा की पहचान उस शख्स को हो सकती है जो साहबे अक्ल हो, ज़हीन हो और खुदा की पहचान का शौक रखता हो।

(2) पहचान हासिल करने के लिये इश्क, यकसुइ और तवज्जोह बेहद जरूरी है।

(3) जो शख्स इत्मीनाने कल्ब से महरूम हो, दुनिया में गिरफ्तार हो जिसे अपने हवास पर काबू ना हो, जो कोशिश और निगंरा ना हो सके वो पहचान हासिल नहीं कर सकता।

(4) अगर खुदा को मकसूद बना लो, अगर उससे मोहब्बत कर सको और उसकी याद से लज्ज़त हासिल कर सको तो हवास पर काबू पा सकते हो और अगर ये नेमत हासिल हो जाये तो नफ्से अम्मारा पर काबू पा सकते हो अगर नफ्से अम्मारा पर काबू हासिल हो जाये तो खुद बीनी – तकब्बुर से रिहाई पा सकते हो अगर खुद बीनी से बाज़ आ सको तो खुदा बीन बन जाओगे।

(1) ● खुदा खुद तुम्हारे अन्दर मौजूद है तुम इसका ध्यान तो करो वो यकीनन तुम को मिल जायेगा ! और तुम वो बन जाओगे।

(2) अन्दर और बाहर हर जगह वो ही मौजूद है यही तसव्वुफ का बदला और अंजाम है।

(3) कामिल मुर्शिद रहनुमाई कर सकता है मगर बे–इल्मी के सागर से निकलने के लिये तुम्हें खुद कोशिश

करनी पड़ेगी और जब तुम कोशिश करोगे तो खुदा का फज़्ल तुम पर नाज़िल होगा।

[4] खुदा ही हर तरफ जलवा गर है मगर हम जहालत के मारे इसके दीदार से महरूम हैं अगर दिल की आखों से देखें तो वो हर शै से ज़ाहिर हो रहा है।

D;k [kc ekyk dk cuk yk&edku g
ft le ok jgrk g nk vfyQ dk edku g
uknku dkb tku D;k fgder edku dh
nk f[kMfd ;k l >kdrk vYykg gj vku g

● तकवे (परहेज़्गारी) की कुंजी तौबा है और इस पर कायम रहना अल्लाह तआला के कुर्ब की कुंजी है तौबा ही हर काम की असल वा फरोह है इसी वजह से सालेहीन किसी भी हालत में तौबा के बारे में कोताही नहीं करते ऐ मेरे मुरीदों तुम तौबा करो ऐ गुनाहगारों तुम तौबा के ज़रिये अपने रब से मसालहत करो इस दिल में अगर दुनिया से लगाव और तमा रह जाये तो अल्लाह के काबिल नहीं हो सकता अगर तुम अपने दिल को इस काबिल बनाना चाहते हो तो अपने दिल से इन दोनों को निकाल दो ऐसा करना तुम्हें नुकसान नहीं देगा इसलिये के जब तुम अल्लाह से जुड़ जाओगे तो दुनिया और मख़्लूक तुम्हारे पास आयेगी और तुम इस के दरवाज़े पर पड़े ना रहोगे।

● ऐ जाने दो आलम मैं आपके रूखे ज़ेबा की झलक का शायक हूँ मेरे ख्यालों पर आप की सरोकदी का नशा छाया रहता है!

काबा, कलीसा, गिरजा और शराब ख़ाने में जहाँ भी जाता हूँ मेरा दिल आप की मोहब्बत में सरशार रहता है!

हाजी हरम ओ काबा के तवाफ के लिये जाता है लेकिन मेरे दिल की सजदा गाह आपका संगे आस्ताना है!

जब भी मैं इबादत के लिये मस्जिद में बैठता हूँ तो उस वक्त मेरा दिल आपके दो अबरूओं की महराब की तरफ मुतावज्जह होता है।

कुतबे दीं की किस्मत में आप के दर की ही गुलामी है क्योंकि इसका दिल आप की जुल्फें स्याह का असीर है।

सरकार कुतबुद्दीन बा-इख्त्यार काकी (दीवान)

● तुम समझदार बनो क्योंकि मैं तुम्हारे पास ना दिल पा रहा हूँ ना दिल की पहचान अफसोस के तुम कोशिश करने वालों का लिबास पहनकर कोशिश का दावा करते हो और बादशाहों और अमीरों के दरवाज़े पर जाते हो ये लोग दुनिया दार हैं और तुम्हारा नफ्से अम्मारा दुनियादारी की तलाश करता है दुनिया में मशगूल रहना अल्लाह के बन्दों का रास्ता काट देती है और इन को अपने कब्ज़े में करके इनकी अक्लों को ख़त्म कर देती है और हर एक के साथ ऐसा ही होता है कुछ एक को छोड़कर क्योंकि अल्लाह के कुछ ऐसे बन्दे भी हैं जिन की सरपरस्ती पूरी तरह अल्लाह फरमाता है इस लिये के

उन्होंने हर उस चीज़ पर अमल किया जो सरकारे दो आलम ले कर आये अल्लाह तआला ने उन से राज़ी होकर उन की सरपरस्ती की ओर उन से मोहब्बत की –

सरकार ग़ौस पाक–जिला अल ख़ातिर– P-36-37

● ऐ अज़ीज़े जान, कभी भी खुदा के सिवा किसी पर भरोसा ना करना के तू शर्मिन्दा ना हो , खुदा से ग़ाफ़िल ना हो के शैतान तुझ पर राह ना पाये, किसी चीज़ से मग़रूर ना हो ताकि तू हलाक ना हो, दिल को लालच से ख़ाली कर ताकि तू आराम पाये, अल्लाह के काम में लगा रह ताकि तेरा काम बन जाये, सही और सच के अलावा कुछ ना कह ताकि तू परेशान ना हो किसी से दिल ना लगा ताके नुकसान ना उठाये किसी से बुराई ना कर ताकि तू ख़राबी में गिरफ्तार ना हो, तंगी – गरीबी में सबर कर ताकि कुशादगी (बड़ा होना) पाये, लालच को दिल से दूर कर ताकि तू ज़लील ना हो सबसे ना उम्मीद हो जा ताकि तेरे काम बन जायें, खुलूस से काम ले ताकि बदला पाये, दुनिया का ग़म ना कर ताकि तेरा दिल तबाह ना हो –

इंतख़ाब–मिनहाजुल–आबेदीन

● ऐ अज़ीज़े मन, सच्चाई इख्त्यार कर ताकि तू छुटकारा पाये, किसी को तकलीफ ना दे ताकि तू हिफाज़त में रहे किसी को हिकारत से ना देख ताकि तू ज़लील ना हो, दुनिया के माल ना होने पर रंजीदा ना हो ताकि तू परेशान ना हो, मौत को याद कर ताकि तेरा दिल दुनिया में ना लगे

अमानत में ख्यानत ना कर, फिजूल बोलने को तमाम मुसीबत की जड़ मान, दूसरे का अहसान मान, किसी पर अहसान ना जता, चुग़ल-खोर को अपने पास आने ना दे, किसी की जरूरत को पूरा करने को बड़ा काम जान, जुर्म के हिसाब से सजा दे, तू जहाँ कहीं भी मौजूद हो खुदा को हाज़िर जान, बेअदब ना हो, अपने कौल और इकरार को गुस्से और खुशी की हालत में अच्छी तरह ख्याल रख, जब तू दुनिया वालों के पास बैठे तो अल्लाह को ना भूले किसी से उम्मीद ना रख ।

इंतजाब-मिनहाजुल-आबेदीन

● ऐ अज़ीज़े जान, आजज़ी कर ताकि बड़ाई को पहुँचे खुदा का शुक्र अदा कर अगर तू दीन और दुनिया की नेमत चाहता है तो ! बे खौफ ना हो ताकि इमान पाये, हक के साथ रह अगर हमेशा का ऐश चाहता है तो, बुजुर्गों की खिदमत कर ताकि बड़ाई को पहुँचे, सबर इख्त्यार कर अगर आराम चाहता है तो! खुद को खुदा के सुपुर्द कर ताकि तेरी मुरादें पूरी हों, अपने आप को किसी काबिल ना समझ ताकि इज्ज़त पाये कनाअत (थोड़ी चीज़ पर राज़ी होना) कर, अगर तू दौलतमन्दी चाहता है तो ! किसी चीज़ की फिकर में ना रह, ताकि आज़ाद हो, खुद को ना देख (मनमानी ना कर) ताकि तू मआरफत को पहुँचे अख़लास से मांग ताके पा जाये इज्ज़त का ख्याल रख ताके तू घमण्डी ना हो ।

इंतखाब-मिनहाजुल-आबेदीन

● ए अज़ीज़े जान, अच्छी आदत वाला बन ताकि अज़ीज़ बने, खरीदो–फरोख्त इख्त्यार कर ताकि इसका फायदा हासिल करे, गुस्सा पी जा ताकि आराम पाये – मिस्कीन रहो ताकि मकबूल हो जाओ, ऐसा काम कर के शर्मिंदा ना हो अपने एब और गलत कामों पर ग़ौर कर – अगर तू बा–इख्त्यार है तो सब के साथ मुलामियत और नरमी कर ताकि लोगों का प्यार पा सके किसी की नेमत पर हसद ना कर ताकि आराम पाये तमाम लोगों का दोस्त बन ताकि शान–शौकत वाला बने, कमज़ोरों से प्यार भरा बर्ताव कर ताकि निजात पाये, कामों को आहिस्ता–आहिस्ता कर ताकि शैतान तुझ पर कामयाबी ना पाये लोगों का दिल से अहतराम कर ताकि अल्लाह की रज़ामन्दी पाये बुरी आदत छोड़ दे जिससे– जिंदगी कड़वी ना हो ! इंतजाब–मिनहाजुल–आबेदीन

● ऐ अज़ीज़े दिल, मआमलात में सख्ती ना कर ताकि परेशान ना हो, सब के साथ नरमी कर ताकि निजात पाये सख्ती छोड़ दे ताकि तू हर एक के नज़दीक दोस्त हो जाये, खुद से मांग ''ला'' अपनी कुवत से अगर तू जवामर्द है खुदा को याद कर ताकि तेरा दिल स्याह ना हो, आजज़ी और नेकी कर ताकि तू पीछे ना रह जाये, हक के सिवा कुछ और ना सोच, अगर तू ख्वाहिश मन्द है, मुखालफत छोड़ दे, ताकि सलामती से रहे, खुदा के हुक्म से मुँह ना मोड़ ताकि तू गुनाहगार ना हो जो तेरे साथ बुराई करे उसके साथ भलाई कर काफिले के साथ चल क्योंकि डाकू बहुत है और दुश्मन हमला करने की ताक में है, इस खुदा के दर पर सर झुका या फिर जा, अपना रास्ता ले ! इंतजाब–मिनहाजुल–आबेदीन

● ऐ अज़ीज़े दिल, खुद पसन्द ना हो, दोस्ती वो ही अच्छी है जो खुदा के वास्ते हो, अपना बोझ किसी पर ना डाल ताकि ज़लील ना हो, तू नसीहत सुन ताकि फायदा हासिल करे, अल्लाह से पनाह मांग ताकि निजात पाये, वक्त को पहचान अगर तू परखने वाला है लोगों से कोई लालच ना रख ताकि मोहताज ना हो, नफ्से अम्मारा की खसलतों को छोड़ दे अगर तू बहादुर है काम को सोच समझकर कर ताकि नुकसान ना उठाये, खुदा से मदद मांग ताकि तू मदद पाये, खुदा ही की तरफ दौड़ ताकि तू दुश्मन से निज़ात पाये बेसहारा रह ताकि लोग तेरे साथ हों !

इंतखाब-मिनहाजुल-आबेदीन

cl ckr dk ok gh ykx dcy djr g
tk xkj l vkj fny yxkdj lur g !

सुरह-6 आयत-36

● सब तारीफें ख़ास उस खुदा के लिये है जो आप ही अपनी ज़ात के साथ मौजूद है तमाम चीज़ें इस के पैदा करने और वजह से मौजूद है और वुजूद और बाकी रहने में इसकी मोहताज है। वो किसी चीज़ का मोहताज नहीं है वो यकता है अपनी ज़ात में भी और सिफात में भी और अपने कामों में भी, किसी शख्स को भी इसके कामों में शिरकत नहीं है और ना उसका वजूद, दर हयात, और चीजों के वजूद और हयात की तरह है और ना उसका इल्म मख़लूक के इल्म की तरह है अल्लाह तआला बुरे आमालों से राज़ी नहीं, बल्कि बुरे आमालों का बदला मुकर्रर फरमाता है और अच्छे आमाल और हुक्म मानने से राज़ी है तमाम अंबिया हक पर हैं।

माला बररूमना

● किसी को गाली देना ज़बान से या सर या आँख या हाथ के इशारे से या इसी तरह की बात से या इस पर इस तरह हँसना जो इसकी बेइज्जती का सबब हो हराम है सरकारे दो आलम ने फरमाया के हकीकी मुसलमान और इन्सान के माल और आबरू की कीमत उसके खून की कीमत की तरह है और काबे से फरमाया हक तआला ने तुझे बहुत हुरमत दी है लेकिन मुसलमान और इन्सान की और इन्सान की हुरमत तुझ से ज्यादा है।

सबसे बड़ा झूठ – झूठी गवाही है गुरूर और तकब्बुर करना और खुद को दूसरों से अच्छा समझना और दूसरों को हकीर समझना हराम है और नसीहत तो अक्ल वाले ही कुबूल करते हैं।

माला बररूमना

● गुरूर और तकब्बुर करना और अपने को दूसरों से बेहतर समझना और दूसरों को हकीर समझना हराम है अपने खानदान और नसब पर गुरूर करना और माल व मरतबा ज्यादा होने पर घमण्ड करना हराम है अल्लाह के नज़दीक इज्ज़त वाला वो है जो ज्यादा परहेज़गार है! जब कोई तुझ पर अहसान करे तो उसका शुक्रिया अदा करना, बदला उतारना बेहतर है और उसका इन्कार करना और ना शुकरी करना बड़ा गुनाह है क्योंकि जिस ने बन्दे का शुक्र अदा ना किया उस ने खुदा का शुक्र अदा ना किया, मोमिन के मोमीन पर छः हक हैं मरीज़ की अयादत, जनाज़े में शिरकत, दावत कुबूल करना, सलाम करना, वादा ख़िलाफी ना करना, पीठ पीछे खैर-ख्वाही करना।

माला बररूमना

● ऐ अज़ीज अगर तू इमान वाला है तो चार चीज़ों को चार चीजों से पाक रख तू सबसे पहले अपने दिल को हसद से पाक रख इसके बाद तू खुद को मोमिन समझ ज़बान को झूठ और गीबत से पाक रख ताकि तेरे इमान को नुकसान ना पहुँचे अगर तू अपने अमल को दिखावे से पाक रखे तो तेरी शम्माए ईमान में रोशनी पैदा हो जाए अगर तू अपने पेट को हराम गिज़ा से पाक रखे तो तू इमानदार हो जायेगा और तुझ पर सलामती हो।

हजरत फरीदुद्दीन अत्तार

utj&utje mrjuk vklku gkrk g
uQl&uQl e mrjuk vklku gkrk g
cyfUn;k i p<uk dkb deky ugh
cyfUn;k i Bgjuk deky gkrk g

● बे शुमार तारीफें इस खुदाये पाक के लिये जिसने एक मुट्ठी खाक (आदमी) को इमान अता किया वो बादशाह है जो चाहता है करता है एक आलम को एक दम में फना कर सकता है इसकी बादशाही बहुत मुसल्लिम है किसी को चूं – चरा करने की इजाज़त नहीं है वो एक को तो खज़ाना और नेमत देता है दूसरे को तकलीफ में मुब्तला कर देता है वो एक को दो सौ थैलियाँ सोने की देता है और दूसरा रोटी की आरज़ू में ही जान दे देता है एक वो है जो तख्त पर इशरत व नाज़ से बैठा है दूसरा फाके से मुँह खोले हुए है।

हजरत फरीदुद्दीन अत्तार

ftl 'k[l un[kyhgdhdr dh>yd
gp mldh fuxkgk e g fiUgk; Qyd
vQykd ij vgen x; ekyoh u dgk
ljenu d gkv k;kQ ydv genr d

सरकार सुफी सरमद

1 • फितना और फसाद में इस तरह रहो जैसे ऊँट का वो बच्चा जिस ने अपनी उमर के दो साल खत्म किये हों के ना तो उसकी पीठ पर सवारी की जा सकती है ना उसके थनों से दुध निकाला जा सकता है ।

2 जिस ने तमाअ को अपना अशआर बनाया उसने अपने को सुबुक किया और जिस ने अपनी परेशानी का इज़हार किया वो जिल्लत पर आमादा हो गया और जिस ने अपनी जुबान को काबू में ना रखा उसने खुद अपनी बेइज्ज़ती का सामान कर लिया ।

तालीम : मौला अली क.व.क.

1 • तसलीम और रज़ा बेहतरीन मसाहब (हमनशीन सोहबत में रहने वाला) और इल्म शरीफ, तरीन मीरास (विरासत) है और इल्मी व अमली औसाफ नौ बनू खलअल (नयी बेहतरीन पौशाक जो किसी बादशाह की तरफ से अता हो) है और फिकर साफ – शफ्फाफ आईना है ।

2 अकलमन्द का सीना उसके राज़ों का मखज़न होता है और कुशादा रवी मोहब्बत और दोस्ती का फन्दा है और तहम्मुल वा बुर्दबारी एबों का मदफून है और सुलह वा सफाई बुराइयों को ढकने का जरिया है ।

3 जो शख्स अपने को बहुत पसन्द करता है वो दूसरों को नापसन्द हो जाता है और सदका कामयाब दवा है और दुनिया में जो बन्दों के आमाल हैं वो आख़रत में सामने होंगे !

तालीम : मौला अली क.व.क.

● ख़ुद को पसन्द करना शैतान का काम है मर्द वो है जो अपने को हकीर समझे, शैतान ने कहा मै आदम से बेहतर हूँ इसी वजह से वो कयामत तक मलाऊन हो गया आजज़ी के सबब मिट्टी आदम बन जाती है और नूरे आतिश (शैतान) सरकशी की वजह से गुम हो जाता है इब्लीस तकब्बुर की वजह से रान्दाह दरगाह हुआ और आदम तौबा की वजह से मकबूल हुए दाना जो मिट्टी में गिरता है हक तआला उसे उभार देते हैं खोशा जब बुलन्द होता है तो उसको झुका देते हैं !

Hkyk ugh vglku ekgCcr dg dkfey
; lkt rEg ftl u fn;k ml dk nvk nk
lkt Xke e> dk cgj dher xokjk D;k uk gk
b'd fQj Hkh b'd g gj pUn :lok D;k uk gk

सरकार कामिल शुत्तारी

● चार चीज़ें बेवकूफी की निशानी हैं तुझको बताता हूँ ताकि तू वाकिफ हो जाये दुनिया में जो शख्स अपने एब को बुरा नहीं समझता और लोगों की बुराई ढूंढने में लगा रहता है अपने दिल में कंजूसी का बीज बोता है इस पर भी जूदो – सख़ा की आरज़ू रखता है मख़लूक जिस के अख़लाक से खुश नहीं है अल्लाह के दरबार में उसकी कोई कदर नहीं है जिस किसी का तरीका बदखोई(बुरा चाहना) होता है उस का काम हमेशा बद गोई होता है –

पन्द नामा शैख फरीदुद्दीन अत्तार

xyrh fdldh g ; ckn e r; dj yx
igy bl uko dk rQk l cpk;k tk;
cjkbl vkjk dh fxukuk e egkjr g ftUg
,l gj 'k[l dk vkbuk fn[kk;k tk;

1. जिद और हठ धर्मी सही राय को दूर कर देती है ।
2. लालच हमेशा की गुलामी है ।
3. कोताही का नतीजा शर्मिन्दगी और एहतियात वा दूर अन्देशी का नतीजा सलामती है ।
4. हकीमाना बात से खामोशी इख्त्यार करने में कोई भलाई नहीं जिस तरह जहालत की बात में कोई अच्छाई नहीं ।
5. जब दो मुख्तलिफ दावतें होंगी तो उन में से एक जरूर गुमराही की होगी ।
6. जब से मुझे हक दिखाया गया है मैंने इसमें कभी शक नहीं किया ।
7. ना मैंने झूठ कहा, ना मुझे झूठी ख़बर दी गई , ना मै खुद गुमराह हुआ ना मुझे गुमराह किया गया ।

● इस्लाम का इन्साफ को पसन्द करने वाला इस ख़ानकाही जिंदगी से साजगार नहीं है के वो रूहानी तरक्की के लिये, दुनिया से हाथ उठा लेने की तालीम नहीं देता ना उस चीज़ को पसन्दगी की निगाह से देखता है के इन्सान घर-बार छोड़कर किसी कोने में छुप कर बैठ जाये या जंगल चला जाये या सिर्फ रस्मी इबादत में लगा रहे इस्लाम में इबादत सिर्फ कुछ रस्मों तक महदूद नहीं है बल्कि हलाल रोज़ी की तलाश और हमदर्दी और खुलूस और मोहब्बत करना भी इबादत का एक अहम जुज़ है और जो लोग अपनी दुनिया अच्छी करने के लिये दीन से हाथ उठा लेते हैं तो खुदा उस दुनियावी फायदे से ज्यादा उन के लिये नुकसान के हालात पैदा कर देता है !

शरअ N.B. Page-835

● फिर शैख साहब { यानि सरकार बाइख्त्यार काकी कु.सि.अ. } की बुजर्गी की निस्बत आपने ये हिकायत बयान फरमाई के एक मर्द ने आकर हज से सलाम किया और कहा मैंने हज किया है आप तवाफ में मेरे साथ थे शैख साहब ने ललकार कहा के ए नादान क्या तू मर्दो की बात फाश करता है चुप रह के मरदाने खुदा गुदड़ी के तले होते हैं ये तो कोई बड़ी बात नहीं, काबा खुद हमारे पास है अगर मर्द चाहे तो मशरिक से मग़रिब तक की सारी चीज़ें दिखा सकते हैं और फिर अपने मकाम तक आ जाते हैं ! ए अज़ीज़ मर्द जहाँ बैठते हैं वहीं खाना काबा होता है वहीं अर्श और कुर्सी और तमाम मख़लुकात इस के सामने मौजूद रहती है !

बाबा फरीद मसुद गंजुल शकर

तर्जुमा मलफुज़ात राहतुल कुलूब P-51-52-53

● जो शख्स अल्लाह से राज़ी होगा वो अपनी और ग़ैर की तमाम हालतों में अल्लाह तआला की मआफकत करेगा अल्लाह इस को महबूब बना लेगा और अल्लाह इस को अपनी मआरफत अता फरमायेगा और सारी उमर इस को अपनी राह मकसूद पर साथ रखेगा अव्वल इस को तौफीक देता है इस के बाद इस को अपना मुकर्रिब बनाता है और इस की हैरत व परेशानी के वक्त फरमाता है ''मैं तेरा रब हूँ'' अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अ.स. बा जाहिर ये इरशाद फरमाया था और इस आरिफ के दिल में बतौर बातिन इरशाद फरमाता है –

सरकार गौस पाक

अल फतह हुर रब्बानी
Page No. 440-441

● ए जल्दबाज़, सबर कर, तुझे खुशगवार नैमत मिलेंगी तूने अल्लाह तआला को जाना और पहचाना ही नहीं अगर तू अल्लाह तआला को पहचान लेता तो शिकायत ना करता ना अन्दर ना बाहर, अगर तू अल्लाह को पहचान लेता तो उसके सामने बेज़ुबान बना रहता और उस से कुछ भी तलब ना करता ना अपनी दुआओं में गिड़गिड़ाता बल्कि तू उसकी मआफकत करता और उस के साथ सबर करता। उस का हर काम सरापा मसलहत है वो तुझे आज़माता है ताकि देखे तू कैसे काम करता है वो तुझे जांच रहा है के तू उसके वादे पर भरोसा करने वाला है या नहीं ! तू ये जानता भी है के वो तेरे हर हाल से वाकिफ है और तुझे देख रहा है !

सरकार ग़ौस पाक

फयूज़े यजदानी Page No. 524-525

D;k vYykg viu cUn dk dkQh ugh

सूरह जमर – कलामे अल्लाह

● ऐ जल्दबाज़, सबर कर, तुझे खुशगवार नैमत मिलेंगी तूने अल्लाह तआला को जाना और पहचाना ही नहीं अगर तू अल्लाह तआला को पहचान लेता तो शिकायत ना करता ना अन्दर ना बाहर, अगर तू अल्लाह को पहचान लेता तो उसके सामने बेज़ुबान बना रहता और उस से कुछ भी तलब ना करता ना अपनी दुआओं में गिड़गिड़ाता बल्कि तू उसकी मआफकत करता और उस के साथ सबर करता। उस का हर काम सरापा मसलहत है वो तुझे आज़माता है ताकि देखे तू कैसे काम करता है वो तुझे जांच रहा है के तू उसके वादे पर भरोसा करने वाला है या नहीं ! तू ये जानता भी है के वो तेरे हर हाल से वाकिफ है और तुझे देख रहा है !

सरकार ग़ौस पाक : फयूज़े यजदानी Page No. 524-525

D;k vYykg viu cUn dk dkQh ugh

सूरह जमर – कलामे अल्लाह

● मौत को याद किया कर क्योंकि मल्कुल–मौत को रूहों पर मुसल्लत कर दिया गया है तेरे माल असबाब और जो कुछ भी तेरी मिल्कियत में है वो तुझे कहीं धोखे में ना डाल दे जल्द ही ये सब तुझ से वापिस ले लिया जायेगा और उस वक्त तुझ को अपनी कोताही और वाहियात मशग़लों में वक्त बरबाद करना याद आयेगा और नादिम और शर्मिन्दा होगा उस वक्त नदामत तुझ को कोई फायदा नहीं देगी जब तक तू अल्लाह के गैर के साथ रहेगा तो रंज–गुनाह–गम– शिर्क और गुनाह में मुब्तला रहेगा तू दिल से मख़लूक से अलग हो जा और अल्लाह से मिल जा और फिर तू वो देखेगा जिस को ना किसी आँख ने देखा और ना कानों ने सुना है और ना किसी इन्सान के दिल पर इन का ख्याल गुज़रा है ! सरकार ग़ौस पाक, फयूज़े यजदानी

● ऐ इमान वालों, तुम हकीकी तौर पर अल्लाह पर इमान लाओ, इस से मुराद वो मोमिन है जो अक्ली दलायल के जरिये अल्लाह पर ग़ायबाना इमान लाये है इन्हें अल्लाह ने ख़िताब किया है और इन्हें हुक्म दिया है के वो मुशाहेदा और शहूद के सामने इमान लाये इस में इन्हें इस बात की तरफ इशारा करके मुख़ातिब किया गया है जिस में ये इरशाद फरमाया है'' देखो '' वो अपने रब से मुलाकात करने के बारे में शक में मुब्तला है ध्यान रखो वो हर चीज़ का अहाता करने वाला है ''!

ok fdruk codQ g tk pedr g, vkQrkc
dk c;kcku e 'kek dh jk'kuh e ryk'k dj !

सरकार सय्यद शाह गुल हसन कलन्दरी कादरी पानीपती

● ए अल्लाह के बन्दे, जब तू मर जायेगा तब तू मुझको देखेगा और अपने दायें – बायें से पहचानेगा और मैं तेरा बोझ उठाऊँगा और तुझ से तकलीफ को दूर करूँगा और तेरे बारे में अल्लाह से सवाल करता रहुंगा तू कब तक मख़लूक को अल्लाह तआला का शरीक और इन पर भरोसा करता रहेगा तुझ पर वाजिब है तू ये जान ले ना तुझे कोई तकलीफ पहुँचा सकता है और ना कोई तुझे नफा दे सकता है तू अल्लाह को लाज़िम पकड़ और मख़लूक पर भरोसा ना कर और ना अपनी कमाई और ताकत और कुवत पर भरोसा कर तू तो सिर्फ अल्लाह पर भरोसा कर के जिसने तुझे कसब (कोशिश) पर कुदरत बख्शी है ! सरकार ग़ौस पाक फयूज़े यजदानी

ftnxh [okc g] [okc e lp g D;k]
vkj Hkyk >B g D;k] lc >B g !

तालीम हज़रत इमाम हुसैन अ.स.

1. ● जब जिस्म मौत के लिये है तो अल्लाह की राह में शहीद होना सबसे बेहतर है !
2. सरदार बनना चाहते हो तो बेहद कोशिश करने को अपना तरीका बना लो !
3. अपने काम के बदले वाजिब से ज्यादा उम्मीद ना रखो !
4. दौलत का बेहतरीन खर्च ये है के इससे इज्जत आबरू को बरकरार रखा जाये !
5. मुरव्वत ये है के जब वादा करे तो पूरा करे और जालिमों के साथ रियायत खुद एक जुर्म है !
6. तकवा (परहेज़गारी) और नेकी आखरत के लिये बेहतरीन (सफर का खर्चा है और ज़लील वो है जो कंजूस है) !

तालीमः इमाम आली मकाम हज़रत इमाम हुसैन अ.स.

तालीमात हज़रत अली क.व.क.

1. ● ये इन्सान ताअज्जुब के काबिल है के वो चरबी से देखता है और गोश्त के लोथड़े से बोलता है और हड्डी से सुनता है और एक सुराख से सांस आती-जाती है फिर भी ?
2. लोगों से इस तरह मिलो के मर जाओ तो तुम पर रोयें और जिन्दा रहो तो तुम्हारे मुश्ताक हों !
3. जब तुम्हें थोड़ी बहुत नेमतें हासिल हों तो नाशुकरी से इन्हें अपने पास से भगा ना दो !

4 खौफ का नतीजा नाकामी और शर्म का नतीजा महरूमी है और दुख और परेशानी का वक्त अबर की तरह गुज़र जाता है लिहाज़ा भलाई के लिये मिले हुए मौकों को गनीमत जानो !

rj gtj 'kEek, beker fy; g,
dnlh [kM gn¶rj dnjr fy; g,

तालीमात सरकार मौला अली क.व.क.

1 ● हर शख्स की कीमत वो हुनर है जो उस शख्स में है !

2 हिकमत मोमिन ही की गुमशुदा चीज़ है इसे हासिल करो चाहे मुनाफिक से लेना पड़े !

3 पूरा आलिम वो है जो लोगों को रहमतें खुदा से और उसकी तरफ से हासिल होने वाली राहत से ना उम्मीद ना करें और ना उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बिल्कुल मुतमईन कर दे !

4 ये दिल भी उसी तरह उंकता जाते हैं जिस तरह बदन उकता जाते हैं लिहाज़ा जब ऐसा हो तो उनके लिये लतीफ हकीमाना नुक्ते तलाश करो !

5 वो इल्म बिल्कुल बेकार है जो सिर्फ जुबान तक रह जाये और वो इल्म बहुत ऊँचा है जो अमल से जाहिर हो !

6 जब कोई हदीस या बात सुनो तो उसे अक्ल से परख लो सिर्फ अल्फाजों पर बस ना करो क्योंकि इल्म की नकल करने वाले तो बहुत हैं और इस पर गौरो-फिकर करने वाले कम हैं !

तालीमात मौला अली क.व.क.

1. • इमान दिल से पहचानना, ज़बान से इकरार करना और हाथ पाँव वा सब आज़ा से अमल करना है!

2. यकीन की हालत में सोना, शक की हालत में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है ! (97)

3. हालात के पलड़ों में मरदों के जोहर खुलते है!(219)

4. मुख़ालफत सही राय को बरबाद कर देती है!(215)

5. अक्सर अक्लों का ठोकर खा कर गिरना तमा और हिरस की बिजलियाँ गिरने पर होता है !

6. तमा करने वाला जिल्लत की जंजीरों में गिरफ्तार रहता है !

7. जो शख्स सुस्ती और काहिली करता है वो अपने हक को ज़ाया वा बरबाद कर देता है और जो चुगलखोर की बात पर भरोसा करता है वो दोस्त को अपने हाथ से खो देता है !

वसीयत मौला अली क.व.क.

• खुदा के लिये आज मेरा मकसद पुरा हुआ ! तुम्हें खौफे खुदा की वसीयत करता हूँ दुनिया को तलब करने से बचो अगरचे दुनिया तुम्हारे चक्कर लगाये उस चीज़ पर अफसोस ना करना जो तुम्हारे हाथ ना आ सके हमेशा हक बात कहो और परवरदिगार की रज़ा की खातिर हर काम करो

सितम करने वालों से हमेशा लड़ते रहो और जिन पर जुल्म हुआ और हो रहा हो उनके मददगार बन कर रहो तुम्हें और अपने तमाम अज़ीज़ों और फरजन्दों को और हर उस शख्स को वसीयत करता हूँ जिस तक मेरी ये वसीयत पहुचें खुदा का ख़ौफ करो, अपने कामों को सही रखो और एक-दूसरे के बीच सुलह और नरमी से काम लो !

● सोहबत अपना असर दिखाती है अगर कोई बुरा आदमी नेक लोगों की मजलिस में रहेगा तो वो नेक हो जायेगा और अगर कोई नेक आदमी बुरे लोगों की सोहबत में रहेगा तो वो बुरा हो जायेगा जिस ने कुछ भी हासिल किया सोहबत से ही हासिल किया जिस ने जो कोई भी नैमत हासिल की नेकों से ही हासिल की – राहे सुलूक यानि हकीकत पाने की तलाश में चलना नेक काम करने से भी बेहतर समझा जाता है और बुरी सोहबत को बुरे कामों से भी बदतर समझा जाता है !

सरकार बा-इख्त्यार काकी कु.सि.अ. (दसवीं मजलिस-द.आ.)

c&bYe Hkh ge ykx g xQyr Hkh g rkjh
vQlkl d vU/k Hkh g vkj lk Hkh jg g

● इल्मे बातिन यानि तसव्वुफ – सुफिज्म किताबों में नहीं लिखे जाते बल्कि अल्लाह तआला इन में से थोड़ा सा हिस्सा जिस बन्दे को अता करता है वो हर किसी से इसका बयान नहीं करता सिवाय उन लोगों के जो इस के हकदार हों और इस के राज़ में शरीक होते है ये वो नफा देने वाला इल्म है जो बन्दा और अल्लाह के दरम्यान है और यही इन दोनों के

दरम्यान दीदार और मुलाकात का वास्ता है !
D;k gvk tk g rj ekFk i ltnk d fu'kku
dkb , lk ltnk Hkh dj tk tehu ijfu'kku NkM tk;

शैख इमाम गज़ाली अहया उल उलूम

● ऐ अल्लाह के बन्दे – तू अपनी अताअत की वजह से अल्लाह तआला से रू–गरदानी ना कर, और इस पर गुरूर ना कर और अल्लाह तआला से इसके कुबूल होने की दुआ कर और इस काम से डर के वो तुझे कहीं मासियत की तरफ ना मुन्तकिल कर दे और अल्लाह से डरता रह वो कौन है जो तुझे इस से बेखौफ कर रहा है अल्लाह को जानने वाला शख्स और वो किसी चीज़ से धोखा नहीं खाता और कभी भी बेखौफ नहीं होता !

तू दिल के आमाल और अख़लास को इख्त्यार कर अख़लास ये है के तुम अल्लाह के सिवा सब से ताल्लुक खत्म कर लो !

फयूज़े यजदानी Page No. 158

● अक्ल के दरख्त को सोच विचार का पानी दे ताकि खुश्क ना हो जाये और फले – फुले, और गफलत के दरख्त को जहालत का पानी ना दे, ताकि ना बढ़े, तौबा के दरख्त को नदामत का पानी दे, ताकि बढ़े और मोहब्बत के दरख्त को खुलूस का पानी दे ताकि बढ़े !

तालीम सरकार बा–इख्त्यार काकी

, tku nk vkye e vkid :[k tck dh >yd dk 'kk;d g
ej [;kyk ij vkidh ljkdnh dk u'kk Nk;k jgrk g

काबा, कलीसा, गिरजा, और शराबखाने में मैं जहाँ भी जाता हूँ मेरा दिल आपकी मोहब्बत में शरसार रहता है !

gkth gjek dkc d rokQ d fy; tkrk g yfdu
ej fny dh ltnkxkg vkidk n;kj g !
drc nh dh fdLer e vkid nj dh xykeh g
D;kfd bldk fny vkidh tYQ dk xyke g

सरकार बा-इख्त्यार काकी कु.सि.अ.

(1) • अंबिया से ज्यादा खुसुसियत उन लोगों में होती है जो उन की लाई हुई चीज़ों का ज्यादा इल्म रखते हैं हज़रत इब्राहीम से ज्यादा खुसूसियत उन लोगों में थी जो उनके फरमाबरदार थे, फिर फरमाया हज़रत मोहम्मद स.अ.व. का दोस्त वो है जो अल्लाह का हुक्म माने अगरचे उन से कोई नजदीकी ना रखता हो और उन का दुश्मन वो है जो अल्लाह की नाफरमानी करे चाहे नज़दीकी रखता हो !

(2) सबसे भारी गुनाह वो है जिसे करने वाला उसे नेकी समझे !

तालीम हज़रत मौला अली क.व.क.

(1) • जो लोग अपनी दुनिया संवारने के लिये दीन से हाथ उठा लेते है। तो खुदा वन्द तआला उस दुनिया के फायदे से कहीं ज्यादा, उनके लिये नुकसान के हालात पैदा कर देता है !

(2) बहुत से पढ़े लिखों को दीन से बेख़बरी तबाह

कर देती और जो इल्म उनके पास होता है उन्हे ज़रा भी फायदा नहीं पहुँचाता !

(3) ताज, – ताज खुदा की मिलकियत है और हमारे लिये ख़िदमत गुज़ारी का निशान है !

(4) आईना ठीक हो तो सूरत ठीक नज़र आती है इन्सान आईना है !

bLyke dh Qfj;kn

● ऐ मुसलमानों, इस्लाम रो रहा है, गुमराहों जालिमों, और मकर और फरेब के कपड़े पहनने वालों पर, और झुठा दावा करने वालों पर – सर पर हाथ रखें फरयाद कर रहा है – तू तो हर वक्त अल्लाह तआला की नेमतों से पेट भरता रहता है तू तो ना उसके मतलूब को पुरा करता है और ना तू उसका हक पूरा करता है तू उसके हुक्म को रद्द करता रहता है और तू उसके हदूद की हिफाज़त भी नहीं करता तुझ पर अफसोस है के तेरी शर्मगाह खुली है और तुझे हया नहीं है !

सरकार ग़ौस पाक (अल फतुह रब्बानी P-760-761)

● ऐ अल्लाह के बन्दे, जब तू अपना ईमान मज़बूत कर लेगा तो अल्लाह को जानने के दरवाज़े पर पहुँच जायेगा और इसके बाद इल्म की घाटी की तरफ और फिर फना की तरफ, जहाँ पहुँचकर तू अपने होने और बाकी सब से फना हो जायेगा इस के बाद वुजूदे खुदावन्दी की तरफ पहुँच जायेगा जहाँ वो ही होगा ना तू और ना मख़लूक, बस उस वक्त तेरा हर ग़म खत्म हो जायेगा और अल्लाह की हिफाजत तेरी ख़िदमत करेगी और अल्लाह की हिमायत तुझे मिलेगी, तौफीक मिलेगी, और फरिश्ते तेरे साथ साथ चलेंगे !

सरकार ग़ौस पाकः फयूज़े यज़दानी P-546

d lhnk; ग़ौf l ;k

[1] ● दुनिया के तमाम अकताब वा अब्दाल वा औलिया से मैंने कहा मेरी अज़्मत के आगे सर झुकाओ मेरे सिलसिले में दाखिल हो कर , तुम मेरे शागिर्द और मुरीद हो जाओ !

[2] अगर मैं अपने इश्क का कोई राज़ सागर में डाल दूँ तो तमाम सागर भी इसे बरदाश्त ना कर सकेंगे इन का पानी ज़मीन में धंस जायेगा और ये खुश्क हो जायेंगे !

[3] अगर मैं अपना कोई हाल पहाड़ पर जाहिर कर दूँ तो वो रेज़ा–रेज़ा हो जाये और रेत बन कर उड़ जाये !

गुलज़ारे कदीर P-282-283-285

d lhnk; ग़ौf l ;k

[1] ● मुझे खुदा की मोहब्बत ने विसाल के सागर पिलाये हैं और सैराब किया है लेकिन मैं अपने पिलाने वाले खुदा से यही कहता रहा के मुझ पर और नजरे करम फरमा और मुझे और पिला और सैराब कर !

[2] उस की वसीअ रहमत ने मुझे खूब साग़रे मआरफत पिलाए और मेरे सामने सागर पर सागर आते रहे जिसका नतीजा ये हुआ के इश्के इलाही के सुरूर में दुनिया भर के लोगों से मैं बुलन्द और मोहतरम हो गया !

गुलज़ारे कदीर P-287-289

f lyf l y vkj [kkudkg dh l gr j[kuk
ejhn dk ,u Qt g

1 • सबसे पहले तरीकत का इल्म हासिल कर फिर उसके बाद दरवाज़े पर आ क्योंकि अल्लाह के पास किताबों के माहिर और अक्ल से जाहिल लोगों की कोई जगह नहीं है !

तालीमे – तसव्वुफ

मैं एक छुपा खज़ाना था बस मैंने चाहा के पहचाना जाऊँ इसलिये बनने वाली चीजों को बनाया !

हदीसे कुदसी

और जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया हम पकड़ेंगे उन्हें, जहाँ से वो बेखबर होंगे बेशक हमारी तदबीर सही है !

तर्जुमा कलामे अल्लाह

• अपने फना होने के लिये घड़ी भर की सोच, अपनी हस्ती की फिकर में साल भर इबादत करने से बेहतर है।

सकीना तुल औलिया P-82-109

1 दरवेशी ना नमाज़ में है, ना रोज़े से और ना ही शब बेदारी से – दरवेशी ये है के किसी भी हाल में रंजीदा और परेशान ना हो और ये अगर तुम्हें हासिल हो जाये तो तुम्हारा अल्लाह से वस्ल (मिलना) हो जायेगा !

2 ए अल्लाह जब से मैंने तेरा दीदार किया है ना कोई काम होता है, ना रोज़ा रखता हूँ ना नमाज़ अदा करता हूँ जब तेरे साथ होता हूँ तो मेरा (झूठ होना) भी सरासर नमाज़ में होता है और जब तेरे बिना – बग़ैर होता हूँ तो मेरी नमाज़ भी झूठ बन कर रह जाती है !

सरकार अबु सईद बिन अबुल ख़ैर
सकीना तुल औलिया वरका–82

1. • इल्म वो इल्म है जो दुनिया वाले नहीं जानते, इबादत वो ही इबादत है जिसे आम लोग नहीं जानते, कोशिश वो कोशिश है जिस का कोशिश करने वालों को पता ही नहीं है !

2. हकीक़ी इल्म एक ऐसा बादल है जो कि रहमत और बरकत बरसाता है जो इस बादल को हासिल करने की कोशिश करता है वो तमाम गुनाहों से पाक हो जाता है !

3. दुनिया के आलिम हकीकत के इल्म से ग़ाफिल हैं इस वास्ते के उन्होंने दुनिया को अपना किबला बना रखा है !

बाबा फरीद मसुद गंजुल शकर : राहतुल कुलूब P-68

1. जब कोई इल्मे बातिन (अन्दर का इल्म) हासिल कर लेता है तो उसे सही और ग़लत में फर्क करने की तमीज़ आ जाती है और वो अमल करने के बाद अच्छा और बुरा और हराम और हलाल के फर्क को ठीक-ठीक जान लेता है !

2. हकीकत में आलिम वो है जिसे अल्लाह के नबी का इल्म हासिल हो और अल्लाह के नबी का इल्म आसमानी है जो अल्लाह की तरफ से वही के जरिये अल्लाह के पैगम्बर तक पहुँचा !

बाबा फरीद मसुद गंजुल शकर : राहतुल कुलूब P-69

1. • पहचान लेने में वो ही शख्स कामयाब होता है के जिस पर अल्लाह का राज़ खुल जाता है और जिस पर राज़ के राज़ का कोई परदा नहीं रहता बल्कि वो अपनी ज़ाहिरी आखों से अपने यार का मुआयना करता है !

2 ● अगर तू अपने लिये सुकून चाहता है तो नफ्से अम्मारा को जान ले, इससे तू खुदाबन्द तआला के नज़दीक हो जायेगा क्योंकि नफ्से अम्मारा को ठीक-ठाक जान लेना ही उससे बच जाना है !

हजरत सुलतान बाहू (एनूल फख़र)

● कुछ लोगों की ये हालत और आदत होती है के जो मुँह में आया कह दिया फिकर और ग़ौर का कोई काम नहीं, इसकी कोई फिकर ही नहीं के हमारी ज़बान से किस को कितनी तकलीफ पहुँच गयी, किसी का कितना बड़ा दिल दुखाकर अपने लिये दीनी और दुनियावी नुकसान का खुद ही सामान तैयार कर लिया वो लोग ये भी नहीं सोचते के हमारे किस काम और कौन से अलफाज़ों से दूसरों को तकलीफ हुई बस निरे जानवर, इन्सानों की शक्ल में, ये तो गाय-बैल जैसी जिन्दगी हुई !

इस्लाम और तसव्वुफ P-18

1 ● सूरज की कोई दलील नहीं होती उस का नूर जो उसका हिस्सा है वो ही उसकी दलील है !

2 क्या दुध पीने वाला बच्चा अपनी माँ से कहता है के "दलील ला के तेरे दुध से मुझे करार आयेगा" !

3 मौके, परेशानियाँ बनकर इन्सान को तजुर्बे कार बनाते है परेशानियाँ हमेशा वक्ती तौर पर होती है, यही कुदरत का कानून है !

तसव्वुफ की तालीम

● साँस जिन्दगी है ! साँस के जरिये ही रूह और जिस्म जुड़े हुए है साँस पुल है दोनों को जोड़ने का ! जो भी साँस को देखेगा वो साँस से अलग हो जायेगा वो जिस्म से अलग हो जायेगा और जो जिस्म से अलग हो जायेगा उस को ही हकीकत का नज़ारा होगा यही राज़ है सरकारे दो आलम के फरमान का के ''मौत से पहले मर जाओ'' तब दिखता है वो जो हकीकत की हकीकत और हर शै की हकीकत है यही तालीम है सरकार गरीब नवाज़ और उनके जाँ–नशीन सरकार कुतबुद्दीन बा–इख्त्यार काकी की ! शुक्रिया

आफताबे औलिया

1. ● खुदगर्ज इन्सान हमेशा अपने बारे में ही सोचता है हमेशा खुदगर्ज़ी की ही बात करता है उसकी अपनी खुदगर्ज़ी ही उसे अकेला कमजोर और मजबूर बना देती है !

2. सच्चा मुरीद उसे कहते हैं जो अपनी अक्ल और मन के बहानों से खुद को ही बचाने का तरीका जानता है !

3. नफ्से अम्मारा गुनाह के वक्त काफिर, शहवत के वक्त जानवर, और भूख के वक्त पागल कुत्ता बन जाता है !

तसव्वुफ की तालीम

1. ● जो नेक काम करेगा और मोमिन भी होगा तो उस की कोशिश बेकार नहीं जायेगी और हम इस को लिख रहे हैं – सुरह 21 – आयत 94

2. हम नेक काम करने वालों का बदला बेकार नहीं जाने देते – सुरह 12 – आयत 56

[3] कुछ आदमी कहते तो हैं के हम अल्लाह पर और आखरी दिन पर इमान ले आये, दरअसल ये इमान नहीं लाये ये अल्लाह और मोमिनों को धोखा देते हैं मगर दरअसल ये अपने आप को ही धोखा देते हैं खुद तो शऊर महसूस करने से भी महरूम हैं ! सुरह 2 – आयत 9

[4] जब इन से कहा जाता है के ज़मीन में फसाद मत फैलाओ तो कहते हैं हम तो सुधार कर रहे हैं !

सुरह 2 – आयत 11

सुरह फातिहा

[1] • सारी तारीफ अल्लाह ही के लिये हैं जो सारे जहानों का पालने वाला है जो बड़ा रहमान और रहीम है मालिक है कयामत के दिन का ! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं तू हमें सीधा रास्ता दिखा ! उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने नेमतें नाज़िल की ना कि उन का रास्ता जिन पर तूने गज़ब किया और ना ही गुमराहों का रास्ता ! आमीन

[2] ये हिदायत देने वाली है परहेज़गारों को !

तशरीह : तो हिदायत पाने के लिये परहेज़गारी अव्वल शर्त हुई – सुरह 2 आयत 2

तर्जुमा कलामे अल्लाह

1. ● ये वो ही है जो हिदायत के बदले गुमराही खरीदते है ना तो इन को तिजारत ने फायदा दिया और ना ही हिदायत मिली ! 2:16

2. जो मेरी हिदायत पर चलता रहेगा तो ना उसको कोई खौफ होगा और ना कोई गम वा रंज ! 2:38

3. और पूरा करो वो अहद जो तुमने मुझ से किया है तो मै तुम से अहद पूरा करूँ ! 2:40

4. अल्लाह तुम को अपनी निशानियाँ दिखाता है ताकि तुम्हें अक्ल आ जाये ! 2:73

तर्जुमा कलामे अल्लाह

1. बिना शक यहूदी, नसारा (इसाई) और फिरका साबेइन (बार-बार गिरोह बदलने वाला-सितारा परस्त) में से जो भी अल्लाह पर हकीकी इमान ले आया और नेक काम करता हो तो वो अपने परवरदिगार के यहाँ अच्छे बदले का हकदार है उनके लिये ना कोई खौफ होगा ना रंज वा ग़म ! 2:62

2. अल्लाह तुम को अपनी निशानियाँ दिखाता है ताकि तुम्हें अक्ल आ जाये ! 2:73

1 • आलमे ग़ैब का अबर और पानी दूसरा है आसमान और आफताब दूसरा है।

2 वो सिर्फ अल्लाह के ख़ास लोगों पर ज़ाहिर होता है बाकी लोग इस नई मख़्लूक से शुब्हा में हैं।

3 इसी तरह जाड़ा और हवा सुरज़ जुदागाना समझ और उसूल को समझ ले।

4 जो पत्थर था वाकिफ ना हुआ उस जान पर अफसोस जो पहचानने वाली ना बनी।

5 अगर तू बातिन की आंख खोल ले बहुत जल्द पसन्दीदा सुरमा हासिल कर ले। मसनवी सरकार रूमी Vol.1 (P-223-224)

1 अच्छे आमाल के बिना ईमान का दावा करना झूठ है – फसक है – निफाक है और अपने आप को धोखा देना है ठीक इसी तरह अच्छे आमाल, के बिना हकीकी ईमान मुमकिन ही नहीं !

2 अगर तुम दुई के कायल हो और हक और खल्क को अलग समझोगे तो तुम शिर्क फिल वुजूद करोगे।

3 ज़ाहिरी इल्म, जाहिर की रोशनी है और अन्दर का इल्म, अन्दर की रोशनी है अन्दर का इल्म तेरे और तेरे बनाने वाले के दरम्यान एक नूर है ! फ़्युजे यज़दानी P-124

(1) • वाकफियत (वक्फा) मआरफत की रूह है जिस तरह मआरफत हयात की रूह है !

(2) वक्फ अल्लाह तआला की हुजूरी है मआरफत उस का कलाम है इल्म उसके लिये हिजाब है बस वक्फा मआरफत पर और मआरफत इल्म पर मुकद्दम है !

(3) हर वाकिफ आरिफ भी होता है लेकिन हर आरिफ, वाकिफ नहीं होता वाकिफ का दिल खुदा के कब्जे में होता है और आरिफ का दिल उस की मआरफत के कब्जे में होता है !

(1) • आरिफ साहिबे दिल होता है मगर वाकिफ साहिबे हक होता है जब बला का नुजूल होता है तो वाकिफ को उबूर कर जाती है और इसी तरह आलिम के इल्म पर नाजिल हो जाती है !

(2) आलिम नफ्स का गुलाम होता है आरिफ (गुलामी से निज़ात तलब) होता है !

(3) आरिफ आलिम और मालूम दोनों होता है जबकि वाकिफ सिर्फ आलिम होता है मालूम नहीं होता आलिम सिर्फ अपने इल्म को देखता है लेकिन मआरफत को नहीं देख सकता !

1 • आरिफ अपनी मआरफत का तो मुशाहेदा कर सकता है मगर खुदा का मुशाहेदा नहीं कर सकता – वाकिफ खुदा का मुशाहेदा करता है और मा – सिवा –अल्लाह का मुशाहेदा नहीं करता – आलिम अपने इल्म का जिक्र करता है आरिफ अपनी मआरफत का जिक्र करता है !

2 वाकिफ वो भी देखता है जो आरिफ देखता है आरिफ वो भी देखता है जो आलिम देखता है जब एक इन्सान खुदा की ज़ात में वाकिफ हो जाता है तो खुदा इल्म – हिक्म और मआरफत तीनों ही नेमतें अता कर देता है !

1 • आरिफ अपने इल्म की इन्तहा को देख सकता है इस का इल्म महदूद है लेकिन वाकिफ के इल्म की कोई इन्तहा या हद नहीं होती !

2 इल्म वो स्तून है जो मआरफत के सहारे कायम है और मआरफत वो स्तून है जो मुशाहेदे की वजह से कायम है !

3 मआरफत वो आग है जो इश्क को जला देती है और वक्फा वो आग है जो मआरफत को भी भस्म कर देता है । जब सालिक खुदा का मुशाहेदा करता है तो इल्म वा मआरफत दोनों रूख़सत हो जाते हैं!

1 • ए ईमान वालों, बहुत सी बदगुमानी से बचा रहा करो क्योंकि बाज़ गुमान गुनाह होते हैं !

[2] खुदा वन्द तआला ने मुस्लिम (जो हकीकत में मुसल्लम + इमान हो) का खुन बहाने, उस की इज्जत पर हमला वर होने, और उसके मुताल्लिक बुरा ख्याल रखने को हराम करार दिया है !

हदीस शरीफ

[3] किसी को परखे बिना उस पर भरोसा कर लेना कमज़ोरी की दलील है !

कौलः हजरत अली क.व.क.

[1] • जिस तरह लोग अपनी भलाई के लिये जल्दी करते हैं उसी तरह अगर खुदा उनको उनके गुनाहों की सज़ा देने में जल्दी करता तो उस सज़ा का मुकर्रर वक्त कब का आ चुका होता !

[2] इन्सान के दिल में दो तरह के ख्यालात आते है एक रहमान की तरफ से – वो दिल में नेकी का इरादा और हक की तस्दीक का जज्बा पैदा करता है और दुसरे ख्यालात शैतान की तरफ से आते है जो इन्सान के दिल में गुनाह, शर और हक को झुठलाने पर आमादा करते है !

सहीफातुल कामला

[1] • ऐ अज़ीज, ख़्वाजा हो या सुलतान, गदा हो या बादशाह, गुलाम हो या आका, फकीह हो या सूफी अगर ये दोनों सिफ्तें या तख़लिया (अकेला) रहना और तजलिया (फुल चढ़ाना – आशकार कर देना) तुम में है तो दोनों जहाँ की नेकबख्ती तुम्हारे नसीब में है । याद रखो के पीर की याद भी जरूरी है जो यादे हक में मौइन होती है बल्कि बगैर यादे पीर के यादे हक हासिल ही नहीं होती क्योंकि यादे पीर

एक सीढ़ी है जो मकसद यानि यादे हक तक पहुँचाती है जिस शख्स में इन दो सिफ्तों में से कोई सिफ्त नहीं है उस की कोई कदरो कीमत नहीं !

फवायद हज़रत बन्द नवाज़ गैसू दराज़ कु.सि.अ.

● आरिफ कामिल की हालत यादे इलाही से भी गुजर जाती है यकीन जानो जब तक सालिक गैरूल्लाह का वुजूद तक भी अपने दिल से ना निकाल दे तब तक एक कदम भी मंजिलें इरफान की राह पर नहीं रख सकता और ना ही आरिफ कामिल बन सकता है क्योंकि याद भी एक किस्म की दुई है और दुई आरिफों के नज़दीक एन कुफ्र है ये है कलमा तय्यबा की हकीकत !

सरकार गरीब नवाज़-असरारे हकीकी P-10

● वो इल्म जिसकी बदौलत सालिक खुदा का मुशाहेदा कर सके वो इल्म सरासर सुलूक (राहे खुदा) है लेकिन वो इल्म जिस से वो खुदा को ना देख सके बल्कि अपने को देखे सरासर हिजाब है जब सूफी खुदा का मुशाहेदा करता है तो इल्म और मआरफत दोनों बेकार हो जाते हैं अगर सूफी खुदा को ना देख सके तो उसकी हिकमत , अक्ल और इल्म सब बेकार है !

तारीखे तसव्वुफ – P-270

dne c<k d re py exj ; , d d l j jgh
dne tjk fey ugh vxj dne fey jg rk
pkg lLr pky Hkh gk j lkb gkxh , d fnu

पैकरें हकं वा सदाकत आप पर लाखों सलाम
ए शहीदे राहे उल्फत आप पर लाखों सलाम
करबला में आपने ए फातमा के नूरे एन
कर दिया नामे शुजाअत आप पर लाखों सलाम
सुलह बातिल से ना की सर, राहे हक में दे दिया
ए निशाने इस्तकामत आप पर लाखों सलाम
फख्र करता है जमाना आप के किरदार पर
पैकरें अखलाके रहमत आप पर लाखों सलाम
पेश करता है ये सलाम अपना ये ''काविश'' आपको
फख्रे दीं ए फख्रे मिल्लत आप पर लाखों सलाम

तालीमात हज़रत अली क.व.क

1. बेवकूफ का दिल उसके मुँह में है और अक्लमन्द की जबान उस के दिल में है

2. अल्लाह ने तुम्हारी बीमारियों और तुम्हारे मर्ज को और तुम्हारे गुनाहों को दूर करने का जरिया बनाया है क्योंकि खुद बीमारी कोई सवाब नहीं है एवज़ तो है अज़र नहीं है ।

3. वो गुनाह जिसका तुम्हें रंज हो उस नेकी से कही अच्छा है जो तुम्हें खुद पसन्द बना दे ।

• अलफाज़ एक हिजाब है और इल्म भी एक अलफाज़ ही है जब तक (सालिक) (सूफी-मुरीद) अलफाज़ों को पीछे ना छोड़ दे वो तरक्की नहीं कर सकता क्योंकि अलफाज़ों में शक है अलफाज़ों पर इबलीस को फख्र है अलफाज़ खुदा को नहीं जान सकता अलफाज़ जब अपने आप को नहीं जान सकता तो खुदा को कैसे जानेगा अलफाज़ को शर्फे हुज़ूर हासिल नहीं हो सकता अहले हुज़ूर अलफाज़ों से बालातर होते हैं बल्कि अलफाज़ों को मिटा देते हैं जब तक मुरीद अलफाज़ों से दूर ना हो जाये खुद से दूर नहीं हो सकता और जब तक खुद से अलग ना हो जाये खुदा को नहीं पा सकता !

• सालिक (मुरीद) को लाज़िम है के वो अपना नाम खुदा के हवाले कर दे और अपने आप और खुदा के बीच किसी नाम को ना आने दे क्योंकि ऐ मुरीद तेरा इल्म ही तेरे लिये बड़ा परदा है और तेरे असमॉ ही तेरे हक में हिजाबे अकबर है ऐ मुरीद जब खुदा तुझे नाम और अलफाज़ों की दुनिया से बाहर कर देगा तो तुझे अपना हुक्म (इक्तेदार) अता फरमाता है याद रख खुदा से जुदा हो कर किसी भी नाम में कोई इख्त्यार या इकतेदार नहीं है !

1 खुदा ने मुझ से कहा – मेरे चेहरे की तरफ देख – बस मैंने देखा – उस ने कहा मेरा गैर मौजूद नहीं है – बस मैंने कहा – तेरा गैर मौजूद ही नहीं है ।

(2) गैरूल्लाह को देखना गोया उस की बंदगी करना है जो अमल खुदा के लिये महज़ उसकी ख़ातिर किया जाये वो वाकई खुदा के लिये होता है !

(3) हर शै की गुफ्तगु बा वक्ते गुफ्तगु उस के लिये हिजाब है !

तारीखे तसव्वुफ – P-274-276

(1) • जिस ने मेरे वसीले से वकूफ हासिल किया – मैं उसे ज़ीनत का लिबास पहना देता हूँ जिस के बाद किसी शै में ज़ीनत नजर नहीं आती जो तुझ से वकूफ

(कबा) हासिल कर लेता है वो इस कदर रम्ज़ में हो जाता है के इसे किसी ज़ीनत की जरूरत नहीं रहती !

(2) वक्फे के लिये अपने आप को पाक कर ले वरना वक्फा तुझे अपने से दूर कर देगा जो ताहिर नहीं है वो मेरी बारगाह में बार नहीं पा सकता !

सरकार इमाम नफरी कु.सि.अ.

(1) • आलिम और आरिफ में ये फर्क है के आलिम इस दुनिया के ज़ाहिर से वाकिफ होता है लेकिन आरिफ इस दुनिया की हकीकत जानता है और ये जान जाता है के ये दुनिया ख्वाब है।

(2) जो इन्सान अल्लाह का हुक्म ना मानने से डरेगा तो अल्लाह उसके लिये मुसीबत से निकलने का रास्ता बना देगा और उस की परेशानी दूर कर देगा और उसे एसी जगह से रिज़्क अता करेगा जहाँ उस का गुमान भी ना पहुँच सके – आयत कलामे अल्लाह –

तारीखे तसव्वुफ – P-141-143

(1) • इन्सान के जिस्म में गोश्त का एक टुकड़ा है अगर वो अच्छा है तो तमाम बदन अच्छा है और अगर वो खराब है तो तमाम बदन खराब है और वो दिल है !

(2) अगर तू फकर चाहता है तो इस का मिलना कामिल सूफियों की सोहबत पर है ना तेरी ज़ुबान इसमें काम आयेगी ना ही तेरे हाथ !

(3) मौलवी जब तक मौलाना रूम ना बन सका जब तक शम्स तबरेज़ी का गुलाम ना बना !

(4) एक अरसे तक औलिया की सोहबत में रहना सौ साल की खालिस इबादत से बेहतर है !

म्यार-अल-सुलूक - P-24-29

(1) • हज़रत अबु हुरैरा से रिवायत है के मुझको सरकारे दो आलम से दो इल्म पहुँचे है एक तो ये इल्म जो तुम को पहुँचाया और एक दूसरा इल्म है अगर ज़ाहिर करूँ इस को तो ख़ल्क मेरा हलक काट डाले - इस हदीस शरीफ से इल्मे ज़ाहिर और इल्मे बातिन का अलग - अलग होना मालूम हो गया !

(2) गुलामे मोहब्बत खुदा हो और अपनी बुजुर्गी ज़ात को छोड़ दे ऐ जामी क्योंकि राहे खुदा में हसब-नसब कोई चीज़ नहीं है !

(3) सीने से सीना इस तरह मुनव्वर हो जाता है के दुसरे (आज़ॉ) हिस्से दंग रह जाते है !

म्यार-अल-सुलूक - P-30-31

(1) • अपने नफ्स और दूसरों पर जुल्म ना कर क्योंकि जुल्म दुनिया और आखरत में अन्धेरों का मजमुआ है जुल्म दिल को तारीक और चेहरा और नामा-ए-आमाल को स्याह कर देता है इसलिये ना तू जुल्म कर और ना ही किसी ज़ालिम की मदद कर !

(2) तू इस बात की कोशिश कर के तू ना ज़ालिम बने ना मजलूम !

(3) बुलन्दी और इज्ज्त हासिल करने का सबब - सबर करना है !

सरकार ग़ौस पाक - अल फतूह - रब्बानी P-296-297

(1) • ऐ मुनाफिक तू कब तक रियाकारी और निफाक करता रहेगा जिस के लिये मुनाफिक बनता है उस से तुझ को क्या फायदा मिलेगा तुझ पर अफसोस है के तू अल्लाह तआला से शर्म नहीं करता और उससे मिलने को सच्चा नहीं मानता जो के अनकरीब होने वाली बात है तू उस को धोखा भी देता है और नफा भी हासिल करना चाहता है !

(2) ऐ अल्लाह - हम तुझ से तेरे साथ सबर करने का सवाल करते हैं और तुझ से परहेज़गार गारी और किफायत और हर चीज़ से फरागत का सवाल करते हैं और तेरे साथ मशगूल रहने और जो हमारे और तेरे दरम्यान परदे हैं उठ जाने कर सवाल करते हैं !

सरकार ग़ौस पाक-अल फतूह-रब्बानी

1 • जब कोई शख्स अपने इल्म पर अमल करता है तो अल्लाह तआला उस को एसे उलूम का वारिस बना देता है जो इस को मालूम ही नहीं होते जब तू अमल करे और देखे के तेरा दिल अल्लाह तआला का कुर्ब नहीं पाता और ना अपने अन्दर मिठास पाता है तो तू ये जान ले के तू अमल ही नहीं करता बल्कि तेरे अन्दर निफाक रिया और खुदपसन्दी है इन्हें छोड़ दे और अख़लास को लाज़िम पकड़ वरना अपने आप को बेकार की मेहनत में ना डाल अकेले और भीड़ में मराकबा कर !

2 या अल्लाह – तू हमें अपनी अताअत में जिन्दा रखना और अपनी ताबेदारी के साथ हमारा खात्मा फरमा !

1 • सबसे खौफनाक चीज़ जिस से मैं अपनी उम्मत पर खौफ करता हूँ मुनाफिक जबान तरार है ! हदीस शरीफ

2 जब अल्लाह के बारे में तेरी सच्चाई और उसकी ज़ात के लिये तेरा अखलास और उसके सामने तेरी हुजूरी सही हो जायेगी बस वो तुझे इस मगज़ से खाना खिलायेगा और तुझे मगज़ के मगज़ और बातिन के बातिन और हकीकत की हकीकत पर खबरदार कर देगा, कोशिश का तआल्लुक दिल से होता है ना कि जिस्म से – रूगरदानी (ना फरमानी) अन्दर से होती है ना कि ज़ाहिर से – नज़र मायनों पर होती है ना कि ज़ाहिर पर – देखना तो बस अल्लाह की ज़ात का है !

1 ● जहाँ तक हो सके ए अज़ीज, खिदमत कर ताकि मुरादें पूरी हों !

2 जो ख़ासाने हक की खिदमत करता है खुदा तआला उस को साहबे इज्ज़त और दौलत बना देता है !

3 जो शख्स ख़िदमत के लिये अपने आप को तैयार कर लेता है वो मआरफत के दरख्त से फल हासिल करता है !

4 जो बन्दा ख़ासाने खुदा की खिदमत करता है तो इस की खिदमत इसको सरबुलन्द करती है ।

हजरत फरीदुद्दीन अत्तार Ref. – म्यार उल सुलूक

● एक दिन सरकार अब्दुल्ला शिबली कु.सि.अ. ने सरकार मन्सुर हल्लाज से पुछा ''या शैख अल्लाह की तरफ जाने का रास्ता कैसा है यानि इसकी कैफियत क्या है ?'' जवाब मिला ये रास्ता दो कदमों का है तुम सिर्फ दो कदम चल कर उस तक पहुँच सकते हो – पहला कदम ये है के दुनिया को उसके आशिकों के मुँह पर मारो और दूसरा कदम ये है के आखरत को उसके चाहने वालों के हवाले कर दो – यानि आख़रत से भी बेनियाज़ हो जाओ ! तारीखे तसव्वुफ–P-359

● बस ना देखा मूसा ने अपने रब को बल्कि अल्लाह ने अल्लाह को देखा – और नहीं था वहाँ मगर वो ही चीज़ जो मूसा के नाम से मोअतबर थी इन्हीं मायनों की तरफ अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया है इस कौल में के ए मुसा तू मुझे हरगिज नहीं देख सकता इसलिए के जब तक तू मौजूद है मैं तुझ से मफकूद हूँ और जब तू मुझे पायेगा तो तू मफकूद हो जायेगा ! इन्साने काम्मिल–P-257

● हज़रत अली मुरतज़ा फरमाते हैं के अगर मैं गायब होता हूँ तो वो ज़ाहिर हो जाता है और अगर वो ज़ाहिर होता है तो वो मुझे गायब कर देता है इस की तरफ इशारा है जो मूसा अ.स. को उस ने कहा ''ए मूसा अपने नफ्स से जुदा हो जा और आ जा ये जवाब मूसा अ.स. की इस दुआ का था के ''ए मेरे रब मैं किस तरह तेरे तक पहुँच सकता हूँ !

इन्साने कामिल – P-257

1 ● सच्चा मुरीद वो है जो पीर और बारगाहे पीर यानि ख़ानकाह शरीफ को हर बुराई और कमी से पाक समझे !

2 जिस का पीर नहीं–उसका दीन ही नहीं है !

3 मुरीद की कामयाबी उस के पीर की इनायत– और नज़रे करम पर मौकूफ है और पीर की नज़रे करम और इनायत – मुरीद के अदब – इल्म – अमल – शऊर – तमीज़ – अकीदत – भरोसे पर मौकूफ है !

4 जिस मुरीद को अपने पर, से ज्यादा भरोसा और अकीदत अपने पीर पर होती है उस की हाज़री और ग़ैर हाज़री में भी पीर उसकी हिफाज़त करता है !

तालीमे तसव्वुफ

मरकज़े तसव्वुफ

बोलता था नार में और नूर में
या अनल हक बोलता मन्सूर में
बोलता ही अहमदे मुख़्तार था
बोलता ही हैदरे कर्रार था
बोलता को बोलते की चाह है
बोलते में देखो तो अल्लाह है
बोलता गर जिस्म से जाता रहा
फिर किसी बोल से क्या नाता रहा
बोलते से बोलता पैदा हुआ
बोलते पर बोलता शैदा हुआ
बोलता ही बोलते के साथ है
बोलता ना हो तो बाजी मात है

1 ● नफ्स सिर्रे इलाही (अल्लाह का राज़ है) और इस को इस से बज़ाते खुद ही लज्ज़त है !

2 वो नूर वस्फ – रबूबियत से पैदा किया गया है इसी वास्ते इस के लिये रबुबियत है

3 वो पूरी बड़ाई और तकब्बुर के साथ पैदा हुआ है क्योंकि वो उसके अख़लाक वा सिफात है !

4 वो रोक देने से राज़ी नहीं होता इसके लिये इस का मकान उपर है और वहाँ इसके लिये सबात व कयाम है !

● कुछ लोग शैख कामिल के हाथ पर बैत होने के बाद भी फैज़-बरकत-रहमत से महरूम रहते है उसकी कुछ वुजूहात है !

1. ये अदब नहीं सीख पाते - बेहतर है के ये सबसे पहले हकीकी अदब सीखें !
2. अपनी अक्ल ज्यादा चलाते है अपनी अक्ल पर मुर्शिद का हुक्म ग़ालिब नहीं करते !
3. इनकी तौबा सच्ची नहीं होती !
4. इनकी तलब और लगन सच्ची नहीं होती और ये गाफिल मिजाज़ होते है !
5. ये हकीकत अख़लास से खाली होते है और करने के मामले में इनकी हिम्मत कमज़ोर होती है !

तालीम मरकज़े तसव्वुफ - सआदत अल एबाद P-206

1. ● जो कम हो और काफी हो वो उस से बेहतर है जो ग़फलत में डाले !
2. सबर करने वाले सूफी अल्लाह की मजलिस में है !
3. मुरीद का पहला मकाम ये है के अपना इरादा छोड़ दे और अल्लाह के इरादे के साथ हो जाये !
4. सूफी ज़मीन की तरह होता है जिस पर गन्दगी डाली जाती है और उस से हर एक को फायदा होता है !
5. एक सूफी को मुरीद को लाज़िम है के वो अपने मुर्शिद की मौजूदगी में - मुर्शिद के अलावा किसी और तरफ तवज्जोह ना करे !

[1] • दूरी के खोट के निकलकर ''करीब'' जैसे साफ मकाम पर आने वाले को सूफी कहते हैं !

[2] दिल में किसी भी चीज़ या फिकर का ग़म रखे बिना अल्लाह की तरफ पूरा ध्यान लगा देने वाले को सूफी कहते हैं !

[3] सूफी अल्लाह के सामने गोदी में बच्चे की तरह होता है !

[4] अदब व आदाब का हर वक्त ख़्याल रखने वाला सूफी कहलाता है !

[5] सूफी का काम – हर नागवारी को बरदाश्त करना है !

मरकज़े तसव्वुफ

• नमाज़ – रोज़ा – हज – जकात – ख़तना – दाड़ी – पोशाक – पगड़ी – ये सब रस्म और रिवाज़ हैं जो सरकारे दो आलम से पहले भी थे जिसकी पाबन्दी करते हुए – इन्सानियत गुमराही में पहुँच जाती है ! और इन रस्मों और रिवाजों पर इस्लाम मुनहसर (निर्भर DEPEND) नहीं है और ना ही रस्म वा रिवाज़ इन्सानियत को कायम रखने में मदद गार साबित होते हैं इसलिये हर मुसलमान पर ये फर्ज है के वो इस बात को जानने और समझने की कोशिश करे के हकीकी इस्लाम क्या है और कौन–कौन से रस्मो रिवाज इस्लाम के नाम पर इस्लाम में दाखिल हो गये हैं !

मरकज़े तसव्वुफ

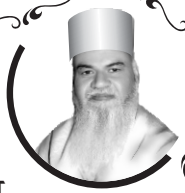

● सरकारे दो आलम ने फरमाया मोमिन वो नहीं जो मस्जिदों में जमा होते हैं और सिर्फ जुबान से कलमा पढ़ते हैं ऐ उमर ऐसे कलमा पढ़ने वाले जो कि कलमे की हकीकत को नहीं जानते और कलमे के असली मायने और हकीकत से ही बेख़बर हैं वो मोमिन नहीं मुनाफिक (दिल में कुछ और बाहर और कुछ) फर्क रखने वाले हैं क्योंकि जुबान से तो ये कलमे का इकरार करते हैं लेकिन कलमे के असली मायने और हकीकत को नहीं जानते इन्हें खाक भी पता नहीं के कलमे का असली मकसद और तकाज़ा क्या है ? कलमा क्या चीज़ है ?

असरारे हकीकी – मरकज़े तसव्वुफ

● सरकारे दो आलम ने फरमाया – ऐ उमर जिस शख्स को अल्लाह तआला की पहचान हासिल हो जाती है उस को मुँह से अल्लाह–अल्लाह कहने और दोहराने की जरूरत नहीं रहती और जो मुँह से अल्लाह कहता है समझ लो उसे अभी अल्लाह की पहचान नहीं हुई है !

असरारे हकीकी – मरकज़े तसव्वुफ

● सबसे बड़ी बहादुरी ये है के इन्सान अपनी कमियाँ खुद ही देखे, गौर से देखे के मेरे अन्दर क्या कमियाँ हैं उन्हें समझे और समझ कर दूर करे यही बड़ी कामयाबी है और अपनी कमियाँ और नुक्स देख कर उन्हें दूर करने के बाद इन्सान की जिंदगी में सुकून और खुशियाँ ही बाकी रह जाती है !

मरकज़े तसव्वुफ

● हजरत उमर ने अर्ज किया के हज़रत ये कैसी अल्लाह की पहचान हुई के इन्सान अपने मालिक का नाम ही ना ले और उसकी याद को छोड़ दे ? सरकारे दो आलम ने जवाब दिया के अल्लाह ने अपने कलाम में फरमाया ''मै तुम्हारे साथ हूँ जहाँ कहीं भी तुम हो '' बस ऐ उमर जो हर वक्त हमारे साथ हो उस का याद करना क्यों जरूरी है हज़रत उमर ने अर्ज़ किया अल्लाह तआला हमारे साथ कहाँ है ? सरकारे दो आलम ने जवाब फरमाया '' इन्सान के दिल में '' !

हमें ये जान लेना चाहिये समझ लेना चाहिये के अगर हमें जिंदगी में सुकून – तरक्की – रहमत और बरकत चाहिये तो उसका एक ही तरीका है कम बोलना – मीठा बोलना – सिर्फ भला करने के लिये बोलना ! मरकज़े तसव्वुफ

● जो कम बोला – मीठा बोला – सोच समझकर बोला उसने सब तकलीफों से आजादी पाई ! मरकज़े तसव्वुफ

● ये समझ लेना चाहिये के हकीकत के रोज़े की शुरूआत ये है के इन्सान को अपने अन्दर की काबलियत और कैफियत के मुताबिक अल्लाह तआला की पहचान हासिल कर लेनी चाहिये और रोज़े का खोलना भी यही है के उसे अल्लाह तआला का दीदार हासिल हो सरकारे दो आलम ने फरमाया ''अल्लाह तआला के दीदार और मुलाकात के अलावा मुझे किसी भी और चीज़ से मतलब नहीं है हकीकत के रोज़े का खोलना (इफ्तार) सिर्फ अल्लाह तआला का दीदार है ! असरारे हकीकी

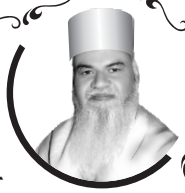

● ऐ उमर – तमाम आम लोग रोज़ा रखते हैं के जिसमें खाने–पीने और औरत से मिलने से बचना होता है ये हकीकत का रोज़ा ना हो कर, नकली रोज़ा है इसके ये मायने हैं के अल्लाह तआला के राज़ इनको नहीं मिल पाते । वो बाहरी दुनिया की खूबसूरती में घिरे हुए हैं और हकीकत का इन्हें कुछ पता नहीं और इस नकली रोज़ें में अल्लाह के सिवा को नहीं छोड़ा जाता और इन्सान में हर किस्म का डर और ख्वाहिश रहती है एसे रोज़ा रखने वालों का बोलना और करना सब ''अल्लाह के सिवा'' है ! इस ज़ाहिरी और नकली रोज़े से कोई फायदा नहीं होता !

– असरारे हकीकी – मरकज़े तसव्वुफ

● एक इन्सान अपने कामों से, बोलने से – देखने से – बात करने से, दूसरे इन्सानों पर अच्छा या बुरा असर डाल सकता है जो इन्सान इस बात को समझकर इस पर अमल करता है वो दूसरों के लिये एक अच्छी मिसाल कायम करता है कोई कुछ भी कहता रहे अच्छा काम कर के आप दूसरों के लिये मिसाल बनते हैं लोग आप से सीखते हैं और आप का अच्छा असर उन पर पड़ता है ! पाक और बेहतर सुकून भरी जिंदगी आप से ये उम्मीद लगाती है के अच्छी मिसाल कायम करें जब आप खुद को बदलकर – जाग कर अच्छे काम करते हैं तो जिंदगी भी बदलकर आपको खुशियाँ और सुकून देने लगती हैं !

– असरारे हकीकी

● आदम पर उसने अपनी जानिब (तरफ) से नामों का इज़हार किया – (ज़ाहिर कर दिये)

● पानी चाहे नहर से ले – या मटके से – मटके की मदद भी तो नहर से है – रोशनी चाहे चाँद से तलब कर या सूरज से – ऐ बेटा चाँद की रोशनी भी सूरज से है – जल्द रोशनी हासिल कर ले – पैगम्बर ने फरमाया मेरे सहाबा सितारे हैं उसका नूर आदम से ले या उस से ले – शराब चाहे मटके से ले – या सकोरे से! ये सकोरा – मटके से सख्त जुड़ा हुआ है ऐ नेकबख्त – तेरी तरह वो सकोरा बे–नियाज़ नहीं है !

MASNAVI VOL-1-Page-214

(1) ● तुम्हारी रब की तुम्हारे जमाने में खुशबुँए हैं – आगाह – उन से वाबिस्ता हो जाओ (मिल जाओ)

हदीस शरीफ – मसनवी – 1-P-215

(2) नेक बात कहो या खामोश रहो – हदीस

(3) सब से अच्छी इबादत जो सबसे आसान है वो चुप रहना है !

(4) दिल की लज्ज़त अल्लाह तआला को जान लेने, पहचान लेने में है !

(5) जब तुम अपने अन्दर सख्त दिली बुरे ख्याल बदन में सुस्ती और रिज़्क में कमी पाओ तो समझ लो के ये बेकार और ज्यादा बोलने का नतीजा है !

● बदन एक शहर है, हाथ–पाँव पेशेवर ख्वाहिश इस शहर के अमल करने वाले, गुस्सा कोतवाल – दिल बादशाह – अक्ल वज़ीर है – बादशाह को शहर का इंतजाम चलाने के लिये इन सब की जरूरत है लेकिन ख्वाहिश झुठी और ज्यादती करने वाली है जो वज़ीर (अक्ल) कहती है उसके खिलाफ ही कहती है और चाहती है के सल्तनत का सारा माल खुद ही ले ले – और कोतवाल (गुस्सा) शरीर है, मार डालना जख्मी करना उसे अच्छा लगता है अब अगर बादशाह (दिल) हाथ–पाँव ख्वाहिश – गुस्से को अक्ल (वज़ीर) के हुक्म के नीचे कर दे – और अक्ल के ख़िलाफ – इनकी शिकायत को ना सुने तो शहर ठीक चलेगा –

अब तो हाथ–पाँव – कोतवाल – ख्वाहिश में मिलकर वज़ीर और बादशाह को कैद में ले लिया है और अपना गुलाम बना कर मनमानी कर रहे हैं !

● ऐ प्यारे – अब तूने जान लिया के ख्वाहिश और गुस्से को – खाने–पीने और बदन की हिफाज़त के लिये पैदा किया है तो ये दोनों बदन के खिदमत गार हैं और खाना – पीना बदन की खुराक है और बदन को हवास का बोझ उठाने के लिये पैदा किया तो बदन, हवास का ख़ादिम है और हवास को अक्ल के वास्ते जासूसी करने के लिये पैदा किया गया और अक्ल को दिल के वास्ते पैदा किया गया के दिल के लिये रोशनी बने और दिल इसलिये बना के अल्लाह तआला की खुबसूरती देख सके यही इस आयत का मकसद है ''हमने जिन्नों और इन्सानों को अपनी इबादत (पहचान के लिये) ही पैदा किया !''

● जब इन्सान ने अपने पैदा होने से खुदा की हस्ती को जाना और जिस्म के हिस्सों से हक तआला के कमाले कुदरत को पहचाना और हाथ–पाँव के कामों से खुदा के कमाल को देखा, और जिन चीजों से वो पूरा होता है उन्हें अपने साथ और मौजूद देखने से उसने रहमते हक को देखा तो नफ्स की पहचान की, जो मआरफते हक की चाबी है ! इसीलिये हदीस शरीफ है'' जिस ने अपने नफ्स को जाना उसने अपने रब को जाना '' –

vDy dh vknr 'kd g
fny dh vknr vdhnr g

● जो इन्सान भी नेकी की कोशिश करेगा और जिंदगी का हकीकत का मकसद पाने की कोशिश करेगा तो वो जरूर मुश्किलों में डाला जायेगा और जो इंसान इन पर इन मुश्किलों पर सबर ना कर सका इन्हें बरदाश्त ना कर सका वो रास्ते में ही रह जायेगा मंजिल तक नहीं पहुँच पायेगा !

इन्सानों में सबसे ज्यादा नबियों की आजमाइश होती है फिर वलियों की आजमाइश होती है – फिर जो उनके करीब हैं फिर जो उनके करीब हैं !

[1] ● इन्सान खुद को बदल सकता है और अपनी तकदीर का मालिक बन सकता है ये हर उस इन्सान का तजुर्बा है जो अच्छे ख्यालात की ताकत के बारे में पूरा–पूरा होशियार है !

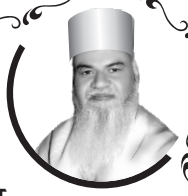

2 अपनी ज़बान पर निगाह रखने से इन्सान दुनिया की आफतों से बचा रहता है !

3 अपनी ज़बान को बे-लगाम ना छोड़ो वरना तुम किसी ना किसी परेशानी और फसाद में ही पड़े रहोगे !

- ऐ अल्लाह के बन्दे - तू आखरत से बिल्कुल खाली है और दुनिया से भरा हुआ है और तेरी ये हालत के, अच्छे और अल्लाह के वलियों से अलग रहना और इन से मेल-जोल छोड़ देना और अपनी राय पर भरोसा कर के बे परवाह हो जाना मुझे गम में डालता रहता है क्या तूने ये जाना और पहचाना के जो कोई अपनी राय को काफी समझ कर उस पर भरोसा करता है वो गुमराह हो जाता है कोई आलिम ऐसा नहीं है के जो इल्म के ज्यादा होने का मोहताज ना हो और कोई इल्म वाला ऐसा नहीं है जिस से ज्यादा इल्म वाला कोई दुसरा ना हो ! फयूजे यज़दानी P-482

- अल्लाह वालों के पास बैठना एक नेमत है और बुरे लोगों के पास बैठना जो कि झूठे और दिल में फर्क रखने वाले हैं उनके पास बैठना एक अज़ाब है अल्लाह के लिये अपने दिल की निगरानी कर और अपने नफ्स से उन चीजों को चाह जो कि अल्लाह के हक और उसकी मखलूक के हक हैं इन को पूरा करना जरूरी समझ अगर तू दुनिया और आख़रत की भलाई चाहता है तो तू इस बात का ख्याल रख के अल्लाह तआला को तेरे बारे में सब पता है ! फयूजे यज़दानी

● मेरी बातों को मान, मुझसे दुशमनी ना कर मेरे और तेरे दरम्यान दुश्मनी की वजह क्या है ? मैं तेरी इबादत और तेरी गंदगी को दूर करने के लिये एक मस्जिद हूँ मैं तेरे लिये रास्ता साफ करता हूँ और सब इन्तज़ाम करता हूँ तेरे लिये सब कुछ करने के बाद – मैं तुझसे कोई बदला नहीं चाहता – मेरी मजदूरी और मेरा प्याला किसी और के सर पर है ना कि तुझ पर – जब इन्सान की तलब और इरादा अल्लाह तआला के लिये दुरूस्त हो जाता है तो सब चीजों को ही उस के लिये मस्जिद कर दिया जाता है !

● सख़ावत जरूरत मन्द है और कोई तलबगार चाहती है जिस तरह तौबा, तौबा करने वाले को चाहती है, सख़ावत भिखारियों और कमजोरों को तलाश करती है जैसे हसीन साफ आईना तलाश करते हैं हसीनों का चेहरा आईने से हसीन बनता है अहसान का चेहरा फकीरों से रू–नुमा होता है जबकि फकीर सख़ावत का आईना है खबरदार – फूंक मारना आईने के चेहरे की बरबादी है इसलिये अल्लाह तआला ने सुरह (वद–दोहा) में फरमाया है ए मोहम्मद स. अ.व. फकीर को ना झिड़क – मसनवी पेज–290

1 ● बहुत से पढ़े–लिखों को बेख़बरी तबाह कर देती है और जो इल्म उन के पास होता है उन्हें जरा भी फायदा नहीं पहुँचाता !

2 वो इल्म बहुत ही बे कदर और बे कीमत है जो ज़बान तक रह जाये और वो इल्म बहुत बुलन्द है जो जिस्म

के हिस्सों से ज़ाहिर हो !

(3) पूरा आलिम और समझदार वो है जो लोगों को अल्लाह तआला की रहमत, बरकत, नेमत, राहत से ना उम्मीद ना करे और ना ही उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बेफिकर कर दे !

फरमान – हज़रत मौला अली क.व.क.

(1) ● जब कि सरकारे दो आलम हज़रत मोहम्मद स. अ.व. ने साफ-साफ फरमा दिया के'' दिल जब तक नमाज़ में हाजिर ना रहे नमाज़ नही है ''तो फिर हम सब से पहले वो तरीका क्यों नहीं सीखते के दिल नमाज़ में ही हाज़िर रहे और कोई भी ख़्याल ना आये तो ही तो हमारी नमाज़ कुबूल होगी वरना नमाज़ कुबूल ही नहीं होगी !

(2) जब कि सरकारे दो आलम हज़रत मोहम्मद मुस्तफा स.अ.व. ने साफ-साफ फरमा दिया के नमाज़ मोमिन की मेराज है मेराज यानि अल्लाह से मुलाकात है तब तो मोमिन बनकर अल्लाह से मुलाकात करना ही बेहतर है तो हमारी अल्लाह तआला से मुलाकात क्यों नहीं होती ?

(1) ● जबान से इकरार करना, हकीकत के दिल से देख लेने के बाद, और उसके मुताबिक अमल करने का नाम ईमान है !

(2) ईमान लाया मै, अल्लाह पर, उसके फरिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, आखरी दिन पर और इस बात पर के सब कुछ अच्छा और बुरा अल्लाह ही की

तरफ से है और इस बात पर के मरने के बाद दोबारा जिन्दा होना है ! beku eQL l y

3 ईमान लाया मैं जैसा के वो नामों और सिफातों के साथ है और मैंने उसके सभी हुक्मों को कुबूल किया और इसका मैं ज़बान से इकरार और दिल से इसकी तसदीक करता हूँ। beku e t Eey

● हजुर स.अ.व. के विसाल पर जब के हजरत अबु बकर ने तकरीर की के ''आज मोहम्मद चल बसे'' इस तकरीर से ''नबी हमेशा रहता है '' यह तालीम छुप गई और हज़रत अबु बकर की ख़िलाफत और शरीयत जारी हो गई कुछ लोगों ने हज़रत अबु बकर की खिलाफत को मजहब की खिलाफत समझ लिया के ये ख़िलाफत खुदा और उसके रसुल के हुक्मों के मुताबिक है मगर ये सही नहीं है हकीकत में तो कुछ लोगों ने मिल कर इलेक्शन के जरिये हज़रत अबु बकर को ख़लीफा चुना था हज़रत अबु बकर की ख़िलाफत के लिये सरकारे दो आलम का कोई फरमान या इशारा नहीं था !

● हज़रत अबु बकर ने अपने आखरी वक्त में हज़रत उमर को अपना जाँ नशीन बनाया, अब यहाँ दो सवाल पैदा होते है, तब कि हजूर ने कोई खिलाफत कायम नहीं की फिर क्यों अपने आप ख़िलाफत बनाई गई और जबकि हजूर ने अपना जाँ नशीन नही बनाया तो हज़रत अबु बकर ने क्यों अपना जाँ नशीन बनाया इस से साबित होता है के ख़िलाफत कायम करना भी हजूर की मरज़ी के खिलाफ था और जाँ नशीन बनाना भी मरज़ी के खिलाफ था इस खिलाफत को मज़हबी ख़िलाफत नहीं कहा जा सकता है बादशाहत कहा जा सकता है !

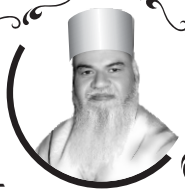

● हमें ये जान लेना चाहिये के दुनिया में दो चीजों की जरूरत है पहली चीज़ है हकीकत के दिल को खत्म होने से बचाने के लिये हकीकत के दिल की ख़ुराक और जो चीजें इसे नुकसान देती हैं उनसे हकीकत के दिल को बचाना, दुसरे बदन को नुकसान देने वाली चीजों से बचाना और बदन की ख़ुराक और दिल की ख़ुराक मोहब्बत और अल्लाह तआला की पहचान है क्योंकि हर चीज़ की ख़ुराक वो ही है जो इसकी तबियत और ख़्वाहिश के मुताबिक है बदन सवारी है हकीकत का दिल सवार है जिंदगी नाम का जो सफर है उसके लिये दोनो का सही होना जरूरी है !

ejdt r l0oQ

● बारीये तआला को पहचान लेने में इन्सान की इज्ज़त है ये इस तरह समझा जा सकता है के हर चीज़ की इज्ज़त उसी काम में होती है जिस काम में उसे चैन और सुकून मिलता है और हर चीज़ को चैन और सुकून उसी काम में मिलता है जिसको उसका जी चाहे और जी उसी काम को चाहता है जिसके वास्ते वो चीज़ पैदा की गयी है जैसे शहवत का मज़ा इसमें है के आरज़ू पूरी हो जाये और गुस्से का मज़ा बदला लेने में और आँख का मज़ा अच्छी सुरत देखने में है कान का मज़ा अच्छी आवाज़ सुनने में है इसी तरह इन्सान का मज़ा, चैन, सुकून, सब कुछ ही अल्लाह तआला के दीदार में है !

ejdt r l0oQ

[1] • वाकफियत (वक्फा) मआरफत की रूह है जिस तरह मआरफत हयात की रूह है !

[2] वक्फ अल्लाह तआला की हुजूरी है मआरफत उस का कलाम है इल्म उसके लिये हिजाब है बस वक्फा मआरफत पर और मआरफत इल्म पर मुकद्दम है !

[3] हर वाकिफ आरिफ भी होता है लेकिन हर आरिफ, वाकिफ नहीं होता वाकिफ का दिल खुदा के कब्जे में होता है और आरिफ का दिल उस की मआरफत के कब्जे में होता है !

[1] • आरिफ साहिबे दिल होता है मगर वाकिफ साहिबे हक होता है जब बला का नुजूल होता है तो वाकिफ को उबूर कर जाती है और इसी तरह आलिम के इल्म पर नाजिल हो जाती है !

[2] आलिम नफ्स का गुलाम होता है आरिफ (गुलामी से निज़ात तलब) होता है !

[3] आरिफ आलिम और मालूम दोनों होता है जबकि वाकिफ सिर्फ आलिम होता है मालूम नहीं होता आलिम सिर्फ अपने इल्म को देखता है लेकिन मआरफत को नहीं देख सकता !

तारीखे तसव्वुफ P-267

1. • आरिफ अपनी मआरफत का तो मुशाहेदा कर सकता है मगर खुदा का मुशाहेदा नहीं कर सकता – वाकिफ खुदा का मुशाहेदा करता है और मा – सिवा –अल्लाह का मुशाहेदा नहीं करता – आलिम अपने इल्म का जिक्र करता है आरिफ अपनी मआरफत का जिक्र करता है !

2. वाकिफ वो भी देखता है जो आरिफ देखता है आरिफ वो भी देखता है जो आलिम देखता है जब एक इन्सान खुदा की ज़ात में वाकिफ हो जाता है तो खुदा इल्म – हिक्म और मआरफत तीनों ही नेमतें अता कर देता है !

1. • आरिफ अपने इल्म की इन्तहा को देख सकता है इस का इल्म महदूद है लेकिन वाकिफ के इल्म की कोई इन्तहा या हद नहीं होती !

2. इल्म वो स्तून है जो मआरफत के सहारे कायम है और मआरफत वो स्तून है जो मुशाहेदे की वजह से कायम है !

3. मआरफत वो आग है जो इश्क को जला देती है और वक्फा वो आग है जो मआरफत को भी भस्म कर देता है । जब सालिक खुदा का मुशाहेदा करता है तो इल्म वा मआरफत दोनों रूख़सत हो जाते हैं!

1 • ए ईमान वालों, बहुत सी बदगुमानी से बचा रहा करो क्योंकि बाज़ गुमान गुनाह होते हैं !

— कलामे अल्लाह

2 खुदा वन्द तआला ने मुस्लिम (जो हकीकत में मुसल्लम + इमान हो) का खुन बहाने उस की इज्जत पर हमला वर होने, और उसके मुताल्लिक बुरा ख्याल रखने को हराम करार दिया है !

— हदीस शरीफ

3 किसी को परखे बिना उस पर भरोसा कर लेना कमज़ोरी की दलील है !

— कौलः हजरत अली क.व.क.

1 • जिस तरह लोग अपनी भलाई के लिये जल्दी करते हैं उसी तरह अगर खुदा उनको उनके गुनाहों की सज़ा देने में जल्दी करता तो उस सज़ा का मुकर्रर वक्त कब का आ चुका होता !

2 इन्सान के दिल में दो तरह के ख्यालात आते है एक रहमान की तरफ से – वो दिल में नेकी का इरादा और हक की तस्दीक का जज़्बा पैदा करता है और दुसरे ख्यालात शैतान की तरफ से आते हैं जो इन्सान के दिल में गुनाह, शर और हक को झुठलाने पर आमादा करते हैं !

— सहीफातुल कामला

1 ● ए अज़ीज़, ख़्वाजा हो या सुलतान, गदा हो या बादशाह, गुलाम हो या आका, फकीह हो या सूफी अगर ये दोनों सिफ्तें या तख़लिया (अकेला) रहना और तजलिया (फुल चढ़ाना – आशकार कर देना) तुम में है तो दोनों जहाँ की नेकबख्ती तुम्हारे नसीब में है । याद रखो के पीर की याद भी जरूरी है जो यादे हक में मौइन होती है बल्कि बगैर यादे पीर के यादे हक हासिल ही नहीं होती क्योंकि यादे पीर एक सीढ़ी है जो मकसद यानि यादे हक तक पहुँचाती है जिस शख्स में इन दो सिफ्तों में से कोई सिफ्त नहीं है उस की कोई कदरो कीमत नहीं !

फवायद हज़रत बन्द नवाज़ गैसू दराज़ कु.सि.अ.

● आरिफ कामिल की हालत यादे इलाही से भी गुजर जाती है यकीन जानो जब तक सालिक गैरूल्लाह का वुजूद तक भी अपने दिल से ना निकाल दे तब तक एक कदम भी मंजिलें इरफान की राह पर नहीं रख सकता और ना ही आरिफ कामिल बन सकता है क्योंकि याद भी एक किस्म की दुई है और दुई आरिफों के नज़दीक एन कुफ्र है ये है कलमा तय्यबा की हकीकत !

सरकार गरीब नवाज़–असरारे हकीकी P-10

● वो इल्म जिसकी बदौलत सालिक खुदा का मुशाहेदा कर सके वो इल्म सरासर सुलूक (राहे खुदा) है लेकिन वो इल्म जिस से वो खुदा को ना देख सके बल्कि अपने को देखे सरासर हिजाब है जब सूफी खुदा का मुशाहेदा करता है तो इल्म और मआरफत दोनों बेकार हो जाते हैं अगर सूफी खुदा को ना देख सके तो उसकी हिकमत , अक्ल और इल्म सब बेकार है !

तारीखे तसव्वुफ – P-270

dne c<k d re py exj ; , d dlj jgh
dne tjk fey ugh vxj dne fey jg rk
pkg lLr pky Hkh gk jlkb gkxh , d fnu

● पैकरें हकं वा सदाकत आप पर लाखों सलाम
ए शहीदे राहे उल्फत आप पर लाखों सलाम
करबला में आपने ए फातमा के नूरे एन
कर दिया नामे शुजाअत आप पर लाखों सलाम
सुलह बातिल से ना की सर, राहे हक में दे दिया
ए निशाने इस्तकामत आप पर लाखों सलाम
फख्र करता है जमाना आप के किरदार पर
पैकरें अखलाके रहमत आप पर लाखों सलाम
पेश करता है ये सलाम अपना ये ''काविश'' आपको
फख्रे दीं ए फख्रे मिल्लत आप पर लाखों सलाम

अब्दुल हादी खाँ ''काविश'' रामपुर

तालीमात हज़रत अली क.व.क

[1] बेवकूफ का दिल उसके मुँह में है और अक्लमन्द की जबान उस के दिल में है

[2] अल्लाह ने तुम्हारी बीमारियों और तुम्हारे मर्ज को और तुम्हारे गुनाहों को दूर करने का जरिया बनाया है क्योंकि खुद बीमारी कोई सवाब नहीं है एवज़ तो है अज़र नहीं है ।

[3] वो गुनाह जिसका तुम्हें रंज हो उस नेकी से कही अच्छा है जो तुम्हें खुद पसन्द बना दे ।

नहजुल बलांगा

● अलफाज़ एक हिजाब है और इल्म भी एक अलफाज़ ही है जब तक (सालिक) (सूफी-मुरीद) अलफाज़ों को पीछे ना छोड़ दे वो तरक्की नहीं कर सकता क्योंकि अलफाज़ों में शक है अलफाज़ों पर इबलीस को फख्र है अलफाज़ खुदा को नहीं जान सकता अलफाज़ जब अपने आप को नहीं जान सकता तो खुदा को कैसे जानेगा अलफाज़ को शर्फे हुजूर हासिल नहीं हो सकता अहले हुजूर अलफाज़ों से बालातर होते हैं बल्कि अलफाज़ों को मिटा देते हैं जब

तक मुरीद अलफाज़ों से दूर ना हो जाये खुद से दूर नहीं हो सकता और जब तक खुद से अलग ना हो जाये खुदा को नहीं पा सकता !

• सालिक (मुरीद) को लाज़िम है के वो अपना नाम खुदा के हवाले कर दे और अपने आप और खुदा के बीच किसी नाम को ना आने दे क्योंकि ए मुरीद तेरा इल्म ही तेरे लिये बड़ा परदा है और तेरे असमॉ ही तेरे हक में हिजाबे अकबर है ए मुरीद जब खुदा तुझे नाम और अलफाज़ों की दुनिया से बाहर कर देगा तो तुझे अपना हुक्म (इक्तेदार) अता फरमाता है याद रख खुदा से जुदा हो कर किसी भी नाम में कोई इख्यार या इकतेदार नहीं है !

1 • खुदा ने मुझ से कहा – मेरे चेहरे की तरफ देख – बस मैंने देखा – उस ने कहा मेरा गैर मौजूद नहीं है – बस मैंने कहा – तेरा गैर मौजूद ही नहीं है ।

2 गैरूल्लाह को देखना गोया उस की बंदगी करना है जो अमल खुदा के लिये महज़ उसकी ख़ातिर किया

जाये वो वाकई खुदा के लिये होता है !

(3) हर शै की गुफ्तगु बा वक्ते गुफ्तगु उस के लिये हिजाब है !

तारीखे तसव्वुफ – P-274-276

(1) • जिस ने मेरे वसीले से वकूफ हासिल किया – मैं उसे ज़ीनत का लिबास पहना देता हूँ जिस के बाद किसी शै में ज़ीनत नजर नहीं आती जो तुझ से वकूफ (कबा) हासिल कर लेता है वो इस कदर रम्ज़ में हो जाता है के इसे किसी ज़ीनत की जरूरत नहीं रहती !

(2) वक्फे के लिये अपने आप को पाक कर ले वरना वक्फा तुझे अपने से दूर कर देगा जो ताहिर नहीं है वो मेरी बारगाह में बार नहीं पा सकता !

सरकार इमाम नफरी कु.सि.अ.

(1) • आलिम और आरिफ में ये फर्क है के आलिम इस दुनिया के ज़ाहिर से वाकिफ होता है लेकिन आरिफ इस दुनिया की हकीकत जानता है और ये जान जाता है

के ये दुनिया ख्वाब है ।

[2] जो इन्सान अल्लाह का हुक्म ना मानने से डरेगा तो अललाह उसके लिये मुसीबत से निकलने का रास्ता बना देगा और उस की परेशानी दूर कर देगा और उसे एसी जगह से रिज़्क अता करेगा जहाँ का उस का गुमान भी ना पहुँच सके – आयत कलामे अल्लाह –

तारीखे तसव्वुफ – P-141-143

[1] • इन्सान के जिस्म में गोश्त का एक टुकड़ा है अगर वो अच्छा है तो तमाम बदन अच्छा है और अगर वो खराब है तो तमाम बदन खराब है और वो दिल है !

[2] अगर तू फकर चाहता है तो इस का मिलना कामिल सूफियों की सोहबत पर है ना तेरी ज़ुबान इसमें काम आयेगी ना ही तेरे हाथ !

[3] मौलवी जब तक मौलाना रूम ना बन सका जब तक शम्स तबरेज़ी का गुलाम ना बना !

[4] एक अरसे तक औलिया की सोहबत में रहना सौ साल की खालिस इबादत से बेहतर है !

म्यार–अल–सुलूक – P-24-29

[1] • हज़रत अबु हुरेरा से रिवायत है के मुझको सरकारे दो आलम से दो इल्म पहुँचे हैं एक तो ये इल्म जो तुम को पहुँचाया और एक दूसरा इल्म है अगर ज़ाहिर करूँ इस को तो ख़ल्क मेरा हलक काट डाले – इस हदीस शरीफ से इल्मे ज़ाहिर और इल्मे बातिन अलग – अलग मालूम हो गया !

[2] गुलामे मोहब्बत खुदा हो और अपनी बुजुर्गी ज़ात को छोड़ दे ए जामी क्योंकि राहे खुदा में हसब–नसब कोई चीज़ नहीं है !

[3] सीने से सीना इस तरह मुनव्वर हो जाता है के दुसरे (आज़ॉ) हिस्से दंग रह जाते हैं !

म्यार–अल–सुलूक – P-30-31

1 • अपने नफ्स और दूसरों पर जुल्म ना कर क्योंकि जुल्म दुनिया और आखरत में अन्धेरों का मजमुआ है जुल्म दिल को तारीक और चेहरा और नामा-ए-आमाल को स्याह कर देता है इसलिये ना तू जुल्म कर और ना ही किसी ज़ालिम की मदद कर !

2 तू इस बात की कोशिश कर के तू ना ज़ालिम बने ना मजलूम !

3 बुलन्दी और इज्ज्त हासिल करने का सबब - सबर करना है !

सरकार ग़ौस पाक - अल फतूह - रब्बानी *P-296-297*

1 • ए मुनाफिक तू कब तक रियाकारी और निफाक करता रहेगा जिस के लिये मुनाफिक बनता है उस से तुझ को क्या फायदा मिलेगा तुझ पर अफसोस है के तू अल्लाह तआला से शर्म नहीं करता और उससे मिलने को सच्चा नहीं मानता जो के अनकरीब होने वाली बात है तू उस को धोखा भी देता है और नफा भी हासिल करना चाहता है !

(2) ए अल्लाह – हम तुझ से तेरे साथ सबर करने का सवाल करते हैं और तुझ से परहेज़गार गारी और किफायत और हर चीज़ से फराग़त का सवाल करते हैं और तेरे साथ मशगूल रहने और जो हमारे और तेरे दरम्यान परदे हैं उठ जाने कर सवाल करते हैं !

सरकार ग़ौस पाक–अल फतूह–रब्बानी

(1) • जब कोई शख्स अपने इल्म पर अमल करता है तो अल्लाह तआला उस को एसे उलूम का वारिस बना देता है जो इस को मालूम ही नहीं होते जब तू अमल करे और देखे के तेरा दिल अल्लाह तआला का कुर्ब नहीं पाता और ना अपने अन्दर मिठास पाता है तो तू ये जान ले के तू अमल ही नहीं करता बल्कि तेरे अन्दर निफाक रिया और खुदपसन्दी है इन्हें छोड़ दे और अख़लास को लाज़िम पकड़ वरना अपने आप को बेकार की मेहनत में ना डाल अकेले और भीड़ में मराकबा कर !

(2) या अल्लाह – तू हमें अपनी अताअत में जिन्दा रखना और अपनी ताबेदारी के साथ हमारा खात्मा फरमा !

1 • सबसे खौफनाक जिस से मैं अपनी उम्मत पर खौफ करता हूँ मुनाफिक जबान तरार है !

हदीस शरीफ

2 जब अल्लाह के बारे में तेरी सच्चाई और उसकी ज़ात के लिये तेरा अखलास और उसके सामने तेरी हुजूरी सही हो जायेगी बस वो तुझे इस मगज़ से खाना खिलायेगा और तुझे मगज़ के मगज़ और बातिन के बातिन और हकीकत की हकीकत पर खबरदार कर देगा, कोशिश का तआल्लुक दिल से होता है ना कि जिस्म से – रूगरदानी (ना फरमानी) अन्दर से होती है ना कि ज़ाहिर से – नज़र मायनों पर होती है ना कि ज़ाहिर पर – देखना तो बस अल्लाह की ज़ात का है !

1 • जहाँ तक हो सके ए अज़ीज, खिदमत कर ताकि मुरादें पूरी हों !

2 जो ख़ासाने हक की खिदमत करता है खुदा तआला उस को साहबे इज्ज़त और दौलत बना देता है !

3 जो शख्स ख़िदमत के लिये अपने आप को तैयार कर लेता है वो मआरफत के दरख्त से फल हासिल करता है !

4 जो बन्दा ख़ासाने खुदा की खिदमत करता है तो इस की खिदमत इसको सरबुलन्द करती है ।

● एक दिन सरकार अब्दुल्ला शिबली कु.सि.अ. ने सरकार मन्सुर हल्लाज से पुछा ''या शैख अल्लाह की तरफ जाने का रास्ता कैसा है यानि इसकी कैफियत क्या है ?'' जवाब मिला ये रास्ता दो कदमों का है तुम सिर्फ दो कदम चल कर उस तक पहुँच सकते हो – पहला कदम ये है के दुनिया को उसके आशिकों के मुँह पर मारो और दुसरा कदम ये है के आखरत को उसके चाहने वालों के हवाले कर दो – यानि आख़रत से भी बेनियाज़ हो जाओ !

तारीखे तसव्वुफ – P-359

● बस ना देखा मूसा ने अपने रब को बल्कि अल्लाह ने अल्लाह को देखा – और नहीं था वहाँ मगर वो ही चीज़ जो मूसा के नाम से मोअतबर थी इन्हीं मायनों की तरफ अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया है इस कौल में के ए मुसा तू मुझे हरगिज नहीं देख सकता इसलिए के जब तक तू मौजूद है मैं तुझ से मफकूद हूँ और जब तू मुझे पायेगा तो तू मफकूद हो जायेगा !

इन्साने कामिल–P-257

● हज़रत अली मुरतज़ा फरमाते हैं के अगर मैं गायब होता हूँ तो वो ज़ाहिर हो जाता है और अगर वो ज़ाहिर होता है तो वो मुझे गायब कर देता है इस की तरफ इशारा है जो मूसा अ.स. को उस ने कहा ''ए मूसा अपने नफ्स से जुदा हो जा और आ जा ये जवाब मूसा अ.स. की इस दुआ का था के ''ए मेरे रब मैं किस तरह तेरे तक पहुँच सकता हूँ !

इन्साने कामिल – P-257

1 ● सच्चा मुरीद वो है जो पीर और बारगाहे पीर यानि ख़ानकाह शरीफ को हर बुराई और कमी से पाक समझे !

2 जिस का पीर नहीं–उसका दीन ही नहीं है !

3 मुरीद की कामयाबी उस के पीर की इनायत–और नज़रे करम पर मौकूफ है और पीर की नज़रे करम और इनायत – मुरीद के अदब – इल्म – अमल – शऊर – तमीज़ – अकीदत – भरोसे पर मौकूफ है !

4 जिस मुरीद को अपने पर, से ज्यादा भरोसा और अकीदत अपने पीर पर होती है उस की हाज़री और ग़ैर हाज़री में भी पीर उसकी हिफाज़त करता है !

तालीमे तसव्वुफ

बोलता था नार में और नूर में
या अनल बोलता मन्सूर में
बोलता ही अहमदे मुख़्तार था
बोलता ही हैदरे करार था
बोलता को बोलते की चाह है
बोलते में देखो तो अल्लाह है
बोलता गर जिस्म से जाता रहा
फिर किसी बोल क्या नाता रहा
बोलते से बोलता पैदा हुआ
बोलते पर बोलता शैदा हुआ
बोलता ही बोलते के साथ है
बोलता ना हो तो बाजी मात है

[1] • नफ्स सिर्रे इलाही (अल्लाह का राज़ है) और इस को इस से बज़ाते खुद ही लज्ज़त है !

[2] वो नूर वस्फ – रबूबियत से पैदा किया गया है इसी वास्ते इस के लिये रबुबियत है

[3] वो पुरी बड़ाई और तकब्बुर के साथ पैदा हुआ है क्योंकि वो उसके अख़लाक वा सिफात है !

[4] वो रोक देने से राज़ी नहीं होता इसके लिये इस का मकान उपर है और वहाँ इसके लिये सबात व कयाम है !

• कुछ लोग शैख कामिल के हाथ पर बैत होने के बाद भी फैज़–बरकत–रहमत से महरूम रहते हैं उसकी कुछ वुजूहात है !

[1] ये अदब नहीं सीख पाते – बेहतर है के ये सबसे पहले हकीकी अदब सीखें !

[2] अपनी अक्ल ज्यादा चलाते हैं अपनी अक्ल पर मुर्शिद का हुक्म ग़ालिब नहीं करते !

[3] इनकी तौबा सच्ची नहीं होती !

(4) इनकी तलब और लगन सच्ची नहीं होती और ये गाफिल मिजाज़ होते हैं !

(5) ये हकीकत अख़लास से खाली होते हैं और करने के मामले में इनकी हिम्मत कमज़ोर होती है !

तालीम मरकज़े तसव्वुफ – सआदत अल एबाद P-206

(1) • जो कम हो और काफी हो वो उस से बेहतर है जो ग़फलत में डाले !

(2) सबर करने वाले सूफी अल्लाह की मजलिस में हैं !

(3) मुरीद का पहला मकाम ये है के अपना इरादा छोड़ दे और अल्लाह के इरादे के साथ हो जाये !

(4) सूफी ज़मीन की तरह होता है जिस पर गन्दगी डाली जाती है और उस से हर एक को फायदा होता है !

(5) एक सूफी को मुरीद को लाज़िम है के वो अपने मुर्शिद की मौजूदगी में – मुर्शिद के अलावा किसी और तरफ तवज्जोह ना करे !

[1] • दूरी के खोट के निकलकर ''करीब'' जैसे साफ मकाम पर आने वाले को सूफी कहते हैं !

[2] दिल में किसी भी चीज़ या फिकर का ग़म रखे बिना अल्लाह की तरफ पूरा ध्यान लगा देने वाले को सूफी कहते हैं !

[3] सूफी अल्लाह के सामने गोदी में बच्चे की तरह होता है !

[4] अदब व आदाब का हर वक्त ख़्याल रखने वाला सूफी कहलाता है !

[5] सूफी का काम – हर नागवारी को बरदाश्त करना है !

मरकज़े तसव्वुफ

• नमाज़ – रोज़ा – हज – जकात – ख़तना – दाड़ी – पोशाक – पगड़ी – ये सब रस्म और रिवाज़ हैं जो सरकारे दो आलम से पहले भी थे जिसकी पाबन्दी करते हुए – इन्सानियत गुमराही में पहुँच जाती है ! और इन रस्मों और रिवाजों पर इस्लाम मुनहसर (निर्भर DEPEND) नहीं है और ना ही रस्म वा रिवाज़ इन्सानियत को कायम रखने में मदद गार साबित होते हैं इसलिये हर मुसलमान पर ये फर्ज है के वो इस बात

को जानने और समझने की कोशिश करे के हकीकी इस्लाम क्या है और कौन-कौन से रस्मो रिवाज इस्लाम के नाम पर इस्लाम में दाखिल हो गये हैं !

मरकज़े तसव्वुफ

• सरकारे दो आलम ने फरमाया मोमिन वो नहीं जो मस्जिदों में जमा होते हैं और सिर्फ जुबान से कलमा पढ़ते हैं ए उमर एसे कलमा पढ़ने वाले जो कि कलमे की हकीकत को नहीं जानते और कलमे के असली मायने और हकीकत से ही बेख़बर हैं वो मोमिन नहीं मुनाफिक (दिल में कुछ और बाहर और कुछ) फर्क रखने वाले हैं क्योंकि जुबान से तो ये कलमे का इकरार करते हैं लेकिन कलमे के असली मायने और हकीकत को नहीं जानते इन्हें खाक भी पता नहीं के कलमे का असली मकसद और तकाज़ा क्या है ? कलमा क्या चीज़ है ?

असरारे हकीकी – मरकज़े तसव्वुफ

• सरकारे दो आलम ने फरमाया – ए उमर जिस शख्स को अल्लाह तआला की पहचान हासिल हो जाती है उस को मुँह से अल्लाह-अल्लाह कहने और

दोहराने की जरूरत नहीं रहती और जो मुँह से अल्लाह कहता है समझ लो उसे अभी अल्लाह की पहचान नहीं हुई है !

(असरारे हकीकी)

2 सबसे बड़ी बहादुरी ये है के इन्सान अपनी कमियाँ खुद ही देखे, गौर से देखे के मेरे अन्दर क्या कमियाँ हैं उन्हें समझे और समझ कर दूर करे यही बड़ी कामयाबी है और अपनी कमियाँ और नुक्स देख कर उन्हें दूर करने के बाद इन्सान की जिंदगी में सुकून और खुशियाँ ही बाकी रह जाती है !

मरकज़े तसव्वुफ

2

1 • हजरत उमर ने अर्ज किया के हज़रत ये कैसी अल्लाह की पहचान हुई के इन्सान अपने मालिक का नाम ही ना ले और उसकी याद को छोड़ दे ? सरकारे दो आलम ने जवाब दिया के अल्लाह ने अपने कलाम में फरमाया ''मैं तुम्हारे साथ हूँ जहाँ कहीं भी तुम हो '' बस ए उमर जो हर वक्त हमारे साथ हो उस का याद करना क्यों जरूरी है हज़रत उमर ने अर्ज़ किया अल्लाह तआला हमारे साथ कहाँ है ? सरकारे दो आलम ने जवाब फरमाया '' इन्सान के दिल में '' !

हमें ये जान लेना चाहिये समझ लेना चाहिये के अगर हमें जिंदगी में सुकून - तरक्की - रहमत और बरकत चाहिये तो उसका एक ही तरीका है कम बोलना - मीठा बोलना - सिर्फ भला करने के लिये बोलना !

मरकज़े तसव्वुफ

(1) • ए उमर - रोज़े की हकीकत के मायने ये है के इन्सान अपने दिल से मजहबी लालच, यानि जन्नत - हूर - और सारे आराम और दुनिया के सब लालच मकान - गाड़ी - बंगला - सोना - चाँदी - माल निकाल दे क्योंकि ये दोनों किस्म की ख्वाहिशें - चाहत अल्लाह तआला और बन्दे के बीच परदा है एसी चाहत के रहते हुए इन्सान अपने हकीकत के मालिक अल्लाह तआला से नहीं मिल सकता और दुनिया की चीजों की ख्वाहिश रखना तो सरासर अन्दर का शिर्क है !

(2) जो कम बोला - मीठा बोला - सोच समझकर बोला उसने सब तकलीफों से आजादी पाई !

मरकज़े तसव्वुफ

1 • "अल्लाह के सिवा" का कोई ख्याल करना, कयामत का डर, जन्नत का लालच, ये सब चीजें हकीकत के रोज़े को खत्म कर देने वाली और तोड़ देने वाली है हकीकत का रोज़ा तब ही सही रह सकता है जब कि इन्सान अल्लाह के सिवा सब चीजों को अपने दिल से निकाल दे यानि अल्लाह के सिवा उसे कुछ याद ना रहे और हर किस्म की, उम्मीद – लालच चाहत और डर को अपने अन्दर से निकाल दे !

असरारे हकीकी

2 अपनी खुद की ही गलतियाँ देखना, अपनी ही कमियाँ और नुक्स देखना और अपनी ही आदतों पर नज़र रखना बड़ी इबादत है और इस इबादत की तौफीक और हिम्मत अल्लाह तआला उसे ही अता फरमाता है जिसे अल्लाह तआला अपने लिये पसन्द फरमाता है !

• ये समझ लेना चाहिये के हकीकत के रोज़े की शुरूआत ये है के इन्सान को अपने अन्दर की काबलियत और कैफियत के मुताबिक अल्लाह तआला की पहचान हासिल कर लेनी चाहिये और रोज़े का खोलना भी यही है के उसे अल्लाह तआला का दीदार

हासिल हो सरकारे दो आलम ने फरमाया ''अल्लाह तआला के दीदार और मुलाकात के अलावा मुझे किसी भी और चीज़ से मतलब नहीं है हकीकत के रोज़े का खोलना (इफ्तार) सिर्फ अल्लाह तआला का दीदार है !

असरारे हकीकी

tk pi jgk mlu futkr ikb

● ए उमर – तमाम आम लोग रोज़ा रखते हैं के जिसमें खाने–पीने और औरत से मिलने से बचना होता है ये हकीकत का रोज़ा ना हो कर, नकली रोज़ा है इसके ये मायने हैं के अल्लाह तआला के राज़ इनको नहीं मिल पाते । वो बाहरी दुनिया की खूबसूरती में घिरे हुए हैं और हकीकत का इन्हें कुछ पता नहीं और इस नकली रोज़ें में अल्लाह के सिवा को नहीं छोड़ा जाता और इन्सान में हर किस्म का डर और ख्वाहिश रहती है एसे रोज़ा रखने वालों का बोलना और करना सब ''अल्लाह के सिवा'' है ! इस ज़ाहिरी और नकली रोज़े से कोई फायदा नहीं होता !

● एक इन्सान अपने कामों से, बोलने से – देखने से – बात करने से, दूसरे इन्सानों पर अच्छा या बुरा असर डाल सकता है जो इन्सान इस बात को समझकर इस पर अमल करता है वो दूसरों के लिये एक अच्छी मिसाल कायम करता है कोई कुछ भी कहता रहे अच्छा काम कर के आप दूसरों के लिये मिसाल बनते हैं लोग आप से सीखते हैं और आप का अच्छा असर उन पर पड़ता है ! पाक और बेहतर सुकून भरी जिंदगी आप से ये उम्मीद लगाती है के अच्छी मिसाल कायम करें जब आप खुद को बदलकर – जाग कर अच्छे काम करते हैं तो जिंदगी भी बदलकर आपको खुशियाँ और सुकून देने लगती हैं !

मरकज़े तसव्वुफ

● आदम पर उसने अपनी जानिब (तरफ) से नामों का इज़्हार किया – (ज़ाहिर कर दिये)

दूसरों पर आदम के जरिये (मुन्कशिफ) हो गये (जाहिर हो गये)

पानी चाहे नहर से ले – या मटके से – मटके की मदद भी तो नहर से है – रोशनी चाहे चाँद से तलब कर या सूरज से – ए बेटा चाँद की रोशनी भी सुरज से है

– जल्द रोशनी हासिल कर ले – पैगम्बर ने फरमाया मेरे सहाबा सितारे हैं उसका नूर आदम से ले या उस से ले – शराब चाहे मटके से ले – या सकोरे से! ये सकोरा – मटके से सख्त जुड़ा हुआ है ए नेकबख्त – तेरी तरह वो सकोरा बे–नियाज़ नहीं है !

MASNAVI VOL-1-Page-214

1. • तुम्हारी रब की तुम्हारे जमाने में खुशबुँए हैं – आगाह – उन से वाबिस्ता हो जाओ (मिल जाओ)

हदीस शरीफ – मसनवी – 1-P-215

2. नेक बात कहो या खामोश रहो – हदीस

3. सब से अच्छी इबादत जो सबसे आसान है वो चुप रहना है !

4. दिल की लज्ज़त अल्लाह तआला को जान लेने, पहचान लेने में है !

5. जब तुम अपने अन्दर सख्त दिली बुरे ख्याल बदन में सुस्ती और रिज़्क में कमी पाओ तो समझ लो के ये बेकार और ज्यादा बोलने का नतीजा है !

● बदन एक शहर है, हाथ–पाँव पेशेवर ख्वाहिश इस शहर के अमल करने वाले, गुस्सा कोतवाल – दिल बादशाह – अक्ल वज़ीर है – बादशाह को शहर का इंतजाम चलाने के लिये इन सब की जरूरत है लेकिन ख्वाहिश झुठी और ज्यादती करने वाली है जो वज़ीर (अक्ल) कहती है उसके खिलाफ ही कहती है और चाहती है के सल्तनत का सारा माल खुद ही ले ले – और कोतवाल (गुस्सा) शरीर है, मार डालना जख्मी करना उसे अच्छा लगता है अब अगर बादशाह (दिल) हाथ–पाँव ख्वाहिश – गुस्से को अक्ल (वज़ीर) के हुक्म के नीचे कर दे – और अक्ल के खि़लाफ – इनकी शिकायत को ना सुने तो शहर ठीक चलेगा –

अब तो हाथ–पाँव – कोतवाल – ख्वाहिश में मिलकर वज़ीर और बादशाह को कैद में ले लिया है और अपना गुलाम बना कर मनमानी कर रहे हैं !

● ए प्यारे – अब तूने जान लिया के ख्वाहिश और गुस्से को – खाने–पीने और बदन की हिफाज़त के लिये पैदा किया है तो ये दोनों बदन के खिदमत गार हैं और खाना – पीना बदन की खुराक है और बदन को

हवास का बोझ उठाने के लिये पैदा किया तो बदन, हवास का ख़ादिम है और हवास को अक्ल के वास्ते जासुसी करने के लिये पैदा किया गया और अक्ल को दिल के वास्ते पैदा किया गया के दिल के लिये रोशनी बने और दिल इसलिये बना के अल्लाह तआला की खुबसूरती देख सके यही इस आयत का मकसद है ''हमने जिन्नों और इन्सानों को अपनी इबादत (पहचान के लिये) ही पैदा किया!''

• जब इन्सान ने अपने पैदा होने से खुदा की हस्ती को जाना और जिस्म के हिस्सों से हक तआला के कमाल कुदरत को पहचाना और हाथ-पाँव के कामों से खुदा के कमाल को देखा, और जिन चीजों से वो पूरा होता है उन्हें अपने साथ और मौजूद देखने से उसने रहमते हक को देखा तो नफ्स की पहचान की, जो मआरफते हक की चाबी है ! इसीलिये हदीस शरीफ है '' जिस ने अपने नफ्स को जाना उसने अपने रब को जाना '' -

vDy dh vknr 'kd g
fny dh vknr vdhnr g

• जो इन्सान भी नेकी की कोशिश करेगा और जिंदगी का हकीकत का मकसद पाने की कोशिश करेगा तो वो जरूर मुश्किलों में डाला जायेगा और जो इंसान इन पर इन मुश्किलों पर सबर ना कर सका इन्हें बरदाश्त ना कर सका वो रास्ते में ही रह जायेगा मंजिल तक नहीं पहुँच पायेगा !

इन्सानों में सबसे ज्यादा नबियों की आजमाइश होती है फिर वलियों की आजमाइश होती है – फिर जो उनके करीब हैं फिर जो उनके करीब हैं !

1. • इन्सान खुद को बदल सकता है और अपनी तकदीर का मालिक बन सकता है ये हर उस इन्सान का तजुर्बा है जो अच्छे ख्यालात की ताकत के बारे में पूरा–पूरा होशियार है !

2. अपनी ज़बान पर निगाह रखने से इन्सान दुनिया की आफतों से बचा रहता है !

3. अपनी ज़बान को बे–लगाम ना छोड़ो वरना तुम किसी ना किसी परेशानी और फसाद में ही पड़े रहोगे !

● ए अल्लाह के बन्दे – तू आखरत से बिल्कुल खाली है और दुनिया से भरा हुआ है और तेरी ये हालत के, अच्छे और अल्लाह के वलियों से अलग रहना और इन से मेल–जोल छोड़ देना और अपनी राय पर भरोसा कर के बे परवाह हो जाना मुझे गम में डालता रहता है क्या तुने ये जाना और पहचाना के जो कोई अपनी राय को काफी समझ कर उस पर भरोसा करता है वो गुमराह हो जाता है कोई आलिम एसा नहीं है के जो इल्म के ज्यादा होने का मोहताज ना हो और कोई इल्म वाला एसा नहीं है जिस से ज्यादा इल्म वाला कोई दुसरा ना हो !

फयूजे यज़दानी P-482

● अल्लाह वालों के पास बैठना एक नेमत है और बुरे लोगों के पास बैठना जो कि झूठे और दिल में फर्क रखने वाले हैं उनके पास बैठना एक अज़ाब है अल्लाह के लिये अपने दिल की निगरानी कर और अपने नफ्स से उन चीजों को चाह जो कि अल्लाह के हक और उसकी मखलूक के हक हैं इन को पूरा करना जरूरी समझ अगर तू दुनिया और आख़रत की भलाई चाहता है तो तू इस बात का ख्याल रख के अल्लाह तआला को तेरे बारे में सब पता है !

फयूजे यज़दानी

● मेरी बातों को मान, मुझसे दुशमनी ना कर मेरे और तेरे दरम्यान दुश्मनी की वजह क्या है ? मैं तेरी इबादत और तेरी गंदगी को दूर करने के लिये एक मस्जिद हूँ मै तेरे लिये रास्ता साफ करता हूँ और सब इन्तज़ाम करता हूँ तेरे लिये सब कुछ करने के बाद – मैं तुझसे कोई बदला नहीं चाहता – मेरी मजदूरी और मेरा प्याला किसी और के सर पर है ना कि तुझ पर – जब इन्सान की तलब और इरादा अल्लाह तआला के लिये दुरूस्त हो जाता है तो सब चीजों को ही उस के लिये मस्जिद कर दिया जाता है !

● सख़ावत जरूरत मन्द है और कोई तलबगार चाहती है जिस तरह तौबा, तौबा करने वाले को चाहती है, सख़ावत भिखारियों और कमजोरों को तलाश करती है जैसे हसीन साफ आईना तलाश करते हैं हसीनों का चेहरा आईने से हसीन बनता है अहसान का चेहरा फकीरों से रू–नुमा होता है जबकि फकीर सख़ावत का आईना है खबरदार – फूंक मारना आईने के चेहरे की बरबादी है इसलिये अल्लाह तआला ने सुरह (वद–दोहा) में फरमाया है ए मोहम्मद स.अ.व. फकीर को ना झिड़क –

मसनवी पेज–290

(1) • बहुत से पढ़े-लिखों को बेख़बरी तबाह कर देती है और जो इल्म उन के पास होता है उन्हें जरा भी फायदा नहीं पहुँचाता !

(2) वो इल्म बहुत ही बे कदर और बे कीमत है जो ज़बान तक रह जाये और वो इल्म बहुत बुलन्द है जो जिस्म के हिस्सों से ज़ाहिर हो !

(3) पुरा आलिम और समझदार वो है जो लोगों को अल्लाह तआला की रहमत, बरकत, नेमत, राहत से ना उम्मीद ना करे और ना ही उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बेफिकर कर दे !

फरमान – हज़रत मौला अली क.व.क.

1 • जब कि सरकारे दो आलम हज़रत मोहम्मद स.अ.व. ने साफ-साफ फरमा दिया के '' दिल जब तक नमाज़ में हाजिर ना रहे नमाज़ नही हैं '' तो फिर हम सब से पहले वो तरीका क्यों नहीं सीखते के दिल नमाज़ में ही हाज़िर रहे और कोई भी ख़्याल ना आये तो ही तो हमारी नमाज़ कुबूल होगी वरना नमाज़ कुबूल ही नहीं होगी !

2 जब कि सरकारे दो आलम हज़रत मोहम्मद मुस्तफा स.अ.व. ने साफ-साफ फरमा दिया के नमाज़ मोमिन की मेराज है मेराज यानि अल्लाह से मुलाकात है तब तो मोमिन बनकर अल्लाह से मुलाकात करना ही बेहतर है तो हमारी अल्लाह तआला से मुलाकात क्यों नहीं होती ?

[1] • जबान से इकरार करना, हकीकत के दिल से देख लेने के बाद, और उसके मुताबिक अमल करने का नाम ईमान है !

[2] ईमान लाया मैं, अल्लाह पर, उसके फरिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, आखरी दिन पर और इस बात पर के सब कुछ अच्छा और बुरा अल्लाह ही की तरफ से है और इस बात पर के मरने के बाद दोबारा जिन्दा होना है ! ईमाने मुफस्सल

[3] ईमान लाया मैं जैसा के वो नामों और सिफातों के साथ है और मैंने उसके सभी हुक्मों को कुबूल किया और इसका मैं ज़बान से इकरार और दिल से इसकी तसदीक करता हूँ। ईमाने मुजम्मल

• हजुर स.अ.व. के विसाल पर जब के हजरत अबु बकर ने तकरीर की के ''आज मोहम्मद चल बसे'' इस तकरीर से ''नबी हमेशा रहता है '' यह तालीम छुप गई और हज़रत अबु बकर की ख़िलाफत और शरीयत जारी हो गई कुछ लोगों ने हज़रत अबु बकर की खिलाफत को मजहब की खिलाफत समझ लिया के ये

ख़िलाफत खुदा और उसके रसुल के हुक्मों के मुताबिक है मगर ये सही नहीं है हकीकत में तो कुछ लोगों ने मिल कर इलेक्शन के जरिये हज़रत अबु बकर को ख़लीफा चुना था हज़रत अबु बकर की ख़िलाफत के लिये सरकारे दो आलम का कोई फरमान या इशारा नहीं था !

- हज़रत अबु बकर ने अपने आखरी वक्त में हज़रत उमर को अपना जाँ नशीन बनाया, अब यहाँ दो सवाल पैदा होते हैं, तब कि हज़ूर ने कोई खिलाफत कायम नहीं की फिर क्यों अपने आप ख़िलाफत बनाई गई और जबकि हज़ूर ने अपना जाँ नशीन नहीं बनाया तो हज़रत अबु बकर ने क्यों अपना जाँ नशीन बनाया इस से साबित होता है के ख़िलाफत कायम करना भी हज़ूर की मरज़ी के खिलाफ था और जाँ नशीन बनाना भी मरज़ी के खिलाफ था इस खिलाफत को मज़हबी ख़िलाफत नहीं कहा जा सकता है बादशाहत कहा जा सकता है !

- हमें ये जान लेना चाहिये के दुनिया में दो चीजों की जरूरत है पहली चीज़ है हकीकत के दिल को खत्म होने से बचाने के लिये हकीकत के दिल की खुराक और जो चीजें इसे नुकसान देती हैं उनसे हकीकत

के दिल को बचाना, दुसरे बदन को नुकसान देने वाली चीजों से बचाना और बदन की ख़ुराक और दिल की ख़ुराक मोहब्बत और अल्लाह तआला की पहचान है क्योंकि हर चीज़ की ख़ुराक वो ही है जो इसकी तबियत और ख्वाहिश के मुताबिक है बदन सवारी है हकीकत का दिल सवार है जिंदगी नाम का जो सफर है उसके लिये दोनो का सही होना जरूरी है !

ejdt r l0oQ

● बारीये तआला को पहचान लेने में इन्सान की इज्ज़त है ये इस तरह समझा जा सकता है के हर चीज़ की इज्ज़त उसी काम में होती है जिस काम में उसे चैन और सुकून मिलता है और हर चीज़ को चैन और सुकून उसी काम में मिलता है जिसको उसका जी चाहे और जी उसी काम को चाहता है जिसके वास्ते वो चीज़ पैदा की गयी है जैसे शहवत का मज़ा इसमें है के आरज़ू पूरी हो जाये और गुस्से का मज़ा बदला लेने में और आँख का मज़ा अच्छी सुरत देखने में है कान का मज़ा अच्छी आवाज़ सुनने में है इसी तरह इन्सान का मज़ा, चैन, सुकून, सब कुछ ही अल्लाह तआला के दीदार में है !

ejdt r l0oQ

1 • जज़्बात, ना यकीन आने वाला तोहफा है अल्लाह तआला की तरफ से, जज़्बात हमें बता देते हैं के हम क्या सोच रहे हैं हमसे क्या सोचवाया जा रहा है अगर हम ये देख सकें तो बेहतर है !

2 हमारे पास दो तरह के जज़्बात होते हैं अच्छे जज़्बात और कम अच्छे जज़्बात अच्छे जज़्बातों से हमें अच्छा लगता है और कम अच्छे जज़्बातों से हम परेशानी महसुस करते हैं नफ्से अम्मारा की खसलतों का रहना हमें कमज़ोर करता है !

3 जज़्बात क्या है ? ख्यालात का असर और नतीजा और क्या ?

• हमारे लिये ये जानना बहुत कीमती और जरूरी है के बुरा महसूस करते वक्त दिमाग में अच्छे ख़्याल रखना नामुमकिन होता है जब हम बुरा महसूस करते हैं और अपने ख़्यालात को बदलने की कोशिश नहीं करते तब हकीकत में हम खुद को और ज्यादा बुरा लगने वाले हालात को बुला रहे होते हैं हमारे जज़्बात और ख़्यालात हमारी जिंदगी को बनाते हैं ये हमेशा इसी तरह होता रहा है और होता रहेगा, ख्यालात अच्छे तो जज़्बात अच्छे, जज़्बात अच्छे तो जिंदगी अच्छी, जिंदगी

अच्छी तो मौत और उसके बाद भी अच्छा ही अच्छा ! शुक्रिया

● मरकज़े तसव्वुफ तो मयखाना है " मै " का ख़ाना है यहाँ तो बस दीवानों का काम है पागलों का काम है अल्लाह के दीवानों और पागलों की जगह है ये! यहाँ दुनिया के समझदार और होशियारों का कोई काम नहीं है यहाँ तो समझ को " दार " (सूली) पर चढ़ाया जाता है और होश को यार बनाया जाता है यहाँ तो पाक शराब पिलाई जाती है अल्लाह तआला की शराब और बस उसका नशा और मस्ती और बस उसकी ही याद और इश्क, मरकज़े तसव्वुफ का इरादा तो अल्लाह तआला के इतने ज्यादा दीवाने और पागल बना देने का है के दुनिया के समझदारों को अपनी समझदारी पर ही शक होने लगे ! आमीन – शुक्रिया

ejdt r l0oQ

1 ● सरकारे दो आलम ने फरमाया के मुरदों की दोस्ती से दिल मुरदा हो जाता है और फरमाया के मुरदा से मुराद एश परस्त, मालदार, इन्सान है के इसकी दोस्ती से अच्छाई की उम्मीद नहीं की जा सकती है ।

2 भूखे शरीफ और पेट भरे कमीनों से हमेशा डरते रहो ।

3 सबर दो तरह का होता है एक नागवार बातों पर सबर, दूसरे पसन्दीदा चीज़ों से सबर ।

4 कामयाबी सफर है – मंजिल नहीं, जो हमें आधी अधूरी तसल्ली देती है ।

• नतीजा क्या है ? जिस तरह से जिन्दगी गुज़ारी गयी उसका अब नतीजा कैसा है ? अगर सही है ? आप खुश हैं ? इत्मीनान है ? तो फिर कोई जरूरत नहीं है जिन्दगी बदलने की, कुछ नया सीखने की, और अगर आप किसी भी किस्म की, किसी भी तकलीफ में हैं खुश नहीं हैं तो आप की हालत ये साबित कर रही है के पिछली जिन्दगी सही तरीके से नहीं गुजारी गयी तो अब जरूरत है जिन्दगी जीने के तरीके को बदलने की, खुद ही को अन्दर से बदलने की – शुक्रिया

1 • ए महबूब तेरे गुणों की, खासियतों की, तारीफ बयान करने में मेरी जुबान गूंगी है तेरी इन सिफ्तों ख़ासियतों के एक होने तक मेरी अक्ल नहीं पहुँच सकती !

2 तेरा तआररूफ और तारीफ करने से, सब की जुबान आजिज़ है यानि जुबान में ये ताकत नहीं के तेरी तारीफ कर सके वो कौन है जो तेरा ख़ाकर भी तेरी तारीफ का हक अदा कर सके !

3 आप बिना हिच-किचा-हट के और बेमिसाल तशरीफ लाये आपकी ज़ात की हकीकत तक नबीयों की अक्ल नहीं पहुँच सकती !

दीवान सरकार कुतबुद्दीन बा-इख्त्यार काकी कु.सि.अ.

• ए जौहर, जिस में दो अर्ज कायम हैं, ए वाहिद जो अपने हुक्म से दो है तुने बुलन्द दरजे के मुहासिन को जमा किया-फिर बाहमी इख्त्लाफ के बावजूद तेरे लिये दोनों जिदें एक बन गयीं इस हुस्न में तेरी ही एक हस्ती है जिसको कमाल हासिल है और जिस में कोई नुक्स नहीं फिर चाहे तू पौशीदा हो या जाहिर उस सिफ्त के साथ है जो तेरी ज़ात पाक वा बरतर को सजावार है

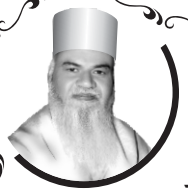

मख़लूक अपनी ही जैसी चीज़ का इदराक कर सकती है और हक जमींअ मौजूदात से एक निराली ही शै है !

इन्सान कामिल P-111

1 • जाहिल शख्स की इबादत कुछ भी कदर कीमत और मायने नहीं रखती बल्कि वो सर से पाँव तक जुल्म में डूबी हुई है और इल्म भी बिना अमल के कुछ नफा नहीं देता और अमल बिना अख़लास के नफा नहीं देता बिना अख़लास का अमल कुबूल ही नहीं किया जाता जब तू इल्म हासिल करेगा तो वो इल्म तेरे उपर छत बनेगा !

2 जो इन्सान अल्लाह तआला की इबादत, जहालत से करता है उसकी खराबी और तबाही उसके सुधार और अच्छाई से ज्यादा होती है ।

सरकार गौस पाक–फयुजे यज़दानी P-454

• तू पहले इल्म हासिल कर और उस पर अमल कर और दूसरों को भी इल्म सिखा तो ये तेरे लिये तमाम खूबियाँ और अच्छाईयाँ जमा कर देगा, जब तू इल्म की कोई एक बात सुनेगा और उस पर अमल भी करेगा और दूसरों को भी सिखाये तो तुझे दो अच्छाईयाँ

मिलेगी एक इल्म सीखने की दूसरी इल्म सिखाने की दुनिया अन्धेरी है और इल्म रोशनी है बस जिसे इल्म ना होगा वो इस अन्धेरे में टक्करें मारता फिरेगा और जितना सुधार करेगा उतना फसाद ज्यादा होगा ।

सरकार गौस पाक फयूजे यज़दानी *P-454-455*

[1] • जो कुछ भी है आप की वजह से मौजूद है सब के सब फना हो जायेंगे और आप बाकी रहेंगे ।

[2] कोई वक्त एसा नहीं हो सकता के आप ना हों, हाँ ये हो सकता है के आप नज़रों से पौशीदा हो जायें !

[3] अगर आप अपना जमाल किसी को दिखा दें तो वो अपनी ख़ूबी और लताफत से आप तक पहुँच जाये !

दीवान सरकार कुतबुद्दीन बा–इख़्त्यार काकी कु.सि.अ.

• जो दुनिया की चीज़ों को शैतान की राह का ज़रिया बनाता है अपनी सारी जिंदगी को नफ्से अम्मारा की लज्ज़तों को हासिल करने में गुज़ारता है वो जहन्नुम में रहता है आज इख़्त्यार की लगाम तुम्हारे हाथों में है अगर आज तुम से कुछ ना हुआ फिर कल

क्या होगा, तुम अपनी मरज़ी से जो कर रहे हो उसका नकाब उस वक्त उठा दिया जायेगा तब हकीकत खुलेगी उस वक्त अल्लाह ही की बादशाही होगी जो सब पर ग़ालिब है !

अल-ऊसूल-उल-अशरा (हज़रत ख्वाजा नजबुद्दीन कुबरा)

1. • अगर आप अपने बन्दों को परदे से अपना नूर भरा रूख दिखा दें तो मै समझता और जानता हूँ के आप से कुछ कम ना होगा !
2. हम नाचीज़ आप को पाने की ख़्वाहिश में परेशान हैं शायद मेरा मकसद आप से पूरा हो जाये
3. अपने इश्क की वादी में फिरने वाले मस्तानों के लिये आप राह दिखाने वाले बन जाईये क्योंकि आप तो हिदायत देने वाले है ।
4. अपने समन्दर से एक कतरा कुतबुद्दीन पर छिड़क दीजिये क्योंकि आप हसनी बादशाह हैं और ये सवाली है !

दीवान सरकार कुतबुद्दीन बा-इख्त्यार काकी कु.सि.अ.

हुस्न उसका देखने को चश्मे बीना चाहिये
बात सुनने को अलग एक कान होना चाहिये
वस्ल की गर हो आरज़ू रगो जाँ को तेरे
जिस्म के ख़िरके को पैहम चाक करना चाहिये
हो जो ये उम्मीद दामन दोस्त तेरा थाम ले
लाश अपनी कब्र में तुझको छुपाना चाहिये
मुब्तला ग़म में तेरे रहता है हर वक्त ''मुईन''
हाले पुरसाँ ए तबीबे इश्क आना चाहिये

दीवान सरकार ग़रीब नवाज़ P-259

● तहारत–पाक होने का राज़ ये है के तू कपड़े और बदन के पाक होने को छिलके की पाकी समझ और तौबा करने और अपने किये हुए गलत कामों पर शर्मिन्दा होने और बुरे काम छोड़ देने को, छिलके की पाकी की असल यानि मगज और रूह की पाकी जान इसलिये के अल्लाह तआला की निगाह तो अन्दर की पाकी पर रहती है जब तू ये पूरी तरह मान गया और जान गया के अल्लाह तआला की निगाह अन्दर की पाकी पर रहती है और उससे कोई भी चीज़ छुपी भी नहीं रह सकती तो तू अपने आपको अन्दर से पाक क्यों नहीं करता !

सरकार ग़ौस पाक–अकसीरे हिदायत

● ए अजीज़, तू ये जान ले के जो बात भी तू करे उसकी हकीकत से आगाह रहना जरूरी है के कहने वाले का दिल भी उस कही गयी बात की हकीकत को समझ ले-जान ले-जैसे अगर कोई इन्सान ''अल्लाह हो अकबर'' कहे तो उसका दिल ये समझ ले के उसके खुद के रहते अल्लाह तआला की पूरी मआरफत ना हो पाना ही '' अल्लाहो अकबर '' की हकीकत है और अगर वो कहने वाला लफ्ज की हकीकत को नहीं जानता तो वो चाहे कितना बड़ा ज़ाहिरी आलिम हो जाहिल ही है और अल्लाहो अकबर कहने में झूठा है !

अकसीरे हिदायत

● आदमी की सब चीजें बूढ़ी होती चली जाती है मगर दो चीज़ें जवान होती जाती है एक बड़ी जिन्दगी की उम्मीद और बहुत ज्यादा माल की मोहब्बत, जिसे अल्लाह तआला ने हकीकत में इस्लाम की राह दिखाई उस ने सबर किया और वो नेक है । जो नेक है वो शाकिर (हमेशा शुक्र अदा करने वाला) है ।

दुनिया में सुकून पाने की दवा तीन चीजों से मिल कर बनती है -

1 lcj dju dh dMokgV
2 vUnj d bYe dh feBkl
3 ud vey dju dh n'okjh

इन तीनों को एक साथ या अलग-अलग इस्तेमाल करना है !

• अल्लाह तआला को जान लेने और पहचान लेने वाले की हालत, अल्लाह को याद करने से भी आगे निकल जाती है, जब तक मुरीद अल्लाह के सिवा, किसी ग़ैर के होने का ख्याल भी दिल से ना निकाल दे तो अल्लाह को जान लेने - पहचान लेने की राह पर एक कदम भी नहीं रख सकता और ना ही उसको अल्लाह की पहचान हासिल हो सकती है जिन्होंने अल्लाह को पहचान लिया उनके मुताबिक दुई कुफ्र है ये है कलमा-ए-तय्यबा की हकीकत !

असरारे हकीकी-सरकार ग़रीब नवाज

वाईज़ कूचा ए दोस्त से ना जन्नत में तू बुला
हाँ, देख तो कहाँ से कहाँ जा रहा हूँ मै ।

देखा है मैंने बुत में भी बुतगर के हुस्न को
तौहीद असल है यही जब पूजता हूँ मै !

मै गर्क हो चुका हूँ मोहब्बत की लहर में
ए खिज्र अपनी हस्ती से जब ही खुदा हूँ मै !

दुनिया में आस छोड़कर अब आस्तीन को झाड़
क्योंकि सिवाय आंसुओं के ना कुछ पा रहा हूँ मै

रूख़सत दिले ''मुईन'' से हुआ अब तो शग़ले एश
सीने में अपने बैठ के ग़म खा रहा हूँ मै !

सरकार ग़रीब नवाज़

खुदा की फिक्र में हुरो-ग़ुलगाँ से फारिग़ हूँ
दो आलम में हर एक नेमत पये जाँना से फारिग़ हूँ

ना दे तू आशिकों को खुल्द की तरग़ीब ए वाईज़
मैं उसकी दीद में जन्नत और रिजवाँ से फारिग़ हूँ

मैं अपनी पुश्त पर बारे अमानत को उठाये हूँ
जहालत, कुब्र और गुमराही ये इन्साँ से फारिग़ हूँ

नहीं है गैब में कोई सिवाय हक तआला के
तो ख़ुद को देखने और नाम के एलान से फारिग़ हूँ

दीवान सरकार ग़रीब नवाज़

● अल्लाह तआला ने फरमाया ''क्या इन्सान की हर आरज़ू पूरी हो सकती है ''यानि कभी पूरी नहीं हो सकती ये ही वजह है के हिरस करने वाले को कभी राहत नहीं मिल सकती क्योंकि एक आरज़ू खत्म नहीं होती के दूसरी शुरू हो जाती है जब तकदीर पर दिल राज़ी ना हो तो हर काम, मेरा हो जाये, ये चाहत होती है और सब चाहतों का पूरा होना नामुमकिन है इसलिये चाहे बहुत कुछ मौजूद हो लेकिन हिरस करने वाला परेशान ही रहता है !

शरीयत और तसव्वुफ–P-57

• सलात को नमाज़ कहना, बोलना समझदारी नहीं है क्यों ? क्योंकि नमाज़ उस इबादत को कहते हैं जो पारसी – आतिशपरस्त, मज़हब के मानने वाले अपनी आसमानी किताब (अवेस्ता) को पढ़ते हुए आग को सजदा करते हैं कुरान में सलात को कायम करने का हुक्म है नमाज़ लफ्ज़ का तो कहीं जिक्र भी नहीं है अब सलात – नमाज़ कब और कैसे पुकारा जाने लगा ये गौर करने की बात है तुम मुसलमान और मोमिन होने का दावा रखते हो और सलात को नमाज़ कहते हो तआज्जुब है ?

ljdkj lQh x;k lhu 'kkg

•

कुतुब शेर है और शिकार करना उसका काम है बाक़ी ये मख़लूक उसका बचा खाने वाली है ।

तुझ से जब तक हो सके कुतुब को राज़ी रखने की कोशिश कर ताकि वो क़वी हो जाये और वहशी जानवरों का शिकार कर सके

जब वो रंजीदा हो जायेगा मखलूक बे सरो सामान रह जायेगी क्योंकि तमाम लोगों की रोज़ी अक्ल के हाथों से है

वो अक्ल की तरह और मखलूक जिस्म के हिस्सों की तरह है
जिस्म की तदबीर अक्ल से वाबिस्ता है

तेरी मदद तुझ में इज़ाफा करेगी ना कि उसमें अल्लाह तआला ने फरमाया है ''अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वो मदद करेगा''

मसनवी V *(P-338-339)*

● सूफी हकीम है यानि हिकमत वाला और ये बात कुरान से साबित है क्योंकि हिकमत होना ज्यादा अच्छा है और कुरान में है जिसको हिकमत मिली उसको बड़ी ख़ूबी मिली हिकमत को अल्लाह तआला ने बड़ी ख़ूबी बताया है और जिसको अल्लाह तआला बड़ी ख़ूबी बताये वो कम नहीं हो सकती, अल्लाह तआला ने अमानत इन्सान के सुपुर्द कर दी, अल्लाह तआला ने इन्सान को खिलाफत दी, मखलूक में किसी को ये फख़र हासिल नहीं है, अल्लाह तआला का खलीफा उसका अमीन है !

ejdt rl0oQ

● जिन्दगी में तरक्की और सुकून आने की बुनियाद अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल करना है अमल तब ही हो सकता है जबकि हमें समझना आ जाये, समझना तब ही आ सकता है जबकि हमें सीखना आ जाये, सीखना तभी आ सकता है जब हम ''कैसे सीखा जाये'' पहले ये सीखें, ये हालत हमारी तब ही हो सकती है जबकि हम ये कुबूल करें के एसा बहुत कुछ है जो हमें सीखना बाकी है अभी तो जो भी हमने सही-गलत सीखा उसी से भरे हैं और उसी का नतीजा हमारे सामने है हमें सीखना ही होगा, पहले सीखने को सीखना ही होगा !

ejdt rl0oQ

● रोज़ा, वो रोज़ा जो हकीकत में रोज़ा है उसका बदला अल्लाह तआला ख़ुद है अल्लाह तआला को इतना ज्यादा याद किया और याद में इतना डूब गये के उसके सिवा कुछ याद ही नहीं आया, इतना डूब गये के जिस्म अपनी जरूरत और आदत भी इस याद में डूब जाने से भूल गया तब हकीकत में रोज़ा हुआ अगर ख्यालों में अल्लाह तआला के सिवा कुछ भी, कुछ भी आ गया तो हकीकत के रोज़े को ख़तरा पैदा हो गया इसीलिये, तो एसे हकीकत के रोज़े का बदला अल्लाह तआला ख़ुद है !

● वुजूद से मुराद अल्लाह तआला की ज़ात है वुजूद उसकी हकीकत का एन है और ये वुजूद मसदरी नहीं है क्योंकि मसदरी वुजूद एक उखड़ने और अलग होने वाले काम हैं जिसके मायने होना के हैं ! ऐसे उखड़ने और अलग होने वाले काम से अल्लाह तआला ऊँचा और बेहतर है बल्कि वुजूद से मुराद वो हकीकत है जो मसदरी वुजूद का मिस्दाक है वो अपने मरतबा ए कशरत से पाक है !

ejd t r l0oQ

feLnkd% आला–आईना–वो चीज़ जिस का मफऊम किसी दूसरी चीज़ पर सादिक आये !

● ए दरवेश, कैसा दिल है उस शख्स का जो सरकारे दो आलम का ताज – कुलाह – टोपी, ख़िरका और दस्तार को पहन कर उसका फर्ज पूरा नहीं करता और इस को सर पर रख कर भी अमीरों और बादशाहों की सोहबत में रहता है और फसाद करने वालों से मिलता है तआज्जुब नहीं के इसकी शक्ल बदल दी जाये और दुनिया में इसकी फज़ीलत हो, और याद रहे जो ताज या कुलाह के फर्ज पूरे नहीं करता, ताज, कुलाह और ख़िरका अपना बदला ख़ुद लेता है !

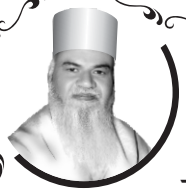

• ए सूफी (दरवेश) एक बुज़ुर्ग से बग़दाद में मुलाकात हुई, कई रोज़ मैं उनकी सोहबत में रहा वो बुज़ुर्ग बार-बार सजदा करते हुए ये दुआ मांगते थे के खुदावन्दा अगर कल कयामत के दिन तूने मुझे दोजख़ में भेजा तो तेरी मोहब्बत का एक राज़ मुझ से खुल जायेगा और वो इस तरह के दोजख़ मुझसे हजारों साल दूर भागेगी क्योंकि मोहब्बत की आग के सामने कोई आग ठहर ही कब सकती है अगर कोशिश करेगी तो ठंडी हो जायेगी!

सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख्त्यार काकी-असरा ऊल औलिया

• ईद यानि खुशी, ईद का दिन यानि ख़ुशी का दिन, एसी ख़ुशी जब कि बारीय तआला की तरफ से कुछ नाज़िल हुआ हो, तो उस नाज़िल होने पर ख़ुशी को ज़ाहिर करना !

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने ईद के दिन हज़रत अमीर खुसरो से पूछा, खुसरो ईद की नमाज़ पढ़ने नहीं जा रहे? हजरत अमीर खुसरो ने जवाब दिया ''सरकार मेरी ईद तो आपके कूचे और ख़िदमत में है'' !

^bn&xkg ek xjhck d, rk**

ejdt rl0oQ

● तूने फिकर की देगों को जोश में देखा है, होश से आग को भी देख ले ! खबरदार अपने सबर पर ज्यादा नज़र ना कर, तूने सबर देखा है सबर देने को भी देख ले ! रहट की गर्दिश को कब तक देखेगा, सर को बाहर निकाल, पानी वाले को भी देख ले ! तू कहता है मैं देख रहा हूँ लेकिन उस के देखने की बहुत सी निशानियाँ हैं जब तूने दरया के मुख्तसर झाग देखे, तुझे हैरत दरकार है दरया को देख !

P-295- मसनवी सरकार रूमी

● ए अल्लाह के बन्दों, मैं तुम्हें तकवा और परहेज़गारी की हिदायत करता हूँ क्योंकि बन्दे जिन चीजों की एक दूसरे को हिदायत करते हैं उन में तकवा सब से बेहतर और अल्लाह के नजदीक तमाम चीज़ों के नतीजों से बेहतर और बरतर है तुम्हारे और दूसरे अहले किबला के दरम्यान जंग छिड़ गयी है और इस जंग का झण्डा वो ही उठायेगा जो मुसीबतों पर नज़र रखने वाला, सबर करने वाला और हक के मकामात को पहचान लेने वाला हो !

हजरत अली क.व.क.

● तुम ये भी मानते हो के अल्लाह एक है और उसके बहुत से नाम हैं तुम ये भी मानते हो के नाम और रास्ते सभी, उसको पहचान लेने के लिये, जान लेने के लिये है बस इबादत और पूजने के तरीके अलग हैं तुमने नामदान ले लिया, शिष्य और मुरीद हो गये फिर भी अल्लाह तआला की बनाई मस्जिद, इन्सान से नफरत करते हो, नफरत फैलाते हो, बड़ी ही अजीब और तआज्जुब की बात है जब किसी पैगम्बर – अवतार – सूफी – सन्त – दरवेश – सदगुरू ने ये नफरत का संदेश नहीं दिया तो तुम किसकी मानकर ये काम करते हो ?

ejdt rl0oQ

● सलात का दिल ख़ालिस नियत है इस की रूह दिल का हाज़िर रहना है इस का जिस्म कयाम, रूकू और सजदा है ! शर्त है इसके बिना नमाज़ नहीं होती अन्दर से पाक होना जरूरी शर्त है जब तक अन्दर से दिल नापाक हो तो जिस्म कैसे पाक हो सकता है क्योंकि जिस्म तो दिल के कहे मुताबिक काम करता है जब दिल अन्दर से पाक हो जाये तब ही सलात शुरू करते वक्त ''अल्लाहो अकबर'' कहना बेहतर है वरना बेकार है इसीलिये सारा काम पहले अन्दर से पाक होने पर ही करना है !

ejdt rl0oQ

● नतीजा क्या है ? जिस तरह से जिन्दगी गुज़ारी गयी उसका अब नतीजा कैसा है ? अगर सही है ? आप खुश हैं ? इत्मीनान है ? तो फिर कोई जरूरत नहीं है जिन्दगी बदलने की कुछ नया सीखने की, और अगर आप किसी भी किस्म की, किसी भी तकलीफ में हैं खुश नहीं है तो आपकी हालत ये साबित कर रही है के पिछली जिन्दगी सही तरीके से नहीं गुजारी गयी तो अब जरूरत है जिन्दगी जीने के तरीके को बदलने की, जरूरत है नतीजा अच्छा आये इसलिये बदलने की, खुद ही को अन्दर से बदलने की - शुक्रिया

● जो खाओगे, जिसे खिलाओगे, जैसे खिलाओगे, सिफात के एतबार से वो ही हो जाओगे, इसमें उनके लिये समझ है जो समझ रखते हैं बेकार नेकी, बुराई के बराबर है, नेक, नेकी करने के लिये भी होश और अच्छी समझ जरूरी है दुनिया में इबादतख़ाने, ज़कात - खैरात, दान - पुण्य बढ़ रहे हैं लेकिन इन्सानियत कम होती जा रही है इसकी यही वजह है के बुराई को अच्छाई समझ कर दोहराया जा रहा है ! शुक्रिया

lj dkj lQh x;klíhu 'kkg

● इन्सान जौहर है और आसमान उस का अर्ज है सब साया और फरअ है और वो मकसूद है ए वो के अक्ल और तदबीर और होश तेरे गुलाम हैं तू अपने आपको इतना सस्ता बेचने वाला क्यों है तमाम मौजूदात पर तेरी खिदमत फर्ज है, ज़ौहर अर्ज से कैसे मजदूरी चाहेगा, हाय अफसोस तू किताबों से इल्म हासिल करता है तू भूसी के हलवे से लुत्फ हासिल करता है तू कतरे में छुपा हुआ इल्म का समन्दर है तीन गज के जिस्म में आलम हैरान हो गया है – मसनवी सरकार रूमी–जिल्द V-P-359

[1] ● ए नसीम तमाम अहले दयार को उस आशिक की खबर पहुँचा दे जो आग और पानी के दरम्यान है !

[2] इन राजों में रात के वक्त उतर के दिन में तो इन में नाज़िल होने की ताकत नहीं रहती !

[3] फिर वहाँ हिरन है के एक बड़े काले साँप को शिकार कर रहा है और वहाँ काले साँप हैं शिकारी कुत्ते नहीं है !

● हज और कुर्बानी का वक्त है हज यानि अपने आप को अन्दर से पूरा-पूरा बदलने के लिये सफर का इरादा करना, हज मर्दो का काम है अल्लाह के घर की ज़ियारत आम लोगों का काम है रस्मों ने मकसद और मंजिल को खत्म कर दिया ! कुर्बानी इस्लाम की शान है लेकिन सिर्फ जानवरों की कुर्बानी नहीं, अपनी कुर्बानी अपनी ही बुरी आदतों और वो हालत जो हमें बुराई की तरफ ले जाती है उनको छोड़ देना ही हकीकत में कुर्बानी है कुर्बानी को गोश्तख़ोरी का बहाना बनाना, नुमायश करना, क्या ये समझदारी है ?

ljdkj lQh x;klíhu 'kkg

शजराये क़ुतबिया - चिश्तिया - आलिया

(1) इल्तजा सुन ले ख़ुदा ख़ैरूल वरा के वास्ते → सरवरे आलम इमामुल अम्बिया के वास्ते
(2) दिल से जो आती है लब पे वो दुआ करले क़ुबूल → शाफाए महशर मोहम्मद मुस्तफा के वास्ते
(3) हामिले मन कुन्तो मौला, जा नशीने मुस्तफा → फातेह ख़ैबर अली मुश्किल कुशा के वास्ते
(4) नय्यर बुरजे तरीकत मआढने बहरूल उलूम → ख़्वाजाए-ख़्वाजा हसन बसरी शहा के वास्ते
(5) काबाए मकसूदे इमाँ, मख़जने सिर्रे निहां → अब्दे वाहिद पेशवाये असफिया के वास्ते
(6) रहनुमाये दीनो-इमाँ, राज़दारे कुन फकाँ → शाह फज़ील इब्ने अयाज़ हक नुमा के वास्ते
(7) रहबरे ग़व्वास, बहरे कुन्तो कनज़न, मख़फिया → ख़्वाजा इब्राहीम अधम बल्खी, हक नुमा के वास्ते
(8) आरिफे असरारे कुल्ली, महरमे राज़े ख़फी → बू-हुजैफा मरअशी इल्मुल हुदा के वास्ते
(9) किबलाए इमान ओ दीन, आईनाए हक्कुल यकीं → बू-हुरैरा, ख़्वाजा बसरी बे रिया के वास्ते
(10) साहिबे इरफाँ व हैदर उल असर, शाने औलिया → ख़्वाजाए मुमशाद दीनूरी, शहा के वास्ते
(11) आफताबे सिर्रे इरफाँ, महरमे राज़े निहाँ → ख़्वाजा बू इसहाक शामी दिलरूबा के वास्ते
(12) कुद्दरतुल हक, वालीये अकलीम, असरारे बका → शाह अबी अहमद लकाये, हकनुमा के वास्ते
(13) मम्बये अनवारे इरफां, मज़हरे सिर्रे निहाँ → नासेहउद्दीन, बू मोहम्मद बे रिया के वास्ते
(14) रफअते शाने अता, औजे कमाले इत्तका → नासिर उल हक ख्वाजा बू यूसुफ शहा के वास्ते
(15) पासबाने इल्मो हिकमत रहनुमाये मआरफत → ख़्वाजा मौदूद चिश्ती बा सफा के वास्ते
(16) मज़हरे जूदो करम, नूरे बका, शम्माए हरम → ख़्वाजा जिन्दनी शहा, सदक व सफा के वास्ते
(17) ताजदारे मिल्के इरफाँ, ग़रके बहरे ला मकाँ → ख़्वाजा उसमान हारूनी, शहा के वास्ते
(18) दिल रूबाये औलिया, ख़्वाजा मौईनुद्दीन हसन → हिन्द के वाली, शहा जूदो सख़ा के वास्ते
(19) मसदरे इरफाँ, शहीदे इश्क, रूहे आशकी → ख़्वाजा कुतबुद्दीन, बा इख़्त्यार काकी मे-लका के वास्ते
(20) पेशवाये अहले हक, गंजुल शकर बाबा फरीद → गोहरे ताजे विलायत, हक नुमा के वास्ते
(21) ख़ुसर-वे ख़ूबां निज़ामुद्दीन महबूबे इलाह → रहनुमाये सरगिरोहे औलिया के वास्ते
(22) गरके बहरे हक, नसीरूद्दीन चराग़े देहलवी → ना-ख़ुदाये कश्तीये, अहले सफा के वास्ते

(23) मम्बाए सिर्रे बका, इमाने तसलीमो रज़ा → शाह कमालुल हक, कमाले इत्तेका के वास्ते

(24) हज़रत ख़्वाजा सिराजुल हक, अमीने सिर्रे हक → चश्माए असरारे हक, शैखुल असफिया के वास्ते

(25) साहबे इल्मे हुदा, रूहे र-वाने औलिया → शैख़ इल्मुल हक, चराग़े इन्नमा के वास्ते

(26) रूए नूरे यज़्दी, अनवारे सोते सरमदी → ख़्वाजाए महमूद राजन हक नुमा के वास्ते

(27) कामिल ओ अकमल, जमाले हक, जमाले अहमदी → शैख़ जुम्मन राहबरे शाहो-गदा के वास्ते

(28) ख़्वाजा शैख़ मोहम्मद या कहें शैखे हसन → काशिफे असरारे कुत्बे औलिया के वास्ते

(29) वालीये मिल्के हकीकत, मज़हरूल्लाह अस्समद → हज़रत शैख मोहम्मद, बे रिया के वास्ते

(30) तलअते ईकाने हक, कुतबुल मदीना, शाने हक → आरिफे अल्लाह शैख याहया मदनी शहा के वास्ते

(31) हज़रते सूफी कलीमउल्लाह शैखुल औलिया → मज़हरे शाने फना, शाने बका के वास्ते

(32) चश्माये इरफाँ, निज़ामुद्दीन शैखुल आशेकीन → अज़मते औरंगाबादी रहनुमा के वास्ते

(33) मम्बए असरार, फख़्रे अव्वलीन वा आख़रीन → ख़्वाजा फख़रूद्दीन मोहम्मद हक नुमा के वास्ते

(34) फख़्रे हक, फख़्रे जहाँ, नूरे मोहम्द नूरे हक → ताजदारे किश्वरे, अहले सफा के वास्ते

(35) इल्मे बातिन के अमीन, गुन्जीनाए असरारे दीं → हज़रत ख़्वाजा सुलेमान बे रिया के वास्ते

(36) वाकिफे राज़े इलाही, आलिमे इल्मे ख़फी → शाह मोहम्मद ख़ैराबादी खुश लका के वास्ते

(37) दस्त गाहे तारीकुद्द-दुनिया लकब सरदार बेग → ख़्वाजाए-ख़्वाजा हुसैन अहमद शहा के वास्ते

(38) हज़रत मिर्ज़ा मोहम्मद बेग शाहे मआरफत → हादीये राहे तरीकत, हक नुमा के वास्ते

(39) हज़रत मिर्ज़ा महबूब बेग फरदुल फरीद फी तौहीद → माहताबे चिश्तिया, कलन्दरी बा सफा के वास्ते

(40) हज़रत ख़्वाजा क़िबला अमीरूद्दीन अनवारे यकीं → दीन के हकीकी अमीर बहरे लका के वास्ते

(41) ख़ाढिमे तसव्वुफ सूफी गयासुद्दीन नूरे मआरफत → आरिफे कामिल, चराग़े पुर ज़िया के वास्ते

(42) आजज़ी अहकर अमीरूद्दीन की मकबूल कर → दीन हक के इन नफूसे कुदसिया के वास्ते

सज्जादा नशीन
मरकज़े तसव्वुफ
सूफी सय्यद अमीरुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी
फोन : 9899943607

मरकज़े तसव्वुफ
ख़ादिमे तसव्वुफ
सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी
फोन : 7838116286

1011-E-First, Landmark दरगाह सरकार कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी (कु.सि.अ.) महरौली शरीफ, नई दिल्ली-110030

23 منبعِ سرِّ بقا، ایمانِ تسلیم و رضا   شاہ کمال الحق، کمالِ اتقا کے واسطے
24 حضرت خواجہ سراج الحق، امینِ سرِّ حق   چشمائے اسرارِ حق، شیخ اصفیاء کے واسطے
25 صاحبِ علمِ ھدیٰ روحِ روانِ اولیاء   شیخ علم الحق، چراغِ انماء کے واسطے
26 روئے نورِ یزدی، انوارِ صوتِ سرمدی   خواجۂ محمود راجن حق نما کے واسطے
27 کامل و اکمل، جمالِ حق، جمالِ احمدی   شیخ جمنّ راہبر شاہ و گدا کے واسطے
28 خواجۂ شیخ محمد یا کہیں شیخ حسن   کاشفِ اسرارِ قطبِ اولیاء کے واسطے
29 والیِ ملکِ حقیقت، مظہرِ اللہ الصّمد   حضرت شیخ محمد، بے ریا کے واسطے
30 طلعتِ ایقانِ حق، قطب المدینہ، شانِ حق   عارفِ اللہ شیخ یحیٰ مدنی شہا کے واسطے
31 حضرتِ صوفی کلیم اللہ شیخ الاولیاء   مظہرِ شانِ فنا، شانِ بقا کے واسطے
32 چشمۂ عرفاں، نظام الدین شیخ العاشقین   عظمتِ اورنگ آبادی رہنما کے واسطے
33 منبعِ اسرار، فخرِ اوّلین و آخرین   خواجہ فخرالدین محمد حق نما کے واسطے
34 فخرِ حق، فخرِ جہاں، نورِ محمد نورِ حق   تاج دارِ کشورِ، اہلِ صفا کے واسطے
35 علمِ باطن کے امین، گنجینۂ اسرارِ دیں   حضرت خواجہ سلیمان بے ریا کے واسطے
36 واقفِ رازِ الٰہی، عالمِ علمِ خفی   شاہ محمد خیرآبادی خوش لقا کے واسطے
37 دست گاہِ تارک الدنیا لقب سردار بیگ   خواجۂ خواجہ حسین احمد شہا کے واسطے
38 حضرتِ مرزا محمد بیگ شاہِ معرفت   ہادیِ راہِ طریقت، حق نما کے واسطے
39 حضرت مرزا محبوب بیگ فردالفرید فی توحید   ماہتابِ چشتیا، کلندری با صفا کے واسطے
40 حضرت خواجہ قبلہ امیرالدین، انوارِ یقیں   دین کے حقیقی امیر بحرِ لقا کے واسطے
41 خادمِ تصوف صوفی غیاث الدین نورِ معرفت   عارفِ کامل، چراغِ پُرضیاء کے واسطے
42 عاجزی احقر امیرالدین کی مقبول کر   دین حق کے ان نفوسِ قدسیہ کے واسطے

مرکزِ تصوّف
خادمِ تصوّف
سرکار صوفی غیاث الدّین شاہ
قادری، شُطاری، چشتی، ہاشمی، حُسَینی، محبوبی
فون نمبر : 7838116286

MARKAZE TASAWWUF, MEHRAULI SHARIF, NEW DELHI-110030
مرکزِ تصوف

سجادہ نشین
مرکزِ تصوّف
صوفی سید امیرالدین شاہ
قادری، شُطاری، چشتی، ہاشمی، حُسَینی، محبوبی
فون نمبر : 9899943607

۱۰۱۱، ئی - پہلا، درگاہ سرکار قطب الدین با-اختیار کاکی قدس سرہ العزیز مہرولی شریف ، نئی دھلی- ۱۱۰۰۳۰

شجرۂ قطبیہ ۔ جشتیہ ۔ عالیہ

(1) التجا سن لے خدا خیر الوریٰ کے واسطے ← سرورِ عالم امام الانبیاء کے واسطے
(2) دل سے جو آتی ہے لب پہ وہ دُعا کرلے قبول ← شافعِ محشر محمد مصطفٰے کے واسطے
(3) حاملِ مَن کنتُ مولیٰ، جانشینِ مصطفٰے ← فاتحِ خیبر علی مشکل کشاء کے واسطے
(4) نیرّ برُجِ طریقت ، معدنِ بحر العلوم ← خواجۂ خواجہ حسن بصری شہا کے واسطے
(5) کعبۂ مقصودِ ایماں، مخزنِ سرِ نہاں ← عبدِ واحد پیشوائے اصفیاء کے واسطے
(6) رہنمائے دین و ایماں، رازدارِ کن فکاں ← شاہ فضیل ابنِ عیاض حق نما کے واسطے
(7) رہبرِ غوّاص، بحرِ کنتُ کنزاً مخفیا ← خواجہ ابراہیم ادہم بلخی، حق نما کے واسطے
(8) عاَرفِ اسرارِ کلیّ، محرمِ رازِ خفی ← بو حزیفہ مرعشی علم الھدیٰ کے واسطے
(9) قبلۂ ایمان و دین، آئینۂ حقُّ الیقیں ← بو ہریرہ، خواجہ بصری بے ریا کے واسطے
(10) صاحبِ عرفاں و ہیدر العصر، شانِ اولیاء ← خواجۂ ممشاد دینوری شہا کے واسطے
(11) آفتابِ سرِّ عرفاں، محرمِ رازِ نہاں ← خواجہ بو اسحاق شامی دلروبا کے واسطے
(12) قدرت الحق ، والیِ اقلیم، اسرارِ بقا ← شاہ ابی احمد لقائے، حق نما کے واسطے
(13) منبعِ انوارِ عرفاں، مظہرِ سرِّ نہاں ← ناصح الدین، بو محمد بے ریا کے واسطے
(14) رفعتِ شانِ عطا، اوجِ کمالِ اِتّقا ← ناصرِ الحق خواجہ بو یوسف شہا کے واسطے
(15) پاسبانِ علم و حکمت، رہنمائے معرفت ← خواجہ مودود چشتی با صفا کے واسطے
(16) مظہرِ جودو کرم، نورِ بقا، شمعِ حرم ← خواجہ زندنی شہا، صدق و صفا کے واسطے
(17) تاجدارِ ملکِ عرفاں، غرقِ بحرِ لامکاں ← خواجۂ عثمان ہارونی، شہا کے واسطے
(18) دلرُبائے اولیاء، خواجہ معین الدین حسن ← ہند کے والی، شہا جودو سخا کے واسطے
(19) مصدرِ عرفاں، شہیدِ عشق، روحِ عاشقی ← خواجہ قطب الدین با۔اختیار کاکی مہ لقا کے واسطے
(20) پیشوائے اہلِ حق، گنجِ الشکر بابا فرید ← گوہرِ تاجِ ولایت، حق نما کے واسطے
(21) خُسروے خوباں نظام الدین محبوبِ الٰہ ← رہنمائے سَرگروہِ اولیاء کے واسطے
(22) غرقِ بحرِحق، نصیر الدین چراغِ دہلوی ← ناخدائے کشتئے ، اہلِ صفا کے واسطے

दुआ-ए-मरकज़े तसव्वुफ

① जानता हूँ हद से बढ़ कर हैं मेरी बद फेलियाँ → तू मगर है रहम वाला और बड़ा ही मेहरबाँ
② तेरी रहमत की कोई हद है ना कोई इन्तेहा → बारिशे इकराम कर दे बख्श दे मेरी ख़ता
③ कर मुझे इल्मे लदूनी की ज़िया से फैज़याब → दूर हो जाए नज़र से सिर्रे हस्ती का हिजाब
④ हाँ वही इल्मे तसव्वुफ जो बुज़ुर्गों को मिला → जिस से इनके गुलशने हस्ती का हर गुन्चा खिला
⑤ जिस ने अहले मआरफत को आशनाए हक किया → जिस की सूरत पर हुए गरवीदा सारे औलिया
⑥ बख्श दे मौला उसी इल्मे सफा की रोशनी → दिल से मिट जाये मेरे गुमराहियों की तेरगी
⑦ नासमझ ना फहम हूँ नूरे बसीरत कर अता → सारे पीराने तरीकत की मोहब्बत कर अता
⑧ नूरे इश्के पन्जतन से दिल मेरा मामूर कर → बादऐ ईमाँ की लज्ज़त से मुझे मस्तूर कर
⑨ कर बला की याद दिल में रोशनी बन कर रहे → उमर भर शब्बीर का ग़म ज़िंदगी बन कर रहे
⑩ दिल मेरा दुनिया की हर आलूदगी से पाक कर → मुझ को अहले मआरफत के रास्ते की ख़ाक कर
⑪ कर अता तौफीके कामिल हक परस्ती के लिये → मुन्तखब कर ले मुझे इरफाँ की मस्ती के लिये
⑫ दूर रख आमाले बद से, अहले शर के काम से → फितना परवर इल्मे रस्मी के सुनहरे दाम से
⑬ दुख, मुसीबत, कर्ज, बीमारी, बलाए नागहाँ → इन से रख महफूज़ हर दम ऐ ख़ुदाए मेहरबाँ
⑭ सबर ऐसा दे के मैं साबिर रहूँ हर हाल में → तेरे हर अहसान का शाकिर रहूँ हर हाल में
⑮ तुझ से उम्मीदे करम है वास्ता क्या तूर से → जगमगा दे दिल मेरा रुहानियत के नूर से
⑯ क्या बयाँ तुझ से करूँ मैं ए खुदाए ज़लजलाल → सब अयाँ है तुझ पे मेरे ज़ाहिर व बातिन का हाल
⑰ अपनी शाने किबरियाई की झलक मौला दिखा → मुफलिसों को सदकऐ आले अबा कर दे अता
⑱ दस्त बस्ता मुल्तजी हैं ख़ाके पाए औलिया → हो करम इन पर ब फैज़े बारगाहे चिश्तिया
⑲ मेरे मौला लाज रख ले बन्दऐ रन्जूर की → हाथ फैलाए हुए इस नातवाँ मजबूर की
⑳ अपनी रहमत का दिले 'फारुख' पर कर दे नज़ूल → करबला वालों के सदके ये दुआ कर ले कुबूल

सज्जादा नशीन
मरकज़े तसव्वुफ
सूफी सय्यद अमीरुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी
फोन : **9899943607**

मरकज़े तसव्वुफ
ख़ादिमे तसव्वुफ
सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी
फोन : **7838116286**

1011-E-First, Landmark दरगाह सरकार कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी (कु.सि.अ.) महरौली शरीफ, नई दिल्ली-110030

دعائے مرکزِ تصوف

(1) جانتا ہوں حد سے بڑھ کر ہیں مری بد فعلیاں ← تو مگر ہے رحم والا اور بڑا ہی مہرباں

(2) تیری رحمت کی کوئی حد ہے نہ کوئی انتہا ← بارشِ اکرام کر دے بخش دے میری خطا

(3) کر مجھے علمِ لدونی کی ضیا سے فیض یاب ← دور ہو جائے نظر سے سرِ ہستی کا حجاب

(4) ہاں وہی علمِ تصوف جو بزرگوں کو ملا ← جس سے ان کے گلشنِ ہستی کا ہر غنچہ کھلا

(5) جس نے اہلِ معرفت کو آشنائے حق کیا ← جس کی صورت پر ہوئے گرویدہ سارے اولیاء

(6) بخش دے مولیٰ اُسی علمِ صفا کی روشنی ← دل سے مٹ جائے مرے گمراہیوں کی تیرگی

(7) نا سمجھ نا فہم ہوں نورِ بصیرت کر عطا ← سارے پیرانِ طریقت کی محبت کر عطا

(8) نورِ عشقِ پنجتن سے دل مرا مامور کر ← بادۂ ایماں کی لذّت سے مجھے مستور کر

(9) کربلا کی یاد دل میں روشنی بن کر رہے ← عمر بھی شبّیر کا غم زندگی بن کر رہے

(10) دل مرا دنیا کی ہر آلودگی سے پاک کر ← مجھ کو اہلِ معرفت کے راستے کی خاک کر

(11) کر عطا توفیقِ کامل حق پرستی کے لئے ← منتخب کر لے مجھے عرفاں کے مستی کے لئے

(12) دور رکھ اعمالِ بد سے، اہلِ شر کے کام سے ← فتنہ پرور علمِ رسمی کے سنہرے دام سے

(13) دکھ، مصیبت، قرض، بیماری، بلائے ناگہاں ← ان سے رکھ محفوظ ہر دم اے خدائے مہرباں

(14) صبر ایسا دے کہ میں صابر رہوں ہر حال میں ← تیرے ہر احسان کا شاکر رہوں ہر حال میں

(15) تجھ سے امید کرم ہے واسطہ کیا طور سے ← جگمگا دے دل مرا روحانیت کے نور سے

(16) کیا بیاں تجھ سے کروں میں اے خدائے ذوالجلال ← سب عیاں ہے تجھ پہ میرے ظاہر و باطن کا حال

(17) اپنی شانِ کبریائی کی جھلک مولا دکھا ← مفلسوں کو صدقۂ آلِ عبا کر دے عطا

(18) دست بستہ مُلتجی ہیں خاکِ پائے اولیاء ← ہو کرم ان پر بہ فیضِ بارگاہِ چشتیہ

(19) میرے مولا لاج رکھ لے بندۂ رنجور کی ← ہاتھ پھیلائے ہوئے اس ناتواں مجبور کی

(20) اپنی رحمت کا دلِ فاروقؔ پر کر دے نزول ← کربلا والوں کے صدقے یہ دُعا کر لے قبول

مرکزِ تصوّف

خادمِ تصوّف

سرکار صوفی غیاث الدّین شاہ

قادری، شُطاری، چشتی، ھَاشِمی، حُسَینی، محبوبی

فون نمبر : 7838116286

MARKAZE TASAWWUF, MEHRAULI SHARIF, NEW DELHI-110030

سجادہ نشین

مرکزِ تصوّف

صُوفی سید امیرالدین شاہ

قادری، شُطاری، چشتی، ھَاشِمی، حُسَینی، محبوبی

فون نمبر : 9899943607

۱۰۱۱، ئی-پہلا، درگاہ سرکار قطب الدین با-اختیار کاکی قدس سرہ العزیز مہرولی شریف ، نئی دھلی-۱۱۰۰۳۰

दुआ-ए-ख़ादिम

c['k n r tk vxj ejh [krk; ;k jc]
e>dk egcc l fey tk; nvk; ;k jc !!

jkr fnu e g rycxkj rjh ekQh dk]
bl xukgxkj dh lu y r lnk; ;k jc !!

tkur [kc g bl fny dh gj ,d gjdr dk]
gky&,&fny vki dkD;k viuk luk; ;kjc !!

vkt fQj uj i vk;kg ;dhu D; gedk]
gd em ld g Qdr ejh nvk; ;k jc !!

'kj i lUnk u yxk j[kk g igjk gj l]
ijpe&,&veu vk vekuk dl mBk; ;k jc !!

jkt djr g u;k tYe fn[kkdj Qro]
gky&,&fny viuk crk fdldk luk; ;k jc !!

gkFk [kkyh g exj yky vk xkgj fny viuk]
jkt dh ckr g] D;k lc dk crk; ;k jc !!

आमीन आमीन

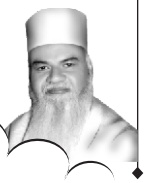

मरकज़े तसव्वुफ

खानकाह शरीफ कादरिया-शुत्तारिया-चिशितया दरगाह सरकार ख्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्तयार काकी (कु.सि.अ.)

1011-E-First, दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली-110053

7838116286, 9899943607

मरकज़े तसव्वुफ
ख़ादिमुल फ़ुक़रा
सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी
सज्जादा नशीन
मरकज़े तसव्वुफ
सूफी अमीरुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी

SARKAR SUFI GHIYASSUDDIN SHAH
सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह
असरारे हक़ीक़ी
हक़ीक़त के राज़
राज़ों का राज़
अन्दर की सलात
बाहर की नमाज़
اسرار حقیقی
क्या है?
सरकार कुतबुद्दीन
बा-इख़्तियार काकी
व
तसव्वुफ की तालीम
कड़वी हकीकत
ईमान और मुसलमान
लोबान
राहत ख़ास लोबान
घर-दुकान-कारख़ाने-दफ्तर में
बरकत-रहमत-तरक्की के लिये
दरगाह
राहत ख़ास अगरबत्ती
अगरबत्ती
इतर
Rahat
Khas Attar
रौहत ख़्रॉस अतर
CONCEIVED & CREATED BY:
MARKAZE TASAWWUF
KHANQAH SHARIF
Qadriya, Shuttariya, Chishtiya
Dargah Khwaja Qutbuddin Ba-Ikhtiyar Kaki (Q.S.A.)
1011/E-1, Ward No. 7, Mehrauli, New Delhi-110030
bulund
STUDIO GRAPHICS
: 7982110663
Sufi Naushad Qadri Shuttari Chishti